विषय-क्रम

राजदूत का तार

सितम्बर, १९७४ के दूसरे सप्ताह में नई दिल्ली स्थित अमरीकी राजदूत, डेनियल पैट्रिक मोइनिहन ने अमरीका के राज्य सचिव हेनरी किसिंजर के नाम एक तार भेजा। न्यूयॉर्क टाइम्स ने १३ सितम्बर को तार का मजमून छापा, जिसे बाद में राज्य विभाग के अधिकारियों ने भी सही बताया। उसमें कहा गया था :

'चूंकि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भोली-भाली, अनजान, अतिशय मंद या जल्द ही डिग जाने वाली महिला नहीं हैं और चूंकि वह नैष्ठिक नैतिकतावादी भी नहीं हैं, इसलिए अमरीकी मनाओ को लेकर उनकी चिन्ता सच और वास्तविक है। और फिर यह भी सच है कि भारतीय अखबारों में छपने वाली अमरीकी खबरें उनकी घोर शंकाओं और बुनियादी डरों की बार-बार पुष्टि करती हैं। उनका ऐसा सोचना किसी सूरत में बदल नहीं सकता, जब तक उन्हें यकीन न हो जाय कि अमरीका उनके हिन्दुस्तान को स्वीकार करता है। उनका मानना है कि हम वैसा नहीं करते। उनका मानना है कि हम घनघोर स्वार्थी और निस्संकोच प्रतिक्रांतिकारी शक्ति हैं।'

'अमरीकी देशवासियो, इस मुगालते में मत रहो कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की लम्बी-चौड़ी बातें, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के आपसी सहयोग या सस्ते गल्ले से लदे कुछ जहाज इंदिरा गांधी को फुसला लेने के लिए काफी हैं। उनकी चिन्ता आर्थिक नहीं, राजनैतिक है। उनकी इस चिन्ता को मिटाना असंभव है जब तक उन्हें यह पक्का पता न चल जाय कि अमरीका, उनके हिन्दुस्तान को स्वीकारता है।'

'उनकी चिन्ता है कि अमरीका भारतीय शासन तंत्र को मान्यता देता है या नहीं। यकीनी तौर पर न सही, पर उन्हें डर है कि हम उनकी तरह के लोगों की गद्दी छिन जाने से खुश होंगे। वह अच्छी तरह जानती हैं कि हमारे हाथ खूनी और अश्लील कृत्यों से रंगे हुए हैं।'

इस तरह का तार भेजने की जरूरत ग्रमरीकी ग्रखवारों के उन सनसनी-खेज उद्‌घाटनों के, जिन्हें भारतीय ग्रखवारों ने भी प्रसारित किया था, चलते पड़ी थी जिनमें चिले में पॉपुलर युनिटी की वैध सरकार को उलटने तथा चिले के राष्ट्रपति सालवाडोर ग्रयांदे की हत्या के पीछे ग्रमरीकी साम्राज्य-वादियों ग्रौर उनकी कातिल संस्था सी ग्राई ए का घृणित ग्रौर खौफनाक हाथ बताया गया था।

ग्रखवारों में या लोकमंचों से चिले में सी ग्राई ए ग्रौर ग्रमरीकी साम्राज्यवादियों के कुकृत्यों की चर्चा का यह पहला ग्रवसर नहीं था। वाशिंगटन के जाने माने पत्रकार जैक एंडरसन ने मार्च १९७२ में ही यह राज खोला था कि बहुराष्ट्रीय पैमाने पर गठित 'ग्रन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन ग्रौर टेली-ग्राफ निगम (ग्राई टी टी) के साथ मिलकर सी ग्राई ए ने १९७० में ग्रयांदे को राष्ट्रपति चुने जाने से रोकने के लिए चिले में सैनिक विद्रोह ग्रौर शासन शुरू करवाने का षड्‌यंत्र रचा था। उनका कहना था कि ग्रयांदे के चुनाव के बाद भी षड्‌यंत्र जारी रहा जिससे उनका तख्ता पलटा जा सके। इन तिकड़मों की शुरुग्रात के वक्त सी ग्राई ए के भूतपूर्व निदेशक, जॉन मैकोन ग्राई टी टी के निदेशक थे। चिले की टेलीफोन तथा टेलीग्राफ कम्पनी में ग्राई टी टी का ८० प्रतिशत हिस्सा था। बाद में, जब चिले में ग्राई टी टी की हिस्सेदारी का राष्ट्रीयकरण हो गया, खुद राष्ट्रपति ग्रयांदे ने एंडरसन के ग्रारोपों की पुष्टि की। राष्ट्रीयकरण के बाद उन्होंने ग्राई टी टी के गुप्त दस्तावेजों को प्रकाशित करवाया। सैनिक हस्तक्षेप के साथ ही जब ग्रयांदे की हत्या हुई ग्रौर सैनिक गिरोह ने गद्दी सँभाली, तो दुनिया भर में शायद ही किसी को संदेह रहा कि चिले में लोकतंत्र की हत्या का ग्रसल जिम्मेदार कौन था।

सितम्बर, १९७४ के उद्‌घाटनों की कुछ नई बातें इस तरह थीं: यह दिखाया गया था कि सैनिक कार्रवाई में सी ग्राई ए ग्रौर ग्रमरीकी साम्राज्य-वादी उतने गहरे धँसे हुए थे जिसकी पहले कल्पना तक नहीं थी; यह दिखाया गया था कि राज्य सचिव हेनरी किसिंजर ग्रौर भूतपूर्व सी ग्राई ए निदेशक रिचर्ड हेल्म्स समेत कई वरिष्ठ ग्रमरीकी ग्रधिकारियों का यह कथन कि चिले की गतिविधियों में उनका कोई हाथ नहीं था, सफेद झूठ था; ऊपर की दोनों बातें ग्रमरीकी प्रतिनिधि सदन की खुफियागिरी पर सैनिक सेवा उप-समिति के समक्ष सी ग्राई ए के वर्तमान निदेशक, विलियम कॉलबी के कसम लेकर दिये गये गुप्त बयान से साबित होती थीं।

यह गवाही अप्रैल, १९७४ मे ही दी गई थी, लेकिन [illegible] सदस्यों ने इसे एकदम गुप्त रखा। इस तरह, वही लोग जिनके ऊपर सी आई ए को नियमित और अनुशासित रखने का जिम्मा था, उसे बचाने [illegible] अमरीकी राजनैतिक प्रणाली की लोकतांत्रिक प्रकृति के खोखलेपन का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है? इस जघन्य कहानी को लोगों तक पहुँचाया प्रतिनिधि माइकेल हैरिंगटन ने, जिनके हाथों तक उपसमिति के दस्तावेज हाल में पहुँचे हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों के अपराध को लोगों के बीच खोलने के परिणाम-स्वरूप सैनिक सेवा समिति के जरखरीदों ने खुद हैरिंगटन को अनुशासनिक कारंवाई की धमकी दी है।

चिले की पूरी घटना का लेखा-जोखा करते हुए सितम्बर ३०, १९७४ की टाइम पत्रिका मे कहा गया :

'१९६० के प्रारम्भिक वर्षों मे अमेरिका ने चिले के राजनैतिक भविष्य मे अपनी भारी लागत लगाई। राष्ट्रपति कैनेडी चिले के क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता एडुआर्डो फ्राई से मिले थे और तय किया था कि वे ही लातिन अमेरिका की आशा थे। फ्राई वामपथ के आदमी थे, पर अनिवार्य वामपथी नही थे। वे अमरीकी स्वार्थों के खिलाफ नही थे और ऐसी आशा थी कि वे हिंसक क्रांति के बगैर जरूरी सुधार लाने मे सफल हो जायेगे। १९६४ के चुनाव मे जब फ्राई की मुठभेड कम्युनिस्ट समर्थकों मे सौंघ आत्मघोषित मार्क्सवादी सालवाडोर अयादे से हुई तो अमेरिका ने यह छिपाने की कोशिश नही की कि उसकी सहानुभूति किस ओर है।

'फ्राई को राजनैतिक मामलों मे अमेरिका के मशविरे तथा प्रोत्साहन और आर्थिक रूप से अच्छी खासी मदद मिलती रही थी। १९६२ से १९६५ के बीच सीधी आर्थिक सहायता के रूप मे अमेरिका ने चिले को ६१८ मिलियन डालर दिए, जो किसी भी लातिन अमरीकी देश को सालाना मदद से अधिक थी। इस साल इंग्लैंड मे प्रकाशित होने वाले एक रोजनामचे मे (जो अब तक प्रकाशित हो चुकी है), सी आई ए के भूतपूर्व अधिकारी फिलिप एगी ने बताया है कि किस तरह १९६४ मे अपने मेमे मोन्तोविडियो से उन्हें मदद के लिए बुलाया जाना था : "सालवाडोर अयादे को राष्ट्रपति चुने जाने से रोकने के लिए सेन्टियागो जालसाजी और षड्यंत्र का अच्छा खासा अड्डा बन गया है। १९५८ के पिछले चुनाव में वे राष्ट्रपति होते होते रह गए थे, इसीलिए इस बार कोई भी किसी तरह की ढिलाई नहीं बरत रहा है। असल दिक्कत यह है कि सदरमुकाम (लागले, वा) का वित्त दफ्तर न्यूयॉर्क के बैंकों से पर्याप्त

चिलियन मुद्रा जुटा नहीं सका इसलिए उसे लिमा और रियो में क्षेत्रीय खरीद दफ्तर खोलना पड़ा। लेकिन ये दफ्तर भी जरूरत पूरी नहीं कर सके, इसलिए हमसे मदद माँगी गई।" इन दाँवपेंचों का परिणाम संतोषजनक निकला। ५६ प्रतिशत मतों से फ्राई की जीत हुई, और चिले के भविष्य को लेकर लोग आश्वस्त हो गए।

'लेकिन शुरू से ही फ्राई कठिनाइयों में पड़ने लगे। दक्षिणपंथियों ने उन पर बेहद तेज भागने और वामपंथियों ने बेहद सुस्ती दिखाने का आरोप लगाया। इस बीच अयांदे का समाजवादी दल विस्तार पकड़ता रहा। वामपंथी क्रिश्चियन डेमोक्रैट्स दल से टूटने वाले लोगों को अपने में मिलाते हुए तथा अन्य विरोधी दलों के साथ एकजुट होते हुए उसकी शक्ति लगातार बढ़ती गई। स्थिति सी आई ए के सिर दर्द के लिए काफी थी। १९६४ में एक मुख्य अफसर सेंटियागो पड़ाव के लिए भेजा गया था; बाद में १९७० के चुनाव की तैयारी के वास्ते सी आई ए की उपस्थित और गतिविधि दिनदूनी बढ़ने लगी। संविधान के अनुसार फ्राई राष्ट्रपति पद के लिए दूसरी बार चुनाव नहीं लड़ सकते थे, और तब अयांदे पहले से भी ज्यादा खतरनाक सावित हो सकते थे।

'टाइम को पता चला है कि सी आई ए का एक दल चिले भेजा गया और राष्ट्रीय सुरक्षा समिति से उसे हिदायत मिली कि चुनाव को "राझ-साझ" रखा गया। छुटभैयों ने आदेश का मतलब लगाया : अयांदे को रोको, और उन्होंने आदेश की तामील के लिए २० मिलियन डालर की मोटी रकम माँगी। उन्हें ५ मिलियन डालर दिया गया, जिसमें से अन्ततः एक मिलियन डालर से भी कम खर्च किया गया। उसी दल के एक भूतपूर्व मुलाजिम ने टिप्पणी की, "बोस्टन में वोट खरीदे जा रहे हैं, सेन्टियागो में वोट खरीदे जा रहे हैं।" लेकिन खरीद के बावजूद वोट पूरे नहीं पड़ सके; अयांदे के समर्थकों की संख्या अच्छी खासी थी। उन्हें जीत का बहुमत तो नहीं मिल सका पर अपने ३६ प्रतिशत वोट को लेकर वे चिलियन कांग्रेस की तीन तरफी लड़ाई में जिस किसी तरह विजित घोषित हुए। वाशिंगटन में सी आई ए के मठाधीशों की टोपी गुस्से से उड़ी जा रही थी।

'निक्सन शासन ने भूखंड के लिए अयांदे सरकार को क्यूबा से भी खतरनाक समझा···४० की समिति ने, किसिंजर की देख-रेख में खुफियागिरी का शिखर दल, निजी तौर पर ८ मिलियन डालर का वादा करते हुए हिदायत दी कि अयांदे अपने लिए जितनी मुश्किलें पैदा कर रहे हैं उससे भी ज्यादा उनके लिए मुश्किलें पैदा की जाएँ।'

किसिंजर उस वक्त भी अमरीकी राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थे। निक्सन ने उन्हें राज्य सचिव के पद पर अभी बिठाया नहीं था। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की हैसियत से वे '४० की समिति' के प्रमुख थे और उन्होंने ही चिले में सैनिक तख्तापलट का आदेश दिया था। ४० की समिति में ४० सदस्य नहीं हैं; उसे ऐसा इसलिए पुकारा जाता है क्योंकि गठन के समय कार्यकारिणी आदेशों की संख्या इतनी ही थी। १९४८ से ही एक या दूसरे नाम से यह विभाग बना रहा है। इसका काम रहा है - दूसरे देशों में खुली तोड़फोड़ (सड़क तोड़ना वगैरह) के लिए अमरीकी जासूसी यंत्रों, खासकर सी आई ए को अधिकृत करना तथा आदेशों से उसे नियंत्रित रखना। इस चालीस की समिति के संबंध में २३ सितम्बर, १९७४ की न्यूजवीक पत्रिका का कहना है :

'यह वाशिंगटन के सबसे विशिष्ट, सुरक्षित एवं अलग-थलग क्लबों में एक है जिसके नाम से भ्रम हो सकता है कि इसका काम सहायता कोषों के लिए भड़कीले नृत्यों का आयोजन करना है। लेकिन ४० की समिति के सदस्य जब ह्वाइट हाउस के तहखाने के सिचुएशन कक्ष में महीने में एक या दो दफा इकट्ठा होते हैं, तो वे अमेरिका के वास्तविक या कल्पित दुश्मनों के खिलाफ गुप्त कार्रवाइयों की स्वीकृति देने आये होते हैं। ४० की समिति अमेरिका के अव्वल जासूसों का निदेशक मंडल है। अपने उद्भव के बाद इन सालों में इसने जिन योजनाओं की स्वीकृति दी है, वे हैं—ईरान के मोहम्मद मोसादेघ के खिलाफ १९५३ की सैनिक कार्रवाई, यू-२ की जासूसी हवाई उड़ानें, बे ऑफ पिग्स पर चढ़ाई और लाओस का गुप्त युद्ध। पिछले सप्ताह इसका जो नया पक्ष खुला है वह है: चिले में स्वर्गीय सालवाडोर अयादे की मार्क्सवादी सरकार को पलटने में अमरीकी कोशिशों की अगुआयी।

'४० की समिति के बारे में जो जानकारी हासिल है वे नहीं के बराबर मानी जा सकती है। ह्वाइट हाउस, राज्य विभाग एवं सुरक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को लेकर इसकी पैदाइश १९४८ में एक 'विशेष दल' के रूप में हुई और इसका काम यह तय करना था कि साल भर पुरानी सी आई ए की योजनाओं की राजनीतिक कीमत सही बैठती है या नहीं। यों समय-समय पर इसके नाम में तब्दीली होती रही है—"५४/१२ दल", "३०३ की समिति" और अब "४० की समिति," जो नाम पिछली बार के पुनर्गठित स्मारपत्र के शीर्षक से लिया गया था—पर इसकी सदस्यता अब भी पाँच प्रमुख व्यक्तियों की ही है। अभी वे हैं, राज्य सचिव हेनरी किसिंजर, सी आई ए

के प्रधान विलियम इ. कॉलबी, उपसुरक्षा सचिव विलियम क्लेमेन्ट्स, राज्य उपसचिव जॉसेफ सिसको एवं वायु सेना के जनरल जार्ज ब्राडन, विभिन्न सेनाध्यक्षों के सभापति। इसका काम अधिकतर सी आई ए के प्रस्तावों के सूत्र सारांशों की छानबीन करना है। इन प्रस्तावों में उद्देश्यों का विवरण, उपलब्ध मुलाजिमों की तालिका, खर्चे का ब्योरा, सफलता की संभावना और, सबसे महत्त्वपूर्ण रूप में, उन विश्वसनीय तरीकों का बखान होता है जिनके द्वारा—अगर कहीं कोई गड़बड़ी हो गई तो—सरकार किसी काम में अमरीकी दखलंदाजी को नकार सके।'

एक बार फिर से चिले की ओर नज़र फेरें। सी आई ए की गतिविधियों का बखान करते हुए टाइम पत्रिका आगे कहती है :

'सी आई ए की थैली की आधी रकम विपक्षी अखबारों को जाती थी, जिनमें देश का सबसे महत्त्वपूर्ण दैनिक 'एल नरेक्यूरिओ' का नाम प्रमुख है। अयांदे ने सरकारी विज्ञापनों को अपने समर्थक अखबारों की ओर मोड़ दिया था, दूसरी ओर उन्होंने अखबारी कागज का दाम इतना ऊँचा कर दिया था जिससे दूसरे अखबार दिवालिया हो जायें। सी आई ए की बाकी रकम विरोधी राजनेताओं, निजी व्यापार क्षेत्रों तथा ट्रेड यूनियनों को जाती थी। एक सी आई ए अधिकारी की दलील है, "असल में हम एक स्वेच्छाचारी सरकार के खिलाफ नागरिक विरोध आन्दोलन का समर्थन कर रहे थे। हमारे लक्ष्य वे मध्यवित्तीय वर्ग थे जो अयांदे के खिलाफ काम कर रहे थे।"

'प्रत्यक्ष सहायता का काम सिर्फ लोकतांत्रिक विरोध को मजबूत करना नहीं था। सी आई ए ने समाजवादी दल में देसी विपक्षों की घुसपैठ करवाई। अयांदे के हाथों चिले की उलझती जा रही अर्थव्यवस्था को और भी उलझाने के उद्देश्य से ऐसे अधिकारियों को पकड़ा गया जो अपने कामों में जानबूझकर गलती करते थे। सी आई ए के पिट्ठुओं ने सरकारी नीतियों के खिलाफ नुक्कड़ प्रदर्शन आयोजित करवाए।'

आर्थिक संकट जैसे-जैसे गहरा होता गया, उसने हड़ताली दूकानदारों और टैक्सी चालकों की मदद शुरू की। सी आई ए के करारे नोट, जिनके बारे में कहा जाता है कि यूरोप की अन्य क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टियां उन्हें सेन्टियागो पहुँचाती थीं, चिलियाई ट्रक चालकों की ४५ दिवसीय हड़ताल को वित्तीय सहायता पहुँचा रहे थे। यह हड़ताल चिले की अर्थव्यवस्था पर करारी चोट मानी जाती है। इसके अलावा हड़तालियों के हाथ वे पैसे भी लगे जिसे सी आई ए ने देशभर में हर जगह बिखेर रखा था।

राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड, राज्य सचिव हेनरी किसिंजर और सी आई ए निदेशक विलियम कॉलबी ने जोरशोर से दावा किया है कि तख्तापलट में अमेरिका या सी आई ए का कोई हाथ नहीं था। उन पर कोई विश्वास नहीं करता। अगर तकनीकी रूप से यह सही भी हो कि सेन्टियागो में फौजी जनरलों की बन्दूकों की टोटियों पर अमरीकियों की उँगलियाँ नहीं थीं, तो इस पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि प्रेरणा कहाँ से मिली थी। अपनी ही स्वीकारोक्ति के अनुसार, अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अयादे को उलटने में कुछ भी उठा नहीं रखा था। ऐसी हालत में, अपने और अपने देश के प्रति अमरीकी मंशाओं को लेकर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 'घोर शंकाओं' और 'बुनियादी डरों' को अनुचित कैसे ठहराया जा सकता है?

हाल में इन डरों और शंकाओं को लेकर उन्होंने खुले तौर पर कुछ नहीं कहा है। लेकिन कुछ समय पूर्व सी आई ए और इस देश में उसकी गतिविधियों को लेकर उन्होंने अपनी शंकाएँ व्यक्त की थीं। गृह मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति को अक्तूबर, १९७२ में संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने भारतीय जनता को आगाह किया था कि "सी आई ए ने इस देश में अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी हैं और हमें अपनी सतर्कता बनाए रखनी है।" उन्होंने कहा कि बावजूद इसके कि हर देश के पास अपनी जासूसी मशीनरी है, 'हम जिस बात को सह नहीं सकते वह यह है कि वह दूसरे देशों के अन्दरूनी मामलों में दखलन्दाजी करे।' इंदिरा गांधी ने आगे कहा: 'सरकार अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति पूरी तरह से सचेत है कि हमारा राष्ट्रीय जीवन और उसकी संस्थाएँ विदेशी प्रभावों से मुक्त रखी जाएँ, कि राष्ट्रीय हित और सुरक्षा सी आई ए समेत अन्य विदेशी जासूसी एवं तोड़-फोड़ करने वाली संस्थाओं से बचाई जायें···सरकार सचेत है, लेकिन जनता को भी चौकस रहने की जरूरत है।'

उसी महीने, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के गांधीनगर सत्र के अवसर पर, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने ज्यादा स्पष्ट शब्दों में इन मुद्दों की ओर संकेत किया। कांग्रेस प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए उन्होंने सी आई ए के खतरे की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि सी आई ए के भूतपूर्व अधिकारियों ने दूसरे देशों की सरकार उलटने की कोशिश करने में सी आई ए के हाथ को साबित करते हुए किताबें लिखी हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि ऐसी विदेशी संस्थाओं से भारतीय जनता को सतर्क रहना है।

करीब-करीब उन्हीं दिनों कांग्रेस अध्यक्ष, शंकर दयाल शर्मा इस देश और

अन्य जगहों में सी आई ए की भूमिका और गतिविधियों की भर्त्सना कर रहे थे। उन्होंने सी आई ए पर न केवल देश की सरकार और जनता की मुश्किलों को बढ़ाने का आरोप लगाया, वलिक भारत और बंगला देश के आपसी संबंधों को तिक्त करने की दिशा में क्रियाशील रहने का दोष भी थोपा। यह भारतीय उपमहाद्वीप में जघन्य साम्राज्यवादी चालों का ही एक पक्ष था।

फिर भी भारत सरकार, कांग्रेस अध्यक्ष या प्रधानमंत्री में से किसी ने भी सी आई ए के चलते भारतीय लोकतंत्र पर बढ़ते हुए खतरे की प्रकृति को खुलासा नहीं किया। अगर खतरे का स्वरूप उतना गम्भीर और खौफनाक नहीं होता तो, इन जिम्मेदार हलकों से ऐसी शंकाएँ व्यक्त नहीं की गई होतीं। जैसा कि सर्वविदित है, अपने उद्भव के बाद से ही सी आई ए इस देश में क्रियाशील रहा है। शायद खतरे की असलियत और प्रकृति विभिन्न सूत्रों से मिलने वाली तत्कालीन खबरों से जानी जा सकती है जिनमें यह ध्वनि साफ सुनाई पड़ रही थी कि सी आई ए भारतीय राजनीति से इंदिरा गांधी का पत्ता साफ करना चाहता है, जरूरत पड़ी तो उनकी हत्या करके भी।

फ्रांसीसी समाचार सूत्र ए एफ पी का हवाला देते हुए दिसम्बर, १९७२ में भारतीय अखबारों ने एक खबर छापी : "कुवैत, दिसम्बर, ३। विश्वसनीय भारतीय सूत्रों को उद्धृत करते हुए दैनिक **अलसियासा** ने आज कहा कि पिछले दो सालों में भारतीय प्रधानमंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की तीन या चार कोशिशों में सी आई ए शरीक रहा है। समाचार पत्र ने बताया कि भारतीय अधिकारियों के पास ऐसे सबूत हैं जिनसे सी आई ए की साजिश की जोरदार पु... की जा सकती हैं। खबर में आगे कहा गया कि भारतीय-अमरीकी संबंध ... ीकी आर्थिक सहायता को ध्यान में रख-कर नई दिल्ल ... ों पर पर्दा डाल रखा है।"

सचाई ... कि तीसरे विश्व में भारत
जो भूमिका ... दियों ने कभी पसन्द
नहीं किया ... रीकी संबंध तनाव-
पूर्ण रहे हैं ... । इसलिए अमरीकी
शासकों की ... सावधान रहने के
लिए इंदिरा ... अपने ...
आने वाले ... के
अप्रत्याशित
वादियों की

अनुसार, सी आई ए एक ऐसी संस्था है जो, अपनी फौजों का इस्तेमाल किये बगैर, दूसरे देशों में अमरीकी हितों की रक्षा करता है। भारतीय जनता जानती है कि अमरीकी साम्राज्यवादी शांति, आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतन्त्रता जैसी भारतीय आकांक्षाओं को कभी स्वीकार नहीं कर सकते। इसीलिए अमरीकी साम्राज्यवाद की मुख्य सांघातिक शक्ति, सी आई ए, भारतीय राजनैतिक व्यवस्था को छिन्न-विच्छिन्न करने तथा अन्ततः उसे मटियामेट करने में निरन्तर संलग्न रहेगा। शायद इसी वजह से वह भारतीय जनतंत्र के महत्वपूर्ण स्तम्भों को जगह-जगह से ढीला करने की कोशिश में है।

ग्रन्य जगहों में सी ग्राई ए की भूमिका ग्रौर गतिविधियों की भर्त्सना कर रहे थे। उन्होंने सी ग्राई ए पर न केवल देश की सरकार ग्रौर जनता की मुश्किलों को बढ़ाने का ग्रारोप लगाया, वल्कि भारत ग्रौर बंगला देश के ग्रापसी संबंधों को तिक्त करने की दिशा में क्रियाशील रहने का दोष भी थोपा। यह भारतीय उपमहाद्वीप में जघन्य साम्राज्यवादी चालों का ही एक पक्ष था।

फिर भी भारत सरकार, कांग्रेस ग्रध्यक्ष या प्रधानमंत्री में से किसी ने भी सी ग्राई ए के चलते भारतीय लोकतंत्र पर बढ़ते हुए खतरे की प्रकृति को खुलासा नहीं किया। ग्रगर खतरे का स्वरूप उतना गम्भीर ग्रौर खौफनाक नहीं होता तो, इन जिम्मेदार हलकों से ऐसी शंकाएँ व्यक्त नहीं की गई होतीं। जैसा कि सर्वविदित है, ग्रपने उद्भव के बाद से ही सी ग्राई ए इस देश में क्रियाशील रहा है। शायद खतरे की ग्रसलियत ग्रौर प्रकृति विभिन्न सूत्रों से मिलने वाली तत्कालीन खबरों से जानी जा सकती है जिनमें यह ध्वनि साफ सुनाई पड़ रही थी कि सी ग्राई ए भारतीय राजनीति से इंदिरा गांधी का पत्ता साफ करना चाहता है, जरूरत पड़ी तो उनकी हत्या करके भी।

फ्रांसीसी समाचार सूत्र ए एफ पी का हवाला देते हुए दिसम्बर, १९७२ में भारतीय ग्रखबारों ने एक खबर छापी : "कुवैत, दिसम्बर, ३। विश्वसनीय भारतीय सूत्रों को उद्धृत करते हुए दैनिक **ग्रलसियासा** ने ग्राज कहा कि पिछले दो सालों में भारतीय प्रधानमंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की तीन या चार कोशिशों में सी ग्राई ए शरीक रहा है। समाचार पत्र ने बताया कि भारतीय ग्रधिकारियों के पास ऐसे सबूत हैं जिनसे सी ग्राई ए की साजिश की जोरदार पुष्टि की जा सकती है। खबर में ग्रागे कहा गया कि भारतीय-ग्रमरीकी संबंधों ग्रौर तात्कालिक ग्रमरीकी ग्रार्थिक सहायता को ध्यान में रखकर नई दिल्ली ने जानबूझकर उन सबूतों पर पर्दा डाल रखा है।"

सचाई का पता किसे है ? इतना तो जाहिर है कि तीसरें विश्व में भारत जो भूमिका ग्रदा कर रहा है उसे ग्रमरीकी साम्राज्यवादियों ने कभी पसन्द नहीं किया है। यही कारण है कि पिछले सालों में हिन्द-ग्रमरीकी संबंध तनावपूर्ण रहे हैं ग्रौर समय-समय पर खुली दरारें सामने ग्राई हैं। इसलिए ग्रमरीकी शासकों की मंशाग्रों ग्रौर गतिविधियों के प्रति चिंतित ग्रौर सावधान रहने के लिए इंदिरा गांधी ग्रौर दूसरे लोगों के पास यथेष्ट कारण हैं। ग्रपने रास्ते में ग्राने वाले राजनेताग्रों का सफाया कर देना सी ग्राई ए के चरित्र के लिए कोई ग्रप्रत्याशित बात नहीं मानी जानी चाहिए। सी ग्राई ए ग्रमरीकी साम्राज्यवादियों की वर्दी पर ढाल ग्रौर तमंचा की तरह लैस है। निदेशक कॉलबी के

अन्य जगहों में सी आई ए की भूमिका और गतिविधियों की भर्त्सना कर रहे थे। उन्होंने सी आई ए पर न केवल देश की सरकार और जनता की मुश्किलों को बढ़ाने का आरोप लगाया, बल्कि भारत और बंगला देश के आपसी संबंधों को तिक्त करने की दिशा में क्रियाशील रहने का दोष भी थोपा। यह भारतीय उपमहाद्वीप में जघन्य साम्राज्यवादी चालों का ही एक पक्ष था।

फिर भी भारत सरकार, कांग्रेस अध्यक्ष या प्रधानमंत्री में से किसी ने भी सी आई ए के चलते भारतीय लोकतंत्र पर बढ़ते हुए खतरे की प्रकृति को खुलासा नहीं किया। अगर खतरे का स्वरूप उतना गम्भीर और खौफनाक नहीं होता तो, इन जिम्मेदार हलकों से ऐसी शंकाएँ व्यक्त नहीं की गई होतीं। जैसा कि सर्वविदित है, अपने उद्‌भव के बाद से ही सी आई ए इस देश में क्रियाशील रहा है। शायद खतरे की असलियत और प्रकृति विभिन्न सूत्रों से मिलने वाली तत्कालीन खबरों से जानी जा सकती है जिनमें यह ध्वनि साफ सुनाई पड़ रही थी कि सी आई ए भारतीय राजनीति से इंदिरा गांधी का पत्ता साफ करना चाहता है, जरूरत पड़ी तो उनकी हत्या करके भी।

फ्रांसीसी समाचार सूत्र ए एफ पी का हवाला देते हुए दिसम्बर, १९७२ में भारतीय अखबारों ने एक खबर छापी : "कुवैत, दिसम्बर, ३। विश्वसनीय भारतीय सूत्रों को उद्धृत करते हुए दैनिक **अलसियासा** ने आज कहा कि पिछले दो सालों में भारतीय प्रधानमंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या की तीन या चार कोशिशों में सी आई ए शरीक रहा है। समाचार पत्र ने बताया कि भारतीय अधिकारियों के पास ऐसे सबूत हैं जिनसे सी आई ए की साजिश की जोरदार पुष्टि की जा सकती है। खबर में आगे कहा गया कि भारतीय-अमरीकी संबंधों और तात्कालिक अमरीकी आर्थिक सहायता को ध्यान में रखकर नई दिल्ली ने जानबूझकर उन सबूतों पर पर्दा डाल रखा है।"

सचाई का पता किसे है ? इतना तो जाहिर है कि तीसरे विश्व में भारत जो भूमिका अदा कर रहा है उसे अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कभी पसन्द नहीं किया है। यही कारण है कि पिछले सालों में हिन्द-अमरीकी संबंध तनावपूर्ण रहे हैं और समय-समय पर खुली दरारें सामने आई हैं। इसलिए अमरीकी शासकों की मंशाओं और गतिविधियों के प्रति चिंतित और सावधान रहने के लिए इंदिरा गांधी और दूसरे लोगों के पास यथेष्ट कारण हैं। अपने रास्ते में आने वाले राजनेताओं का सफाया कर देना सी आई ए के चरित्र के लिए कोई अप्रत्याशित बात नहीं मानी जानी चाहिए। सी आई ए अमरीकी साम्राज्यवादियों की वर्दी पर ढाल और तमंचा की तरह लैस है। निदेशक कॉलबी ने

मगूज" था। एटर्नी जनरल श्री राबर्ट कैनेडी भी इस दल के सदस्य थे, लेकिन उक्त बैठक में उन्होंने भाग नहीं लिया था।

'सूत्रों ने कहा कि बैठक के विवरण के अनुसार कास्त्रो को मारने की बात तुरन्त खारिज कर दी गई। फिर भी श्री मैकनमारा के सहायक, जनरल एडवर्ड लैंड्सडेल ने दो दिन बाद एक स्मारपत्र जारी किया जिसमें सी आई ए से कहा गया था कि क्यूबा के नेता की अन्ततः हत्या करवाने की योजना तैयार की जाय। यह तथ्य भी उन्हीं सूत्रों के माध्यम से सामने आया था।

'स्मारपत्र में "हत्या" शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ था, सिर्फ उन्हें "हटा देने" की बात की गई थी। सुझाव के तौर पर घूस, तख्तापलट तथा मौत जैसे कई तरीकों की चर्चा की गयी थी।

'इन सूत्रों के अनुसार, यों भी आई ए तक इस स्मारपत्र के पहुँचने के थोड़ी देर बाद ही इसे विधिवत् रद्द कर दिया गया, लेकिन सचाई यह है कि इसके बाद ही श्री कास्त्रो की जान लेने की कई कोशिशें हुईं। सूत्रों ने आगे बताया कि ये कोशिशें पूर्व प्रसारित उन योजनाओं के ऊपर से थी जिनके बारे में अधिकृत रूप से यह कहा गया था कि सी आई ए ने मफिया दादाओं सैम जियानकाना और जॉन रोजेली से गठबंधन किया था। (इस गठबंधन की चर्चा विस्तार से आगे की जायेगी)।'

इस तरह, सुरक्षा एवं राज्य सचिव, सी आई ए प्रमुख और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने कास्त्रो का सिर उड़ा देने की योजना पर विचार-विमर्श किया, लेकिन योजना को "रद्द" कर दिया। फिर भी सुरक्षा सचिव के सहायक ने सी आई ए को ठीक वही करने का स्मारपत्र भेजा। फिर स्मारपत्र भी "रद्द" कर दिया गया। लेकिन सारी बातों के बावजूद सी आई ए क्यूबा के नेता की हत्या करने की योजनाओं को आगे बढ़ाता रहा। असल में, कास्त्रो को मारने की एक नहीं, कई कोशिशें हुईं। २६ मई को बी बी सी में एक साक्षात्कार में क्यूबा के उप-प्रधानमंत्री कारलोस रॉडरिग्यूज ने कहा कि सी आई ए कास्त्रो की हत्या की कम से कम सौ कोशिशों में शरीक था। उन्होंने बताया कि भावी हत्यारों ने बम, बन्दूक और जहर समेत कई तरीकों का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा : '१९६० से १९६८ के बीच हत्या की कोशिशें सतत जारी रहीं। उसके बाद क्यूबा के भीतर उनके बहुत सारे लोग बचे नहीं रह गए। उन्हें बाहर से लोगों को लाना पड़ा; मैं समझता हूँ वे अब भी घात में बैठे हैं।'

बी बी सी ने रॉडरिग्यूज के विरोध में एक भूतपूर्व सी आई ए-गुर्गे को भी

खूनी दस्ते

हत्या सी आई ए की गतिविधियों का अभिन्न अंग है। ऐसी कई मिसालें हैं जबकि उन वैध राज्य प्रधानों की सुनियोजित हत्याएँ करवाई गईं जिन्हें अमरीकी साम्राज्यवादी पसन्द नहीं करते थे। सबसे प्रमुख उदाहरण आधुनिक अफ्रीकी उन्मेष के प्रतीक, तेजतर्रार अफ्रीकी राष्ट्रीय नेता, पैट्रिस लुमुम्बा की नृशंस हत्या है। भारत के पड़ोसी एशियाई देशों के ऐसे कई नेता मौत के घाट उतार दिये गए हैं जिनकी हत्या के उद्देश्यों की सही कहानी अभी भी प्रकाश में नहीं आयी है—बर्मा के औंग सान, श्रीलंका के एस. डब्ल्यू. आर. डी. भंडार-नायक, पाकिस्तान के लियाकत अली खाँ। यह सच है कि हत्यारे उसी देश के नागरिक थे, लेकिन उन्हें प्रेरित किसने किया था, षड्यंत्र किसने रचा था?

अभी-अभी क्यूबा के प्रधानमंत्री फिडेल कास्त्रो की हत्या की साजिश के प्रसंग में चौंकानेवाली खबरें छपनी शुरू हुई हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने मौत के फन्दे बुनने शुरू किये थे, लेकिन सफलता उनके हाथ नहीं लगी। फ्रांसीसी समाचार सूत्र, ए एफ पी ने २४ मई को वाशिंगटन से रिपोर्ट भेजी:

'१० अगस्त, १९६२ को उच्च अमरीकी अधिकारियों ने क्यूबा के प्रधान-मंत्री डॉ. फिडेल कास्त्रो की हत्या करने की योजना पर खुलेआम बहस की। उस बैठक का विवरण सी आई ए की गतिविधियों की छानबीन कर रहे अध्यक्षीय कमीशन के हाथों में है। यह सूचना कमीशन के निकटवर्ती सूत्रों से आज हासिल हुई है।

'सूत्रों का कहना है कि उक्त बैठक में भाग लेने वाले थे तत्कालीन सुरक्षा सचिव और विश्व बैंक के वर्तमान अध्यक्ष, श्री राबर्ट मैकनमारा, तत्कालीन राज्य सचिव, श्री डीन रस्क, तत्कालीन सी आई ए प्रधान, श्री जॉन मैकोन और स्वर्गीय राष्ट्रपति जॉन कैनेडी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, श्री मैकजार्ज बंडी।

'ये लोग तथाकथित "विशेष दल" के सदस्य थे, जिसका गुप्त नाम "आपरेशन

मगूज" था। एटर्नी जनरल श्री रावर्ट कैनेडी भी इस दल के सदस्य थे, लेकिन उक्त बैठक मे उन्होने भाग नही *लिया था।*

'सूत्रों ने कहा कि बैठक के विवरण के अनुसार कास्त्रो को मारने की बात तुरन्त खारिज कर दी गई। फिर भी श्री मैकनमारा के सहायक, *जनरल एडवर्ड लैंड्सडेल ने दो दिन बाद एक* स्मारपत्र जारी किया जिसमे सी आई ए से कहा गया था कि क्यूबा के नेता की *अन्ततः हत्या करवाने की* योजना तैयार की जाय। यह तथ्य भी उन्हीं सूत्रों के माध्यम से सामने आया था।

'स्मारपत्र मे "हत्या" शब्द का इस्तेमाल नही हुआ था, सिर्फ उन्हे "हटा देने" की बात की गई थी। सुझाव के तौर पर घूस, *तख्तापलट तथा मौत जैसे कई तरीकों की चर्चा की गयी थी।*

'इन सूत्रो के अनुसार, यों भी आई ए तक इस स्मारपत्र के पहुंचने के थोडी देर बाद ही इसे विधिवत् रद्द कर दिया गया, लेकिन सचाई यह है कि इसके बाद ही श्री कास्त्रो की जान लेने की कई कोशिशें हुईं। सूत्रों ने *आगे बताया* कि ये कोशिशें पूर्व प्रसारित उन योजनाओ के ऊपर से थीं जिनके बारे में अधिकृत रूप से यह कहा गया था कि सी आई ए ने मफिया दादाओ सैम जियानकाना और जॉन रोज़ेली से गठबधन किया था। (इस गठबधन की चर्चा विस्तार मे आगे की जायेगी)।'

इस तरह, सुरक्षा एव राज्य सचिव, सी आई ए प्रमुख और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने कास्त्रो का सिर उडा देने की योजना पर विचार-विमर्श किया, लेकिन योजना को "रद्द" कर दिया। फिर भी सुरक्षा सचिव के सहायक ने सी आई ए को ठीक वही करने का स्मारपत्र भेजा। फिर स्मारपत्र भी "रद्द" कर दिया गया। लेकिन सारी बातों के बावजूद सी आई ए क्यूबा के नेता की हत्या करने की योजनाओं को आगे बढाता रहा। असल मे, कास्त्रो को मारने की एक नही, कई कोशिशें हुई। २६ मई को बी बी सी से एक साक्षात्कार मे क्यूबा के उप-प्रधानमंत्री कार्लोस रॉडरिग्यूज ने कहा कि सी आई ए कास्त्रो की हत्या की कम से कम सौ कोशिशों में शरीक था। उन्होंने बताया कि भावी हत्यारो ने बम, बन्दूक और जहर समेत कई तरीको का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा: '१६६० से १६६८ के बीच हत्या की कोशिशें सतत जारी रही। उसके बाद क्यूबा के भीतर उनके बहुत सारे लोग बचे नहीं रह गए। उन्हें बाहर से लोगो को लाना पड़ा; मैं समझता हूँ वे अब भी घात मे बैठे हैं।'

बी बी सी ने रॉडरिग्यूज के विरोध मे एक भूतपूर्व सी आई ए-गुर्गे को भी

कबीना स्तर का एक विशेष दल "आपरेशन मंगूज" के खिताब में बैठा डोर सोच रहा था।

'वैसे अगस्त १९६२ में जनरल लैड्सडेल का नाम दफ्तरी बही में सुरक्षा सचिव के सहायक के रूप में लिखा गया, लेकिन श्री मैकनमारा ने उसे मैकनमारा सहायक के रूप में घोषित करने का विरोध किया। "वह क्या कह रहा है, निजी तौर पर मुझे इसका कोई पता नहीं था।" साफगोई पर जोर देते हुए यह पूछे जाने पर कि अगस्त १९६२ में वह किसके मातहत काम कर रहा था, जनरल लैंड्सडेल ने कहा, "उस योजना में मैं देश के सर्वोच्च अधिकारी की ओर से काम कर रहा था।"

'राकफेलर आयोग (जिसने सी आई ए की गतिविधियों की छानबीन करके हाल ही में राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड के समक्ष अपनी रिपोर्ट पेश की है) के मोटा-मोटी निष्कर्षों से वाकिफ सूत्रों का कहना है, "मगूज आपरेशन की सी आई ए कोठरी" विलियम हार्वे के जिम्मे थी। एक जानकार सूत्र का कहना है, "मुझसे कहा गया कि उसने दो या तीन ऐसे कदम उठाए थे जो कास्त्रो की हत्या के करीब ले जाते थे।" १९६३ के आसपास हार्वे की कथित हत्या चेष्टाएँ समाप्त हो गईं। रोम स्थित सी आई ए सदरमुकाम में उसका तबादला हो गया।'

विश्व बैंक के वर्तमान अध्यक्ष की विडंबनापूर्ण स्थिति को ध्यान में रखकर हम लैड्सडेल के कृत्यों से अपनी अनभिज्ञता जताने के पीछे मैकनमारा के कथन की सचाई भांप सकते हैं। लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि सी आई ए के द्वारा क्यूबा के प्रधानमंत्री पर हुए कातिलाना वारों की जानकारी अमरीकी राष्ट्रपति और उनके उच्च अधिकारियों को रहती थी। बहुत सभव है कि ये वार उनके आदेश से ही किए जाते थे। लैड्सडेल के तौर-तरीकों के बारे में बस इतना ही। कास्त्रो को मारने के लिए मफिया की मदद लेने जैसी बेहद अश्लील और जघन्य तरीके भी अपनाये गये।

एपी की २१ मई की रिपोर्ट देखिए:

'सी आई ए के एक भूतपूर्व उच्च अधिकारी का कहना है कि भूतपूर्व एटर्नी जनरल राबर्ट कैनेडी को चेतावनी दी गई कि अपराध की दुनिया के दो दादाओं पर अगर कानूनी कारंवाई की गई तो क्यूबा के प्रधानमंत्री फिडेल कास्त्रो को मारने की साजिश में सी आई ए के कारनामों का भंडाफोड़ कर दिया जायेगा।

'उक्त अधिकारी ने यह भी कहा कि इन दो लोगों पर मुकदमा चलाने के प्रश्न पर न्याय विभाग ने बाद में क्या फैसला किया या मुकदमा चलाने के

बाद के प्रयासों पर इस चेतावनी का क्या असर पड़ा, इसकी जानकारी उसे नहीं है।

'अपने नाम को प्रकाशित करने की मनाही करते हुए इस अधिकारी ने कल कहा कि सी आई ए को जब पता चला कि भाड़े पर लिए गये मफिया के दो लठैतों, सैम जियानकाना और जॉन रोजेली पर, कैनेडी के न्याय विभाग की घेराबंदी चल रही थी तो उसने १९६२ में श्री कैनेडी से हत्या के षड्यंत्र को लेकर बात की।

'अधिकारी ने कहा : "सी आई ए को चिन्ता थी कि सजा से बचने के लिए कहीं ये मफिया गुंडे कास्त्रो की हत्या के षड्यंत्र का ही भण्डाफोड़ न कर बैठें, श्री कैनेडी के आगे तथ्यों का ब्योरा देते हुए हमने कहा, 'मुद्दा यह है।'" श्री कैनेडी ने कहा, "अगली बार से मफिया के साथ गलबांही करने के पहले मेरे पास आया करो," लेकिन इसके अलावा उन्होंने कोई आपत्ति जाहिर नहीं की।

'फेडरल ग्रैंड जूरी के समक्ष सवालों का जवाब देने से इन्कार करने के अपराध में शिकागो का सिरमौर उस्ताद, जियानकाना जब साल भर जेल काट आया तो न्याय विभाग ने उस पर से सारे मुकदमे उठा लिए। रोज़ेली ताश के किसी जुए को लेकर फँस गया और बाद में हलकी सजा पाने की असफल कोशिश में उसने सी आई ए के सम्बन्धों को खुलासा कर दिया।'

कास्त्रो को मरवाने की एक और साजिश में फँसाया गया एक तीसरा आदमी सी आई ए पर मुकदमा चलाने की तैयारी कर रहा है। मैक्स गोर्मन गानसेलेज नाम के इस व्यक्ति ने स्वीकार किया है कि वाटरगेट ख्याति के उठाईगीर, फ्रैंक स्टर्जिस की देखरेख में चल रहे कास्त्रो की हत्या के एक षड्यंत्र में वह शरीक था। यह १९६८ की बात है। भावी हत्यारे क्यूबा पहुँचें, इसके पहले ही योजना की कालीपुताई हो गई। गानसेलेज ने आरोप लगाते हुए कहा, "हम भेड़ियों के मुँह में झोंक दिये गये।" उसे गिरफ्तार कर लिया गया, उस पर मुकदमा चला और उसे जेल में ठूँस दिया गया क्योंकि 'बिना कोई जानकारी दिए सी आई ए मेरा इस्तेमाल कर रहा था, मेरी मर्जी के खिलाफ।'

एक भूतपूर्व एफ बी आई अधिकारी, विलियम टर्नर, के अनुसार क्यूबा के प्रधानमंत्री के खिलाफ १५ अमरीकी साजिशें एक साथ चालू थीं। उनमें से ११ साजिशों का सूत्र संचालन सी आई ए कर रहा था, बाकी ४ रक्षा-विभाग के जासूसों की देखरेख में चल रही थीं। क्यूबा के गुआनतानमो स्थल पर

अमरीकी अड्डा था। कई साजिशें वहाँ से शुरू हुई। कम से कम एक साजिश उस वक्त जरूर आजमाई गई जब कास्त्रो १९७० में चिले की राजकीय यात्रा पर गए थे। टर्नर इस विषय पर एक पुस्तक लिख चुका है। "क्यूबा प्रोजेक्ट" नाम से छपी इस पुस्तक की एक अग्रिम प्रति सन फ्रांसिस्को एक्जामिनर के पास भेजी गयी थी। पुस्तक १९७५ के शुरू जून में छपकर बाहर आ गई।

कास्त्रो के विरुद्ध षड्यंत्र के मामले में ऊपरी हलकों से प्राप्त बेहद ठोस सबूत पेश किये हैं न्यूयार्क टाइम्स ने। १९ जून की एक खबर में इसने कहा कि अमरीकी लुटेरों ने क्यूबा के ही एक आदमी को खरीद रखा था जिसके जरिए, धीमें जहर से, कास्त्रो, उनके भाई रॉल और स्वर्गीय क्रान्तिकारी नेता अर्नेस्टो चे ग्वेरा का सफाया करवाया जाना था। अखबार ने इस खबर के सूत्र का नाम नहीं खोला लेकिन इसका संकेत दिया कि सी आई ए की कातिलाना साजिशों तक इस सूत्र की सीधी पहुँच है।

इस खबर के अनुसार, १९६० के अन्त में, जबकि राष्ट्रपति आइजनहावर शासन में थे, इस षड्यंत्र की रूपरेखा तैयार हुई। अप्रैल १९६१ में बे ऑफ पिग्स पर असफल आक्रमण के पहले ही सी आई ए ने क्यूबा में यह संकट पैदा करने की कोशिश की थी। इन तीन हत्याओं का जिम्मा सी आई ए के भूतपूर्व सुरक्षा विभाग प्रधान, शेफिल्ड एडवर्ड्स पर सौंपा गया था। एडवर्ड्स के काम के लिए राबर्ट मेहो की भर्ती की। मेहो एफ बी आई का भूतपूर्व कर्मचारी था। बाद में वह शिकागो के दो माफिया दादाओं, सैम गिआनकाना एवं जॉन रोजेली के लिए बिचौलिया बनाया गया। यह प्रासंगिक है कि कास्त्रो सरकार ने क्यूबा में इन दादाओं की सारी लागत-पूँजी जब्त कर ली थी। (इस सी आई ए मफिया गठबंधन की चर्चा एपी की रपट के जरिए पहले हो चुकी है। इनकी ओर से पैरवी करते हुए सी आई ए ने न्याय विभाग से मांग की थी कि इनके ऊपर नशीली दवाओं को लेकर चल रहे मुकदमे उठा लिए जायें)।

एक काफी जानकार अधिकारी का हवाला देते हुए न्यूयार्क टाइम्स ने कहा कि अपने महकमे की गतिविधियों की छानबीन करने वाले सरकारी अधिकारियों के आगे सी आई ए ने स्वीकार किया था कि कास्त्रो को मारने की तीन कोशिशें हुई—दो बार जहर देकर, एक बार बन्दूक से। मियामी को अपना अड्डा बनाकर मेहो और उसके दो मफिया शागिर्दों ने एक क्यूबा निवासी हत्यारे को खरीदा। उसे करना यह था कि इन तीन नेताओं के एक सम्मिलित खाने में जहर मिला दे। जहर सी आई ए की तरफ से मिलने वाला

था। जहर ऐसा था कि उसका असर काफी देर के बाद होता, और मौत के बाद किसी सूराग का पता लगा पाना मुश्किल होता। लेकिन यह साजिश नाकामयाब रही। इस पत्र का कहना है कि निर्धारित समय के भीतर यह हत्यारा अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सका। बे ऑफ पिग्स घटना के पहले ही उसे क्यूबा से खींच लाया गया।

अगर किसी को यह गलतफहमी हो कि हत्या की ऐसी साजिश सिर्फ फिडेल कास्त्रो, अमरीकी अखबार जिन्हें 'अमेरिका की अंतड़ी में धँसा हुआ काँटा' कहता रहा है, के खिलाफ रची गई थी, तो उसे अभी की एक ताजा खबर पढ़नी चाहिए। फिलिपीन्स के राष्ट्रपति मार्कोस का खून करवाने के प्रसंग में ए एफ पी ने २४ मई को मनीला से लिखा :

'एक अमरीकी तेज निशानेबाज ने आज एक भूतपूर्व पार्षद तथा फिलिपीन्स के लखपति का नाम लेते हुए बताया कि १९७२ में गोल्फ मैदान में गुप्त हथियार से राष्ट्रपति फर्नीनांद मार्कोस की हत्या का षड्यंत्र उन्हीं के दिमाग की उपज थी। एक सरकारी जाँच आयोग के आगे सबूत देते हुए श्री अगस्त मैक सौमिक लेहमन (जूनियर) ने कहा कि उसे षड्यंत्र का पता था, लेकिन उसने फिलिपीन्स या अमरीकी अधिकारियों के आगे यह राज नहीं खोला क्योंकि उसे मौत की धमकी मिली थी।'

लेहमन अमरीकी है। हालाँकि उसने एक फिलिपीन्स वाली को ही षड्यंत्र के पीछे का 'दिमाग' बताया है, लेकिन ऐसा लगता है कि हत्या की योजना तैयार करने वाले गिरोह में एक अमरीकी भी था। उसका नाम लैरी ट्रैक्टमन था, और लेहमन ने जिस पार्षद की चर्चा की थी वह उसका शागिर्द था। खुद पार्षद का नाम सर्जिओ आसमेना था। मजे की बात तो यह है कि खुद लेहमन उन ३० लोगों में, जिनमें अधिकतर अमरीकी हैं, एक हैं जिन पर राष्ट्रपति मार्कोस की हत्या का षड्यंत्र रचने का अभियोग लगाया गया है। उन सबों पर अभी मुकदमा चल रहा है।

१५ जून को शिकागो ट्रिब्यून ने प्रकाशित किया कि 'सदन के नेताओं को यह सूचना मिली है कि फ्रांस के राष्ट्रपति चार्ल्स दगाल की हत्या करने का जो षड्यंत्र फ्रांसीसी विपक्षियों ने रचा था उसमें सी आई ए का भी हाथ था।' पत्र ने कहा : "पिछले दो सप्ताहों में एक सी आई ए प्रतिनिधि ने सदन के सामने योजना का मोटामोटी विवरण पेश किया···उन विवरणों से इतना तो निस्संदेह साबित होता है कि एक दशक पहले ही सी आई ए के लोगों ने

श्री दगॉल की हत्या करवाने की योजना पर कम से कम राय मशविरा जरूर किया था।

पत्र ने आगे कहा : "हत्या की योजना कुछ इस तरह बनी थी। विपक्षियों के सम्मान मे आयोजित एक सभा की मेहमान-नवाजी करने जब श्रीदगॉल पहुँचे तो जहरीली अँगूठी से लैस एक भाड़े का हत्यारा अतिथियों की भीड़ मे घुस जायेगा। हत्यारा दगॉल से हाथ मिलायेगा, लेकिन राष्ट्रपति को हाथ में जहरीली चुभन का पता तक नही चल सकेगा। कातिल धीरे-धीरे खिसककर भीड़ में गुम हो जायेगा। इस बीच जहर का असर शुरू होगा।" पत्र का अनुमान है कि साजिश बात के दायरे से कभी आगे नही बढ़ सकी।

जून १७ को टाइम पत्रिका मे कहा गया कि डोमिनिकन रिपब्लिक के नेता रैफेल त्रुजिलो की हत्या के लिए सी आई ए ने तीन अलग-अलग साजिशें कीं। मेक्सिको स्थित अपने सवाददाता को उद्धृत करते हुए पत्रिका ने कहा कि सी आई ए १६५८, १६६० और १६६१ मे त्रुजिलो पर कातिलाना हमला करवाने के प्रयत्नों मे शरीक था।

१६५८ मे सी आई ए ने डोमिनिकन के विपक्षी गुट से वादा किया कि यदि गुट के लोग डोमिनिकन जनरल रॉडरिग्यूज राइज को इस बात के लिए राजी कर लें कि त्रुजिलो की हत्या के बाद वे सैनिक हस्तक्षेप की अगुवाई करेंगे तो वैसी हालत मे एक तेज निशानेबाज को भेजा जा सकता है। जनरल की नामंजूरी पर षड्यंत्र विफल हो गया। दो साल बाद सी आई ए ने त्रुजिलो के विरुद्ध आदोलन छेड़ने की अगुवाई करने के लिए ६० डोमिनिकन प्रवासियों को पटाया। लेकिन वे काम से मुकर गये क्योंकि उनकी राय मे यह काफी खतरनाक कदम था। १६६१ मे सी आई ए ने त्रुजिलो के खिलाफ गोष्ठी बैठाने वाले डोमिनिकन के एक दक्षिणपंथी गुट को तीन एम-१ बन्दूकें और अन्य सैनिक साजो-सामान भेंट किए। पत्रिका ने कहा कि मई १६६१ मे तानाशाह की घेराबंदी करने वाले चार षड्यंत्रकारियो के साथ उनमें से एक बंदूक तो जरूर थी, लेकिन उनकी हत्या एक और ही किस्म की धारदार बंदूक से हुई।

पत्र-पत्रिकाओं मे इन सनसनीखेज पर्दाफाशो को पढकर लोग उधर सी आई ए पर लगाम लगाने का शोरगुल मचा ही रहे थे कि तभी भडाफोड़ हुआ कि सी आई ए एक और राष्ट्रपति की हत्या करवाने तथा वहाँ का तख्ता पलटने मे सलग्न है। १० जून को जायर के पत्र सलोगो ने खबर छापी कि देश के राष्ट्रपति मोबुतु सेसे सेको की हत्या के षड्यत्र मे ३ जनरल, एक कर्नल और दो मेजर पद के सैनिक अधिकारी मुख्य रूप से शरीक थे। इस असफल

साजिश की पूरी जिम्मेदारी अमेरिका पर थोपी गई और अखबार ने आरोप लगाया कि इन निर्लज्ज कृत्यों की जिम्मेदारी से अपना दामन बचाने की व्यर्थ कोशिश में अमेरिका [illegible] का पसीना एक किये जा रहा है। एक दूसरे अखबार, एलिमा, के नाम लिखे गए एक पत्र में जनरल मोबुतु ने इसी अखबार की पहले की एक खबर की पुष्टि की जिसमें कहा गया था कि उन्हें उखाड़ फेंकने की एक असफल कार्रवाई कोशिश में अमेरिका का समर्थन था। सलोंगो ने षड्यंत्रकारियों का नाम छापा : कादुगुरा या कानिनिदा, कालु मुम्बु और उत्सहुदी वेकवोलेंगा (सभी जनरल), कर्नल थोम्बा पेना मुंगा और बुला बुबु पु वाजिकिला एवं मपिका तोया जो बिलम्बो (दोनों मेजर)।

३ जून तक पालू वाशिंगटन स्थित जायर दूतावास में सैनिक सहायक था और उसके बाद वह षड्यंत्र का सूत्रधार बन गया। बुबु पु अमेरिका के एक सैनिक महाविद्यालय का स्नातक था। मपिका इजरायल के 'ब्रैग सेन्टर' में हवाई छतरियों की ट्रेनिंग लेने गया था। ज्ञातव्य है कि यह सेन्टर छापामार दस्तों के रणकौशल का विशिष्ट स्थल माना जाता है। उसने अमेरिका में अपनी ट्रेनिंग पूरी की और जायर सरकार का तख्ता पलटने के तरीकों पर एक निबंध लिखा। अखबार का कहना है : "निष्कर्ष में उसने लिखा था कि जायर के तख्तापलट की सफलता सिर्फ इस बात पर निर्भर करती है कि राष्ट्रपति मोबुतु का सफाया कर दिया जाय।"

सलोंगो ने इस खबर की अगली कड़ी १९ जून को छापी, जिसमें षड्यंत्र में शरीक और अफसरों के नाम दिये गये थे। ये नीचे तबके के अफसर थे। टिप्पणी करते हुए अखबार ने कहा : "अपने खूनी मंसूबों में सफलता हासिल करने के उद्देश्य से ऊँचे तबके के अफसरों की बजाय नीचे के लोगों के पास सी आई ए की पहुँच ज्यादा आसानी से होती थी, और यही उसकी पसन्द भी थी।"

सी आई ए के खूनी कारनामों की फेहरिस्त लम्बी करने की कोई जरूरत नहीं है। सी आई ए की गैरकानूनी गतिविधियों के खिलाफ जोर पकड़ते हंगामे और विवादों के बीच, एजेन्सी की योजनाओं की जाँच के लिए राष्ट्रपति जेरल्ड फोर्ड की ओर से बिठाई गई राकफेलर समिति ने अपनी रिपोर्ट में हत्या के इन षड्यंत्रों पर एक पूरा अध्याय जाया किया है। राष्ट्रपति फोर्ड ने रिपोर्ट के इस अंश को प्रकाशित करने की बजाय उसे सदन समितियों की ओर बढ़ा दिया है। ये समितियाँ सी आई ए के विरुद्ध विभिन्न आरोपों की अलग से छानबीन कर रही हैं। यह कह सकना मुश्किल है कि ये समितियाँ सी आई ए

के काले कारनामों पर सफेदी पोत देंगी या सचाई सामने आयेगी। लेकिन खुफियागीरी पर सिनेट सेलेक्ट कमेटी के अध्यक्ष, सिनेटर फ्रैंक चर्च ने कहा है कि "आरोपों की पुष्टि करने वाले ऐसे सबूत हैं जिनसे जाहिर है कि न केवल हत्या की योजनाएँ बनीं, बल्कि उन्हें सफल बनाने की वास्तविक कोशिशें भी की गईं।" उन्होंने यह भी संकेत किया कि अन्य क्षेत्रों की ओर से की गई हत्या की कोशिशों में भी सी आई ए का अप्रत्यक्ष हाथ रहा है।

यह मानना कि सी आई ए सिर्फ महारथियों पर अपना हाथ चलाता रहा है, सिरे की मूर्खता होगी। एन बी सी टेलिविजन ने २४ मई को कहा, "सी आई ए के कई भूतपूर्व प्रतिनिधियों ने सफाई दी है कि एजेन्सी ने सैकड़ों हत्याओं के आदेश जारी किए। इन आदेशों के शिकार बनने वाले लोगों में न केवल कई देशों के नेता और राज्य प्रमुख थे, बल्कि अमेरिका के बाहर के वे बेशुमार लोग भी थे जिनकी राजनैतिक मान्यताएँ वामपंथी थीं।"

दक्षिण-पूर्व आखेट क्षेत्र

कायदे से चुनी गई वैध सरकारों को पलटकर सैनिक तानाशाही थोपने की कोशिशों में—और खूबी तो यह है कि वह भी लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर —सी आई ए सिर्फ चिले में ही क्रियाशील नहीं रहा है। पिछले दिनों विभिन्न अखबारों में छपी खबरों ने कई अन्य देशों में इसके करतूतों का भंडाफोड़ किया है। कहना न होगा, इन सारे करतूतों का लक्ष्य अमरीकी साम्राज्यवाद के हितों को मजबूत करना था।

८ अक्तूबर, १९७४ को अमरीकी प्रतिनिधि सदन के आगे बयान देते हुए राबर्ट डुरिनेन ने कहा कि राजकुमार सोभान्ना फूमा की सरकार और राजकुमार सोफानोभूंग के नेतृत्व में चल रहे लाओ देशभक्त मोर्चे के खिलाफ सी आई ए ने बड़े पैमाने पर जाल बिछा रखा था। डुरिनेन ने निम्नलिखित तथ्यों का उद्‌घाटन किया : लाओस को लेकर हुए जेनीवा समझौते पर हस्ताक्षरों की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि सी आई ए ने लाओस में विघटनकारी गतिविधियों की शुरुआत की। यह १९६२ की बात है। इन गतिविधियों के जनक थे सी आई ए के वर्तमान निदेशक, विलियम कॉलबी। ४० से लेकर ५० लोग उनकी देखरेख में काम कर रहे थे। उनके जिम्मे का काम था लोगों की भर्ती, व्यवस्था, तालीम, साज-सामान की आपूर्ति और पैथेट लाओ के खिलाफ तथाकथित संघर्ष में रत एक गुप्त सेना की सीधी सिपहसालारी। सी आई ए ने अमेरिका में असैनिक वायुयान चालकों की भर्ती की, जो युद्ध सामग्रियों से भरे वायुयान लाओस पहुँचाते थे और जन मुक्ति सेना के अधीनस्थ क्षेत्रों पर बमबारी करते थे। दस साल से भी ज्यादा समय तक इन गतिविधियों का खर्चा करों से चलाया जाता रहा जिसकी कोई जानकारी अमरीकी कांग्रेस को नहीं थी। इस गुप्त युद्ध पर कोई ५,००० मिलियन डालर खर्च किए जा चुके हैं, जिसकी १० प्रतिशत राशि सी आई ए की अपनी थैली से और बाकी पेन्टागन की ओर लगायी गयी।

अमरीकी कांग्रेस में लाओस के अन्दर सी आई ए की गतिविधियों को लेकर उठने वाले हगामों का यह पहला मौका नही था। सेनेटर एडवर्ड कैनेडी ने एक बार आरोप लगाया कि लाओस में असैनिक हताहतों की राहत के लिए दी गई राशि का आधा हिस्सा देशभक्त मोर्चों के खिलाफ लड़ने वाले एक सैनिक गिरोह की ओर मोडा जा रहा था।

हिन्द-चीन खाड़ी मे सी आई ए के घृणित कृत्यों पर २२ नवम्बर, १९७१ की न्यूजवीक पत्रिका यह कहती है :

'करीब-करीब पिछले दस सालो से सी आई ए ९५,००० लोगो की एक सेना को तालीम दे रहा है, साजो-सामान से लैस कर रहा है और एक तरह से उसका पूरा नेतृत्व कर रहा है। इन दिनो वह वाशिंगटन की एक कम्पनी की आड़ में फलांग लगाने वाली एक ऐसी टुकड़ी को तालीम दे रहा है जिसका काम ऊपर से झील मे कूदकर एक विशाल बाँध को उडा देना होगा। कम्बोदियाई खेतिहरो के बीच निर्वासित सिहानूक के प्रति रोष फैलाने की दृष्टि से इसने एक चटपटेदार तिकडम गढ़ी है। एक प्रतिभावान ध्वनि इंजीनियर ने सूक्ष्म एलेक्ट्रोनिक यत्रों के माध्यम से राजकुमार की आवाज की उत्कृष्ट नकल की है। इस नकलची यत्र से सिहानूक की आवाज सुनाई पड़ती है—हाँफती हुई, बेहद तेज और बीच-बीच में दबी हुई हँसी से युक्त। लाओस के एक गुप्त रेडियो स्टेशन से इसे प्रसारित किया जाता है। चालाकी से गढ़ी-गढ़ाई इसकी बातें किसी भी शिष्ट खमेर के लिए अपमानजनक होंगी। इन रेडियो सन्देशो मे एक जगह "सिहानूक" "मुक्त क्षेत्र" की जवान लड़कियो को बहादुर वियतकाग के साथ सोकर मुक्ति युद्ध मे मदद करने की ललकार भर रहे होते हैं। याद रहे कि निर्वासन के पूर्व कम्बोदिया की जनता सिहानूक की पूजा करती थी।'

खुद सिहानूक ने "माई वार विद द सी आई ए" (सी आई ए के साथ मेरी लडाई) नाम से एक पूरी किताब ही लिखी है। इस पुस्तक मे तख्ता-पलट के लम्बे समय, पहले से कम्बोदिया मे सी आई ए की खौफनाक गतिविधियों और उन्हें पदच्युत करने मे सी आई ए की भूमिका का पर्दाफाश किया गया है। सी आई ए की इन जलील हरकतों का शिकार सिर्फ सिहानूक ही नहीं हुए हैं। १५ जून के अंक में न्यूजवीक ने कहा कि इंडोनेशिया के स्वर्गीय राष्ट्रपति सुकार्णो के प्रभाव और शासन को कमजोर करने के उद्देश्य से एजेन्सी ने १९६० मे उन पर एक अश्लील चलचित्र बनवाने की योजना तैयार की। बाद मे चलकर इसने जकार्ता के रक्तपिपासु जनरलों की अगवानी

कि उन्होंने फ्राग इस्टिच्यूट फॉर ऐफिशन्ड स्टडीज में तालीम ली थी, इस में
छह सप्ताह गुजारे थे और इसीलिए, [illegible] 'मंजर' में, वे फांगो में
मास्को के समर्थक थे। व्हाइट हाउस से फरमान जारी किया गया कि उन्हें
रोकने की गुप्त कार्रवाई की जाय। (न्यूजवीक, २२ नवम्बर, १९७२)

पुर्तगाल में सैनिक तानाशाही के खात्मे के बाद सी आई ए ने वहाँ अपनी
गतिविधि तेज कर दी है। अक्तूबर, १९७४ के पहले सप्ताह में, फ्रांसीसी
पत्रिका ल केनार इनशाइन ने रिपोर्ट जारी की कि सी आई ए ने लिस्बन के
कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से अनुदारवादी अखबार 'ओ टेम्पो' एव दक्षिणपंथी
राजनैतिक दलों की वित्तीय सहायता के लिए कहा। उसने हाल में निष्कासित
राज्याध्यक्ष जनरल अन्तोनियो स्पिनोला में, जिनकी छुट्टी दक्षिणपंथी शक्तियों
के प्रति अपनी सहानुभूति के चलते हुई, एक नये रेडियो एव टेलीविजन स्टेशन
की मंजूरी करवानी चाही। कई अन्य सूत्रों के अलावा ब्राजिल के दो अनाम
स्टेशन इस काम में पैसे लगाने वाले थे। ऐसा हो जाने पर उनके संचालन में
अमेरिका का निर्णायक हाथ रहता। फ्रांस की साप्ताहिक पत्रिका ने आगे कहा
कि अमरीकी राज्य सचिव हेनरी किसिंजर ने पुर्तगाली सरकार के आगे अपना
मन्तव्य साफ कर दिया था कि अमेरिका केप वर्डे द्वीपों की आजादी के खिलाफ
है क्योंकि सैनिक महत्त्व के इन द्वीपों पर एक न एक दिन रूसी नौसैनिक
हवाई अड्डा जरूर स्थापित करेंगे। 'ईंधन भराई' सुविधाओं के लिए अजोर्स
द्वीप के उपयोग को बरकरार रखने को लेकर खुद अमेरिका पुर्तगाल से बात-
चीत कर रहा है। सी आई ए के एक उप-निदेशक, जनरल वर्नोन वाल्टर्स
'एक निर्दोष सैलानी' की हैसियत से गर्मियों में दक्षिणी पुर्तगाल में एक सप्ताह
की छुट्टी मनाते रहे थे।

चिले और पुर्तगाल की समानताएँ गौर करने लायक हैं। दोनों ही
अमेरिका के नवउपनिवेशी एव सैनिक जालों से छूट निकले थे। अयादे सरकार
के खिलाफ खूनी तख्तापलट के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद ने वहाँ फिर से
अपनी जगह बना ली है। अब शायद पुर्तगाल में वही दृश्य दुहराने की कोशिश
होगी। फ्रांसीसी साप्ताहिक का यह कथन भी रोचक है कि अमेरिका ने पुर्त-
गाली जनरल स्टाफ के साथ मेलजोल बढ़ाने का फैसला किया है। याद रहे
कि चिले के ऊँचे फौजी नुमाइंदों के बीच अपनी पहुँच का भरपूर इस्तेमाल
करके ही अमरीकी साम्राज्यवादियों ने सी आई ए और पेन्टागन जैसे औजारों
से राष्ट्रपति अयादे की सरकार को बर्बरता से उखाड़ फेंका था।

पिछले सप्ताहों में एक तीसरे देश के अन्दर सी आई ए की विघटनकारी

दो एजेन्ट लगाये गए थे। उनके नाम थे हाइट और ड्यूजफिक। हथिय
डालने के ठीक पहले मनी ने इन दो सी आई ए लोगों की बैंकॉक भागने क
व्यवस्था की थी। गौर करने की बात है कि यह हाइट महाशय बंगला देश
अपने करतब दिखाने के पहले कूटनीतिक लबादे में कलकत्ता और कैरो को भी
अपना पड़ाव बना चुके थे। और बंगला देश आखिरी जगह नहीं है जहाँ से
हाइट और ड्यूजफिक की खबरें मिली हों। उनकी आखिरी चर्चा मार्च १९७२
में श्रीलंका में सुनी गई। यह रिपोर्ट जारी करते हुए कि उस्तादों की यह जोड़ी
उन वक्त लंकाद्वीप में क्रियाशील है, कोलम्बो की पत्रिका फॉरवर्ड ने कहा :
"अगर पिछले साल के विद्रोहियों ने पिछले अप्रैल के अपने कारनामों को छोटे
पैमाने पर भी दुहराया तथा वैयक्तिक आतंकवाद और राजनैतिक हत्याओं की
सनसनीखेज लहर फैलाई, तो ये महाशय उन लोगों के नाम-पतों को लेकर
तैयार रहेंगे जो सी आई ए की फेहरिस्त पर उड़ा दिये जाने वाले लोगों के
खाने में दर्ज हैं।" पत्र ने कहा कि "दक्षिणपंथी खेमे ने श्रीलंका की सुरक्षा सेना
में सी आई ए के दो कर्मचारियों की घुसपैठ करवाई है। सोचा यह गया था
कि दुस्साहसिक युवक विद्रोह को आड़ बनाकर ज्यादा से ज्यादा वामपंथी
नेताओं का खात्मा कर दिया जाय। इन हत्याओं के बाद यह प्रचारित कर-
वाया जाना कि मरने वाले लोग या तो बगावती थे, या बगावतियों के हाथ
मारे गये थे। लेकिन श्रीलंका के युवकों ने लंगले से आये इन महाशयों की
बात नहीं मानी।"

बंगला देश की ओर लौटें। सी आई ए वहाँ दुतरफी चाल चल रहा था।
एक ओर उस देश में लोगों को बहकाकर वह कत्लेआम की सरंजामी कर
रहा था, दूसरी ओर कलकत्ता में शरणार्थियों के लिए राहत जुटा रहा था। इस
मानवतावादी राहत कार्य का एक हिस्सा एक तथाकथित इन्टर-नेशनल रेस्क्यू
कमेटी के जिम्मे था। कलकत्ता स्थित इस पड़ाव की देख-रेख कर रही थी एक
श्रीमती ओसवाल्ड लार्ड, और ऐसा कहा जाता है कि इसका माहवारी बजट
कुछ लाख रुपयों तक जाता था। इस राहत संस्था के असल चरित्र का अंदाजा
इसके इतिहास की पिछली दो चर्चित मिसालों से लगाया जा सकता है, जबकि
इसने इसी तरह के राहत कार्यों की व्यवस्था की थी। पहली बार १९५६ में उन
शरणार्थियों के लिए जो हंगरी में प्रति-क्रांति के कुचले जाने के बाद भागे थे,
दूसरी बार क्यूबा के उन "शरणार्थियों" के लिए थी जो १९५९ में वहाँ की
सफल क्रांति के बाद भागे थे। आई आर सी अमेरिका की अकेली दयालु
संस्था नहीं थी। देखते-देखते वहाँ 'पिसती जनता' की मदद और राहत के

सैनिक खुफियागिरी के भूतपूर्व अधिकारी थे। बाद मे चलकर उस गिरोह शरीक हुए विलियम बी. एडमडसन, जिसने पहले ही पूर्व अफ्रीका मे अपन ख्याति अर्जित कर ली थी, और स्टेला डेविस। इस आकर्षण, स्नेहमयी औरत (स्टेला डेविस) को देखकर अदाज लगा पाना मुश्किल था कि सी आई ए मे भर्ती होने के पहले वह सालो एफ बी आई की एक चतुर एजेन्ट रह चुकी थी और अदिस अबाबा, नैरोबी तथा दारेसलाम जैसी जगहो मे काम करते हुए उसने स्वाहिली भाषा मे निपुणता हासिल कर ली थी। १९६५ आते-आते सी आई ए के आक्रा अड्डे पर दो दर्जन नुमाइदे राष्ट्रपति नुक्रुमा के गुप्त शत्रुओं के बीच अच्छी खासी खैरात बाँट रहे थे ··

'फरवरी १९६६ मे नुक्रुमा जब पेकिंग गए और अध्यक्ष माओ ने उन्हें— "अफ्रीकी मुक्तिवाहक" के रूप मे सम्मानित किया तो सी आई ए उनकी सत्ता समाप्त कर देने की योजना लिए तैयार बैठा था। उनकी जनता, जिसने एक वक्त "रक्षक" कहकर उनका जयघोष किया था, उनके खिलाफ हो गई। एक रक्तहीन क्राति मे उनकी छुट्टी कर दी गई। आक्रा स्थित सी आई ए दल के धैर्यपूर्ण एवं लगनशील काम का अच्छा खासा इनाम मिला··"नुक्रुमा का शासन खत्म हुआ और नई सैनिक सरकार साम्यवादी मसूबो के खिलाफ किलेबदी का काम करने लगी।"

'करीब-करीब उसी वक्त लागोस मे सी आई ए के प्रमुख, चार्ल्स डब्ल्यू. एडवर्ड्स तिकड़मो की असफल, चिन्ताजनक दौर के बाद वाशिंगटन को खुश-खबरी भेजने मे सफल हुए। विभिन्न कबीलों के आन्तरिक झगड़ो से नाइ-जीरिया मे हगामा और तबाही मचने लगी। सी आई ए ने सैनिक विशेषज्ञो और राजनैतिक सलाहकारो का एक दल छोडा। उसने नाइजीरिया के सैनिक कमांडरो और पुलिस अधिकारियों से गुप्त सबध स्थापित किया। अमरीकी सैनिक खुफियागीरी का एक भूतपूर्व लेफ्टिनेन्ट कर्नल एडवर्ड्स एजेन्सी फॉर इन्टनेशनल डेवेलपमेन्ट के एक अधिकारी के वेष मे लागोस पहुँचा। उसी तरह की आड़ मे दो सहायक और आये। वे थे कैप्टन चार्ल्स लेरोय रैंडोल्फ और एडवर्ड जे. मार्टिन। रैंडोल्फ सी-२ का भूतपूर्व अधिकारी था। मार्टिन के पास गौतेमाला मे विद्रोह करवाने के पुराने अनुभव थे··

'वियाफा युद्ध के दौरान सी आई ए ने दुहरी भूमिका अदा की। उसने कर्नल ओजुकु का समर्थन किया और पुर्तगाली क्षेत्रों से वियाफा के नेता के लिए सैनिक सामानो की आपूर्ति भी करता रहा था···

'उगाडा और तंजानिया में बढ़ती हुई साम्यवादी घुसपैठ को लेकर

'राष्ट्रपति ओबोते की छुट्टी उसी मुल्क में हुई जिसे अन्तराष्ट्र पाना में युगांडा की सरकार फ़ौजी विद्रोह से पलटी गई थी। ओबोते अपने मुल्क से बाहर थे। वे कॉमनवेल्थ सम्मेलन में भाग लेने सिंगापुर गये थे, जहाँ उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के साथ इंगलैंड की हथियार बिक्री का पुरजोर विरोध किया था तथा धमकी दी थी कि युगांडा कॉमनवेल्थ से निकल जायेगा। उनके पदच्युत होने से मौजूदा अखिल अफ्रीकी एकता पर करारी चोट पड़ेगी। नतीजतन, पूर्व अफ्रीका के एक सबसे नाजुक हिस्से में साम्राज्यवादी लहर को जब्त कर लिया गया...

'फिर भी, सफलताओं के साथ सी आई ए को कभी-कभी बेहद सकते में डालने वाली असफलताएँ भी हाथ लगी हैं। मिसाल के तौर पर नवम्बर, १९७० में गिनी पर असफल आक्रमण की कोशिश, जो एक तरह से छोटा-मोटा वे ऑफ पिग्स ही माना जा सकता है (बे ऑफ पिग्स : सी आई ए द्वारा संचालित शरणार्थियों की वेष में अमरीकी सेना द्वारा क्यूबा पर सनसनीखेज आक्रमण; फिडेल कास्त्रो के नेतृत्व में क्रांतिकारी सेना ने शत्रुपक्ष को निर्णायक रूप से बाहर खदेड़ दिया।) सेकू तोरे, जो सी आई ए के अनुसार कम्युनिस्ट डिक्टेटर हैं, के नेतृत्व में गिनी सी आई ए के गले में काँटे-सा चुभता रहा है, खासकर उस वक्त से जब गिनी की बॉक्साइट खदानों में भारी लागत लगाने वाली अमरीकी कम्पनियों से खुदाई सुविधाएँ छीन ली गई। दुनिया में बॉक्साइट की सबसे बड़ी खदानों में इनकी गिनती है।

'कई सालों तक उनकी सरकार को गिराने की कोशिशों में सी आई ए साथ देता रहा था। इस काम में उसे पुर्तगाल का सहयोग भी प्राप्त था क्योंकि कांगो के छापामार दस्ते साथ में लगे पुर्तगाली गिनी की सीमाओं पर लगातार हमले करते रहे थे (इसका सन्दर्भ पी ए आई जी सी के नेतृत्व में मुक्ति योद्धाओं का छापामार संघर्ष है जहाँ, अफ्रीका में अपने उपनिवेशों से निकल जाने के पुर्तगाली निर्णय के बाद, उन्होंने शासन सँभाल लिया है)।

'गिनी की राजधानी कोनाक्री में सी आई ए का भारीभरकम दस्ता था। इन दस्ते के लोग वॉशिंगटन स्थित बड़ी अमरीकी कम्पनियों के मुलाजिमों की शक्ल में छिपकर काम करते थे। कालक्रम में इनमें से अधिकतर लोगों को वहाँ से भागना पड़ा या उन्हें धकेल दिया गया। आक्रमण के मौके तक जो बचे रह गये थे वे अपने को तटस्थ देशों के नागरिक बतलाते थे। इनमें से एक थे वियाना में जन्मे ट्रेन यूनियन के भूतपूर्व अधिकारी, फिलिप हेलर जो अमेरिका में जा बसने के बाद द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ओ एस एस में भर्ती हो गये थे (ओ एस एस, सी आई ए की पूर्ववर्ती, युद्धकालीन, अमरीकी जासूसी संस्था थी) और युद्ध की समाप्ति के बाद सी आई ए में चले आये थे। गिनी में वे अस्त्रियाई व्यापारी बने बैठे थे। उनके सहयोगी थे नार्वे में जनने १९६० ने सी आई ए के एजेन्ट, इगेर क्मोस्लेफ जो तालीम से तेल इंजीनियर थे और पहले कैरो, लिबिया तथा कुवैत में काम कर चुके थे। कोंक्री में उनका उदय हुआ तकनीकी की सलाहकार के रूप में। एक दूसरे सज्जन थे हंगरी में १९११ में जन्मे आर्थर वारदोज, जो युद्ध के समय काउन्टर इंटेलिजेन्स कोर में काम कर चुकने के बाद जर्मनी के अमरीकी क्षेत्र में रहे थे। एक हंगेरियाई दोस्त का मुलम्मा चढ़ाकर वे सी आई ए के रेडियो संचार का संचालन कर रहे थे। जर्मनी के कई लोग भी स्वतन्त्र एजेन्टों के रूप में बहाल किये गये, जिनमें से अधिकतर गेहलन संस्था के सदस्य थे (गेहलन पश्चिम जर्मनी का जासूसी दस्ता है)।

'पतझड़, १९७० में सी आई ए ने युद्ध के बाद बचे हुए बी-२६ बमवर्षकों में से २० पुर्तगाल भेजने की व्यवस्था की। कुछ विशेष सेनाधिकारी और विघटनकारी विशेषज्ञ हमलावर दस्तों को तालीम देने पुर्तगाली गिनी पहुँचे। लेकिन स्थानीय जनता से आक्रमणकारियों को मिलनेवाली मदद को लेकर सीआईए और उनके पुर्तगाली यार धोखा खा गए, ठीक उसी तरह जैसा कि क्यूबा १९६१ में हुआ था। हालाँकि गिनी की राजधानी के रेडियो स्टेशन और चंद रकारी दफ्तरों पर कुछ घंटों के लिए आक्रमणकारियों का कब्जा रहा, पर

उन्हें भारी हताहतों के साथ पीछे लौटना पड़ा। इस तरह आक्रमण का अंत भयानक नाकामयाबी में हुआ।'

क्रांतिकारी सरकार का तख्ता पलटने के लिए १९६१ में क्यूबा पर चढ़ाई सी आई ए षड्यंत्रों में सबसे शैतान, पर असफल, कोशिश थीं। लोग उसे बे ऑफ पिग्स की मिट्टी पलीद कहकर पुकारने लगे हैं। क्यूबा के शरणार्थियों के नाम पर सी आई ए ने नवजात गणतंत्र के ऊपर हमला किया, जिसमें भाग लेने वाली फौज गुप्त रूप से अमेरिका में तालीम पाती रही थी। सी आई ए ने द्वीप पर न केवल सशस्त्र दस्तों को उतारा, वरन् उन्हें हवाई छतरी भी मुहैया करता रहा। लेकिन फिडेल कास्त्रो के नेतृत्व में क्यूबाई जनता की एकता और संकल्प ने अमरीकी साम्राज्यवादियों की एक भी चाल चलने नहीं दी। लॉकहीड यू-२ वायुयानों का उपयोग करके सोवियत रूस पर हवाई जासूसी, सी आई ए की दूसरी असफल योजना थी (उस वक्त उपग्रह जासूसी का विकास नहीं हो पाया था)। १ मई, १९६० को रूसी प्रक्षेपकों ने यू-२ वायुयान मार गिराया और उसका चालक फ्रांसिस गैरी पावर्स जिन्दा पकड़ लिया गया। इसके साथ ही उसी महीने होने वाला पेरिस शिखर सम्मेलन खटाई में पड़ गया। अमरीकी राष्ट्रपतियों ने खुले तौर पर इन दोनों घटनाओं को सी आई ए के कृत्य के रूप में स्वीकार किया है, उसी तरह जैसे सी आई ए के निदेशक, राज्य सचिव एवं अमरीकी राष्ट्रपति ने चिले में अमरीकी अपराध को स्वीकारा है।

लेकिन ढेरों ऐसी घटनाएँ हैं जिनकी जिम्मेदारी नकारी जा रही है, उनमें से कुछेक घटनाओं की चर्चा ऊपर हुई है। प्रमुख राजनेताओं को लेकर ऐसी दो मिसालें हैं जब उन्हें घूस देने की कोशिश की गई थी। उन्हें घूस से खरीदने की कोशिशों के बाद सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली कुआं यू ने खुले तौर पर सी आई ए की भर्त्सना की। घूस की थैली में ३३ लाख डालर की मोटी रकम थी। बदले में सी आई ए की माँग थी कि ली उसके दो एजेन्टों के कारनामों को दबा दें और उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करें। इन एजेन्टों ने एक ऐसे आदमी को बेहद परेशान किया था जिसने उनके साथ कभी विश्वासघात किया था। ली ने कहा कि उन्होंने सी आई ए की पूरी जमात को देश से खदेड़ बाहर किया था। अपनी पुस्तक "द गेम्स आफ नेशन्स" में सी आई ए के भूतपूर्व एजेन्ट, माइल्स कोपलैंड ने एक और घटना की चर्चा की है। उसने कहा कि सी आई ए की तरफ से राष्ट्रपति नासेर को घूस देने के लिए उसे मुकर्रर किया गया था। इस बार भी घूस की रकम ३३ लाख

डालर थी। कोपलैंड का कहना है कि पैसे चुकता कर दिए जाने पर पाया यह गया कि रकम में १० डालर की कमी है। सी आई ए की इस शैतान हरकत पर नासेर चकित और खिन्न तो थे ही, उन्होंने पैसे को लेकर—"सी आई ए की बेहूदगियों का स्मारक" के रूप में कैरो टावर का निर्माण करवाया। यह कोपलैंड का ही कहना है।

दुनिया भर मे याराना लोगों को गद्दी पर बिठाने की जल्दबाजी मे सी आई ए का एक और मनपसन्द तरीका रहा है। वह है चुनावों मे घोटाला-बाजी। अप्रैल १९६६ मे न्यूयॉर्क टाइम्स ने किस्तों की एक लेख-माला मे कहा: "राष्ट्रपति आइजनहावर और राज्य सचिव जॉन फास्टर डलेस की इच्छानुसार लाओस मे अमेरिका की पिट्ठू सरकार स्थापित करने के उद्देश्य से सी आई ए ने दक्ष जनरल फौमी नोसावान को चुना। 'सैनिक सलाहकारो' के वेष मे काम करते हुए सी आई ए एजेन्टो ने वोट के बक्सो मे अपनी पर्चियाँ ठूँस दी। दूसरी ओर उन्होंने स्थानीय दगे भी छिडवा दिए। मई १९६६ मे सी आई ए एजेन्टो ने डोमिनिकन रिपब्लिक मे अमेरिका समर्थक राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बालागुएर को बहुमत दिलाने मे सफलता पायी। कायदे से चुनी गई सरकार को अमरीकी सैनिक हस्तक्षेप से गिराना जब वहाँ संभव नही हुआ तो कुछ महीने बाद यह नुस्खा अपनाया गया। चिले की कारंवाई का यह उल्टा तरीका था।

दक्षिण वीयतनाम मे न्गो दिंह दियाम को गद्दी पर बिठाने के लिए सी आई ए ने देश मे जनमत सग्रह करवाने की जाल रची, लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादियों को जब जरूरत पडी तो उनकी बेझिझक बर्बर हत्या करवा दी। बाद मे चलकर, सी आई ए ने उस देश मे थू की कठपुतली सरकार को बिठाने के लिए फिर से चुनाव करवाया। सी आई ए की ज्ञात घोटालेबाजियों का एक उदाहरण फिलीपीन्स है। १९५३ मे रैमोन मैगासेसे को राष्ट्रपति चुने जाने के लिए उसने चुनाव मे घोटालाबाजी करवाई। १९६२ मे सी आई ए ने प्रोग्रेसिव पीपुल्स पार्टी और उसके प्रधानमत्री, 'मार्क्सवादी' छेदी जगन को सत्ता से हटाने के लिए गियाना के चुनाव मे कई जालसाजियो का इस्तेमाल किया।

दुनिया भर मे अपने इन्ही आतंको और लूटों के चलते सी आई ए की शक्ल दूसरे देशों की जासूस सस्थाओं से बिलकुल भिन्न है। जहाँ कहीं अमरीकी एकाधिकारो के स्वार्थ हैं, वहाँ सी आई ए भी उपस्थित है। जैसे ही संकेत मिलता है कि उन स्वार्थों पर धक्का पहुँचने वाला है और साम्राज्यवाद-

विरोधी भावनाएँ उस देश में जोर पकड़ रही हैं, वैसे ही सी आई ए वहाँ अपना हथियार मजबूत करने लगता है, अपनी गतिविधि तेज कर देता है। एक वक्त आता है जब वाशिंगटन फरमान जारी करता है, "फलाँ का सफाया करो।" बस, प्रति-क्रांति का माहौल तैयार होने लगता है। राजनैतिक हत्या, गृह-युद्ध, चुनाव में जालसाजी, खूनी तख्तापलट या रक्तहीन विद्रोह—कोई भी तरीका अपनाया जा सकता है। बस, लक्ष्य एक रहता है : हामी भरने से इंकार करने वाली सरकारों की छुट्टी; साम्यवादी प्रभाव के विस्तार पर रोक। यह खास तौर से गौर करने लायक बात है कि यों ये सारी हरकतें की जाती हैं लोकतंत्र और बड़े-बड़े नारों के नाम पर, लेकिन अन्ततः सी आई ए की शिकार बनती हैं लोकतांत्रिक सरकारें ही और उनकी जगह लेती हैं सैनिक गिरोहों की सरकारें।

सचाई जानने की कोशिश में

अमरीकी साम्राज्यवाद की जरूरतों के मुताबिक दुनिया भर में हत्या करवाने, युद्ध छिड़वाने, सरकार पलटने और लोगों को विकलांग करने का काम सी आई ए अपने किस अधिकार के तहत करता है? क्या वजह है कि सी आई ए की गतिविधियाँ जासूसी के प्रचलित तरीकों से बहुत आगे जाकर अन्य देशों के आन्तरिक मामलों में दखलन्दाजी करती हैं?

कुछ लोगों ने यह दिखाने की कोशिश की है कि अमरीकी शासन की जिम्मेदार संस्थाओं और अधिकारियों के अनजाने ही सी आई ए इन गतिविधियों में भाग ले रहा था। उनका कहना है कि इस तरह की चोरी-छिपी हरकतें आमतौर पर इसके काम के दायरे में नहीं आती। यह बिलकुल झूठ है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने भूतपूर्व सी आई ए प्रधान, एलेन डलेस और भूतपूर्व राज्य सचिव, डीन रस्क को जोर देकर यह कहते हुए उद्धृत किया है कि "हमारे शासन के उच्च राजनैतिक स्तर से मिली उचित सहमति के बिना सी आई ए ने 'राजनैतिक महकमों' के किसी काम में अपना हाथ नहीं डाला है।" यू-२ असफलता को लेकर आइजनहावर तथा वे ऑफ पिग्स पछाड़ को लेकर कैनेडी की मसूतवयानी जगजाहिर है। सफाई देते हुए इन नेताओं ने स्वीकार किया था कि अमरीकी राष्ट्रपति के दफ्तर से इन योजनाओं की हरी झंडी मिली थी।

अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा विधेयक (१९४७), जिसने खुद सी आई ए को जन्म दिया, में ही ऐसी गतिविधियों की गुंजाइश है। उसने एजेन्सी के लिए निम्नलिखित कामों की सूची निर्धारित की थी :

'(१) राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित सरकारी महकमों और सूत्रों की जासूसी गतिविधियों पर राष्ट्रीय सुरक्षा समिति को सलाह देना;

(२) ऐसी जासूसी गतिविधियों के तालमेल के प्रश्न पर राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के आगे अपना सुझाव पेश करना;

(३) राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित गुप्त सूचनाओं को सूत्रबद्ध एवं विश्ले-

षित कर सरकार के विभिन्न महकमों तक जरूरत के मुताविक उन सूचनाओं को पहुँचाना;

(४) खुफियागीरी के मौजूदा महकमों के लिए तत्सम्वन्धी ऐसी अतिरिक्त सेवा प्रदान करना जो, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की नजर में, पूर्ण कुशलता से सिर्फ केन्द्रीय स्तर पर ही प्रदान की जा सकती हैं;

(५) समय-समय पर राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के आदेशानुसार गुप्त सूचनाओं से सम्वन्धित उन जिम्मेदारियों को सँभालना जिनका महत्त्व राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हो।'

ध्यान देने की जरूरत है कि पाँचवाँ अनुच्छेद इच्छानुसार विस्तृत और लचीला वनाया जा सकता है। असल में यही वह अनुच्छेद है जिसके तहत सी आई ए दुनिया भर के देशों में दखलंदाजी करता फिरता है, अधिनायकों को गद्दी पर विठाता या गद्दी से उतारता चलता है, लोकतान्त्रिक सरकारों को डगमगाता रहता है, चुनावों में घोटालेवाजी फैलाता है और हर तरह की मुसीवतें खड़ी करता रहता है। समाजवादी देशों का अस्तित्व, तीसरी दुनिया की साम्राज्यवाद विरोधी सरकारें, अमेरिका की नवऔपनिवेशिक स्वार्थों पर चोट करने वाली सरकारें—अमरीकी साम्राज्यवाद की राष्ट्रीय सुरक्षा को इन सवों से खतरा है! इसलिए, इन्हें विघटित करो, इनका तख्ता पलटो, हंगामे खड़े करो और अमरीकी साम्राज्यवाद की गुलामी से इन्कार करने वाले देशों में गृह-युद्ध फैलाओ। संक्षेप में, सी आई ए और कुछ नहीं, सिर्फ अमरीकी साम्राज्यवाद की कमर में गुप्त **तमंचा** है।

सी आई ए की शुरुआत राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के द्वारा गठित वारटाइम ऑफिस ऑफ स्ट्रेटेज़ी में खोजी जा सकती है। ओ एस एस का काम खुफियागीरी और योजनाओं के सफल संचालन दोनों से था। हालाँकि शुरू में कई तरह की मुसीवतें आयीं, लेकिन युद्ध समाप्ति के समय तक यह एक सुव्यवस्थित सरकारी महकमे के रूप में फैल चुका था। इसके पहले प्रमुख थे जनरल विलियम दोनोवान, जो अपनी वर्वरता और शक्ति को लेकर 'वाइल्ड विल' नाम से पुकारे जाते थे। नवजात सोवियत रूस के खिलाफ अमरीकी-व्रितानी दाँवपेंचों और हस्तक्षेपों के दौरान दोनोवान ने अपनी ख्याति अर्जित की थी। उस वक्त वे व्हाइट गार्ड कप्तान कोलचाक के मातहत लड़े थे।

२० सितम्वर, १९४५ के दिन राष्ट्रपति ट्रूमन ने ओ एस एस को विघटित कर दिया। उन्होंने ऐसा अंशतः ओ एस एस के प्रति अपनी दुश्मनी (उप-राष्ट्रपति के रूप में उन्हें ओ एस एस की निहायत पोशीदा कार्रवाइयों से

मनजान रखा जाता था) के चलते और अंशत: आन्तरिक सुफिया महकमा, एफ बी आई तथा सैनिक जासूसी जी-२ के दबावों के चलते किया। लेकिन जनवरी १९४६ में ट्रूमन ने सेन्ट्रल इंटेलिजेन्स ग्रुप की स्थापना करते हुए घोषणा की : "जासूसी की उपलब्ध सूचनाओं और चालू योजनाओं से राष्ट्रपति को वाकिफ रखने के लिए अन्ततः यह व्यावहारिक एवं सुसम्बद्ध तरीका खोज लिया गया है।"

सी आई जी के प्रमुख थे मोन्फिल में पिग्ली विग्ली दूकानों के मालिक और ताश (पोकर) में ट्रूमन के पुराने शागिर्द, रीयर एडमिरल सिडनी सोर्स। कई व्यापारियों की तरह युद्ध के दौरान प्रशासनिक कामों के लिए उनकी भर्ती हुई थी और उनका नौसैनिक पद बिलकुल अवैतनिक था। पाँच महीनों के बाद ट्रूमन ने उनकी जगह पर लेफ्टिनेन्ट जनरल हवाइत व्हान्डेनबर्ग को बिठाया जिन्होंने उत्तरी अफ्रीका और इंगलैंड में ६वीं अमरीकी हवाई टुकड़ी की कप्तानी की थी। १९४७ में उनकी भी छुट्टी हो गयी, और उनकी जगह पर रीयर एडमिरल रोस्को एस. हिलेनकोइत्तर को लाया गया। इन्हीं की सेवा अवधि में, जब अमरीकी कांग्रेस ने राष्ट्रीय सुरक्षा विधेयक पारित किया, तो संस्था का नाम बदलकर सेन्ट्रल इण्टेलिजेन्स एजेन्सी रखा गया।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवाद की फरमाइशों को हिलेनकोइत्तर भी सही ढंग से पूरी नहीं कर सके। अन्तत: ट्रूमन ने एलेन डलेस को चुना, जो उस वक्त वाल स्ट्रीट में वकालत कर रहे थे। डलेस दोनों विश्वयुद्धों के दौरान जासूसी कार्रवाइयों में शरीक रहे थे और १९४० से १९४५ तक बर्न स्थित ओ एस एस के यूरोपीय दफ्तर में प्रमुख रह चुके थे। उन्होंने सी आई ए को पुनः संगठित करने और उसे ढाल-तलवार से लैस कातिल दस्ता बनाने की लम्बी-चौड़ी योजना तैयार की। समाजवादी देशों तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों के साथ-साथ वे नव स्वतन्त्र देश भी इसके शिकार बनने वाले थे जो स्वतन्त्र आर्थिक नीति और राष्ट्रीय उन्नति की दिशा में अपना कदम बढ़ाना चाहते थे। 'साम्यवाद को जब्त करने' के अपने सपने को साकार करने के लिए एलेन सी आई ए प्रधान बनने की महत्त्वाकांक्षा पाल रहे थे। लेकिन ट्रूमन ने उनमें कन्नी काटकर मास्को स्थित तत्कालीन अमरीकी राजदूत, जनरल वाल्टर बेडेल स्मिथ को प्रधान पद पर आसीन कर दिया। स्मिथ ने डलेस को उप-निदेशक की कुर्सी पेश की, डलेस ने उसे स्वीकार कर लिया।

एक प्रशंसक के अनुसार : 'साम्यवाद से लोहा लेने और शीत युद्ध जीतने के लिए डलेस ने अचूक नुस्खों की एक खौफनाक पेटी तैयार की।' एक आलो-

चक के अनुसार, 'उसने सी आई ए के माध्यम से उन खुराफातों को जन्म दिया जो धीरे-धीरे सारी दुनिया में छा गया।' देखने का जो भी नजरिया हो, आज सी आई ए का जो दानवाकार स्वरूप दिखाई पड़ता है, उसे पाल-पोसकर बड़ा करने का विवादास्पद श्रेय एलेन डलेस को ही जाना चाहिए। सदरमुकाम में उसने संस्था के अलग-अलग महकमे और विशेष दस्ते तैयार किए। दुनिया भर में उसने 'पड़ावों' की कड़ी तैयार की और नुमाइंदों की सख्त तालीम के तरीके गढ़े। राष्ट्रपति आइजनहावर के अधीन जब उसका कुख्यात भाई, जॉन फॉस्टर डलेस राज्य सचिव बना तो एलेन का सी आई ए निदेशक की कुर्सी हथियाने का ख्वाब भी पूरा हुआ। बे ऑफ पिग्स पछाड़ के बाद एलेन अधिक दिनों तक निदेशक नहीं रह सका; उसने इस्तीफा दे दिया। उसके साथ ही जॉन मैक्कोन और एडमिरल विलियम एफ रैबोर्न की भी छुट्टी हो गई। इन लोगों की कार्य अवधि छोटी रही। रैबोर्न के पद पर आये रिचार्ड मैक गरहि हेल्म्स, जो उस वक्त उप-निदेशक थे। ईरान में अमरीकी राजदूत का पद सम्हालने के बाद हेल्म्स की कुर्सी पर जेम्स आर सेलिजर बैठे जो उस वक्त अमरीकी आणविक शक्ति आयोग के अध्यक्ष थे। लेकिन उनके दिन भी गिने-चुने ही थे। जल्द ही उनके पद पर तत्कालीन उप-निदेशक विलियम एगान कोलबी को लाया गया और उनकी पदोन्नति निदेशक के रूप में हुई। कोलबी अब तक उस कुर्सी पर बने हुए हैं।

कर रहे एजेन्ट, दूतावास, भाड़े के अन्य सम्पर्क सूत्र—सभी इस विभाग के पास सूचना भेजते रहते हैं। शोध विभाग का काम विभिन्न सूचनाओं को सिलसिलेवार सजाकर उनका विश्लेषण करना होता है। इसके साथ ही विदेशी प्रकाशनों से उपलब्ध सामग्रियों की छानबीन भी इसके मातहत है। राजनैतिक और आर्थिक घटनाओं, दूसरे देशों में विज्ञान, तकनीक, सैनिक हथियार, वायुमंडल और पारमाणविक अनुसंधानों पर मिली गुप्त सूचनाओं पर यह विभाग विशेषज्ञ का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। सहायता विभाग एजेन्सी का प्रशासकीय अंग है। इसके अधीन सैनिक साजो-सामान, उसकी गतिविधि, सुरक्षा और सूचना प्रसारण भी है। यह एजेन्सी के लिए कोड (संकेत भाषा) तैयार करता है—अमरीकी राष्ट्रपति तक पहुँचने वाली रिपोर्टों से लेकर सी आई ए द्वारा भेजी जाने वाली सारी सूचनाएँ रहस्यमय संकेत भाषा में प्रसारित होती हैं, फिर उसे सामान्य भाषा में उतारा जाता है और एजेन्टों तथा संदेशवाहकों के नाम हटा दिए जाते हैं। यह विभाग गुप्त कार्रवाइयों के लिए दूसरे देशों में भेजे जाने वाले एजेन्टों को मामूली जगहों और चीजों में छिपाये जाने वाले ट्रांसमीटर, अदृश्य स्याही, पिस्तौल और छुरे, जहर की शीशियाँ, छिपकर सुनने वाले यन्त्र वगैरह मुहैया करता है। संक्षेप में, एक कातिल संस्था की सारी जरूरतें पूरी करता है।

सी आई ए का सदरमुकाम वर्जिनिया के लैंगले नामक जगह पर स्थित है। १२५ एकड़ जमीन में फैली इसकी इमारत में सात मंजिलें हैं जो जमीन के ऊपर हैं, गहरे नीचे आणविक आक्रमणों से सुरक्षित कई तहखाने हैं। आसपास दरख्तों का पूरा जंगल ही है और पूरी इमारत उनसे करीब-करीब ढँकी हुई है। सी आई ए अहाते के चारों ओर ७५० एकड़ सरकारी सुरक्षित जमीन है। मुख्य सड़क से सी आई ए दफ्तर की ओर मुड़ने वाली सड़क के पास लटक रही तख्ती पर—'फेयरबैंक हाइवे रिसर्च स्टेशन' लिखा हुआ है; खुद सदरमुकाम पर किसी तरह की नाम तख्ती नहीं है। दरबान केबिन के आगे एक तख्ती है: 'अमरीकी सरकारी सम्पत्ति। केवल सरकारी कामों के लिए। सीमा उल्लंघन वर्जित। कैमरा वर्जित।' जिनके पास अन्दर जाने के खिताब हैं उन्हें भी कई किस्म की रोकों से पाला पड़ता है। हर आगन्तुक के साथ एक पहरेदार चलता है जो उसे इच्छित सी आई ए अधिकारी तक पहुँचाता है और वहाँ से उसे वापिस लाता है। जो इमारत के अन्दर काम करते हैं वे भी सिर्फ अपनी निर्धारित जगह तक ही जा सकते हैं। पूरी इमारत कई खानों में बँटी हुई है, हर खाने में घुसने की अलग पर्चियाँ हैं, अलग तौर-तरीके हैं।

प्रवेश-कमरे के ठीक पास बाइबिल की एक उक्ति सुनहले शब्दों में अंकित है : 'और तुम सचाई को जानोगे, और सचाई तुम्हें मुक्त करेगी—जॉन ८, ३२'। अगर सी आई ए के बाहरी करतूतों को देखें तो पायेंगे कि इस शास्त्रोक्ति का पालन इसकी अवहेलना में ही होता है। न तो सी आई ए का काम सत्य छानबीन है—बे ऑफ पिग्स, कोरियाई दुस्साहसिकता, दुनिया भर में इसकी बेसुमार असफलताएँ उदाहरण हैं—और न इसकी कोशिश लोगों को मुक्त करना है। इसका काम सिर्फ साम्यवाद से लड़ना और दुनिया भर में अमरीकी साम्राज्यवाद के पताके फहराते चलना है। सी आई ए के अन्दर भी सचाई तक सबों की पहुँच नहीं है, इसे समझने के लिए सदरमुकाम के अपने ही नुमाइन्दों पर लगी पाबन्दी यथेष्ट प्रमाण है। बे ऑफ पिग्स के बाद सी आई ए के 'विश्लेषकों' ने 'योजना के मठाधीशों' पर आरोप लगाया कि क्यूबा के आक्रमण को लेकर उन्हें अन्धकार में रखा गया था। उनका कहना था कि उनसे पूछे जाने पर वे आक्रमण के खिलाफ अपनी राय देते।

बहरहाल, सी आई ए दिन-रात 'सत्य' की खोज में जरूर रहता है। इसका मूलमन्त्र है हरेक के बारे में हरेक बात की जानकारी। इसके सूचना और दस्तावेज केन्द्र में दुनिया के हर वैसे स्त्री-पुरुष से सम्बन्धित आँकड़े और सूचनाएँ हैं जो सी आई ए के काम आते हैं या भविष्य में आ सकते हैं। हर क्षेत्र के लोग उसमें अंकित हैं—विभिन्न वादों और रुझानों के राजनेता, वैज्ञानिक, अध्यापक, छात्रनेता, उद्योगपति, ट्रेन यूनियन के अगुए, अर्थशास्त्री, लेखक, पत्रकार। एक जानकार सूत्र के अनुसार इस केन्द्र के पास इस वक्त ४ करोड़ फोटो और उतने ही छिद्रित कार्ड हैं जिनसे उन लोगों की जिन्दगी की विस्तृत जानकारी हासिल की जा सकती है। कई ऐसे पुलिंदे हैं जिनमें उँगलियों के निशान और यहाँ तक कि दाँतों की गिनती भी है। दाँतों की गिनती जिन्दा या मुर्दा किसी आदमी की शिनाख्त और पहचान का बेहद सटीक तरीका है जिसकी पहचान के दूसरे चिह्न प्लास्टिक सर्जरी, बुढ़ापा, जल जाने या सड़-गल जाने से मिट गए हों। इन फेहरिस्तों और सूचनाओं से अमरीकी साम्राज्य-वाद के अपने शागिर्द भी बरी नहीं हैं।

सी आई ए के विदेशी अड्डों और एजेन्टों, अमरीकी दूतावासों, सरकारी महकमों, विश्वविद्यालयों, वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों, व्यापार क्षेत्रों और विदेश यात्रा पर गए लोगों से लेकर सदरमुकाम पहुँचने वाला सूचनाओं का सैलाब छांटा जाता है और छोटी से छोटी उपयोगी सूचना—जो प्रत्यक्षतः निहायत अनुपयोगी लगती है—नत्थी करके करीने से सजा दी जाती है। अपने ढंग से

प्रसारण प्रभाग इस काम में मदद पहुँचाता रहता है। विशेषज्ञ भाषाविदों की एक पूरी फौज ही है जो १५० विदेशी भाषाओं को प्रसारित, संकलित करती [illegible]
[illegible]
रहती है। इन सारी सामग्रियों से काट-छाँट कर भविष्य में काम आने वाली सूचनाओं की एक दैनिक बुलेटिन तत्काल उपयोग के लिए तैयार की जाती है। बाद में इस बुलेटिन का विस्तृत विवरण कम्प्यूटरों में झोंका जाता है।

कोई नहीं जानता कि सी आई ए ने एलेक्ट्रोनिक मशीनों और कम्प्यूटरों पर कितने पैसे खर्च कर डाले हैं। लैंगले के नवीनतम और विशालतम कम्प्यूटरों के संकेत नाम हैं वालनट, इन्टेलोफैक्स और मिनिकार्ड। वालनट सी आई ए परिवार की सबसे चहेती गुड़िया है। इसकी याददाश्त बैंक ५ करोड़ मदों की सूचनाएँ इकट्ठी कर सकती है और उनमें से किसी मद की सूचना ५ सेकेन्ड से कम में छापकर पेश कर दे सकती है। आई बी एम ने खासकर सी आई ए के लिए इस कम्प्यूटर का निर्माण करवाया। कोडक और पोलरॉइड ने भी आई ए के लिए ऐसे अनोखे यंत्र तैयार किए हैं जिनके द्वारा किसी विषय की तत्काल जानकारी संभव हो सकती है।

जाहिर है, इन सबों में डालर की अच्छी-खासी रकम खर्च की गई है। लैंगले सदरमुकाम के वास्ते एलेन डलेस ने शुरू में ५ करोड़ डालर की माँग की थी। इतने पैसे इमारत के बाहरी आडम्बर में ही चुक गए। इमारत के अन्दर ठूँसे हुए यंत्र और साजो-सामान तथा सी आई ए के विशाल पुस्तकालय पर लाखों डालर और लगे हैं। खर्चे का सही खाता उपलब्ध नहीं है क्योंकि सरकारी रोकड़ में सी आई ए की माँगों को पूरी तरह गुप्त रखा जाता है।

सी आई ए की बहुमुखी गतिविधियों का लेखा-जोखा करते हुए न्यूयॉर्क टाइम्स ने कहा: 'उन सालों के दरम्यान जब कांगो से निबटने की कोशिश चल रही थी (देशभक्त दस्तों के खिलाफ हवाई आक्रमण), सी आई ए तिब्बतियों को साम्यवादी चीन के अन्दर-बाहर करने में भी व्यस्त था, कर्नल ओलेग पेंकोवस्की के माध्यम से रूस की सैनिक गुप्त सूचनाओं को बटोरने में लगा हुआ था, क्यूबा में सोवियत प्रक्षेपास्त्रों के जमाव और वापसी पर जासूसी कर रहा था, दुनिया भर के प्रेस और रेडियो प्रसारणों का विश्लेषण कर रहा था, दुनिया के प्रमुख राजनेताओं की जिन्दगी के बचे हुए सालों की भविष्यवाणी कर रहा था, दुनिया भर में सैनिक सामानों के आवागमन पर सख्त निगरानी रख रहा था, सैनिक सामानों का उत्पादन करने वाले उद्योगों पर नजर रख रहा था

और राष्ट्रपति समेत सरकार के सभी प्रमुख महकमों तक सूचनाओं, अफवाहों लफ्फाजियों और विश्लेषणों का अंबार लगा रहा था।'

न्यूयॉर्क टाइम्स ने सारी गतिविधियों का ब्योरा पेश नहीं किया था। सी आई ए के पास अपनी अलग विमान कम्पनी, एअर अमेरिका है। यह कई रेडियो स्टेशनों का संचालन करता है। सोवियत यूनियन के लिए रेडियो लिबर्टी, ब्रोडकास्टिंग है, पूर्व यूरोप के लिए रेडियो फ्री यूरोप है, लातिन अमेरिका के लिए डब्ल्यू आर यू एल है और रेडियो स्वान, जिसकी वे ऑफ पिग्स में भूमिका रही थी। गिनाने के लिए इतने ही नाम काफी हैं। सी आई ए कई व्यापार प्रतिष्ठानों का संचालन भी करता है जो इसके लिए नकाब का काम करते हैं। उदाहरण के लिए, फारमोसा में वेस्टर्न एण्टरप्राइज इनकारपोरेटेड का नाम लिया जा सकता है। कई व्यापार कम्पनियाँ सही मामले में खरीद-बिक्री भी करती हैं, जैसे इण्टरनेशनल आर्मामिन्टस कारपोरेशन। लन्दन, जेनीवा, मान्टो कार्लो, हेलसिन्की, ब्यूनो आयर्स और प्रिटोरिया में इस कॉरपोरेशन के दफ्तर हैं। यही वह कम्पनी है जो सी आई ए के लिए शस्त्रास्त्रों की आपूर्ति करती है। इसका केन्द्रीय कारखाना सी आई ए सदरमुकाम से थोड़ा हटकर एलेक्जेण्ड्रिया में स्थित है। यहाँ का कारोबार सैमुएल कमिंग्स के जिम्मे है जो १९५० के शुरू के सालों में कोरिया में सी आई ए के कर्मचारी थे।

अमरीकी पत्रिका हार्पर की एक रिपोर्ट के अनुसार: 'सी आई ए २३ सालों तक विदेशी पुलिस के लिए एक स्कूल चलाता रहा था जिसमें ८६ देशों के लोग भर्ती थे। एक निजी संस्थान की नामपट्टी के पीछे स्कूल का संचालन होता था। यह स्कूल अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की एक शाखा था, जिसके कर्ताधर्ता थे सी आई ए के सुरक्षा प्रमुख, जेम्स एंगलटन। स्कूल के अधिकतर छात्र सी आई ए एजेन्ट थे, जो मुख्य रूप से लातिन अमरीकी और एशिय[illegible] देशों में विघटनकारी कार्रवाइयों में [illegible] शरीक थे।'

न्यूयॉर्क टाइम्स की एक गण[illegible] [illegible]न सारे कामों के
ती आई ए ने करीब १५,००० [illegible] रखा है और का[illegible]
१७५ करोड़ रुपये खर्च करता [illegible]
टोरने और जासूसी पर अमरी[illegible] [illegible]त सूचना[illegible]
विड वाइज और थौमस रौस ने [illegible] [illegible] करती
द्धृत करते हुए कहा है कि सेना [illegible] [illegible]ककोन
तचीत में मैककोन ने बताया था। [illegible]
. डालर आता है और काम [illegible]

उन्होंने आगे कहा : "लेकिन ऐसा लगता है कि हिसाब लगाते वक्त मैककोन सी आई ए और अन्य जासूसी महकमों के प्रचलित और पारम्परिक तरीकों पर हुए खर्च तक ही अपने को सीमित रख रहे थे। हर साल एलेक्ट्रोनिक जासूसी पर २ बिलियन डालर ऊपर से खर्च किया जाता है। अगर दोनों तरह की जासूसी पर हुए खर्च को जोड़ा जाय तो पूरी रकम ४ बिलियन डालर बैठती है और काम पर लगे लोगों की संख्या करीब २००,००० है।' रुककर जरा सोचिए, ४ बिलियन डालर करीब-करीब भारत सरकार का सालाना बजट है।

विदेश में सी आई ए एजेन्टों की संख्या न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, 'संभवतः २,२०० के आसपास है।' लेकिन आर्थर एम स्कलेसिंगर ने अपनी पुस्तक 'अ थाउजन्ड डेज' (हजार दिन, जो राष्ट्रपति कैनेडी के साथ बीते अपने दिनों की कथा है) में कहा है कि "विदेश में सरकारी मुहर के नीचे काम करने वालों की संख्या करीब-करीब राज्य विभाग के कर्मचारियों के ही बराबर है।" इस तरह से उनकी संख्या ६,६०० होनी चाहिए, और इसमें गैर-सरकारी, भाड़े के लोगों की गिनती शामिल नहीं है। वाइज और रोज का अंदाज है कि सी आई ए नुमाइंदों में से ७० प्रतिशत लोग अमेरिका में और बाकी दुनिया भर में फैले हुए हैं। अगर हम इस अनुपात को मैककोन के द्वारा बताये गए खुफिया-गीरों में लगे लोगों की संख्या से मिलान करें तो पायेंगे कि करीब ३०,००० लोग विदेशों में अमरीकी जासूसी कर रहे हैं। इनमें सी आई ए के कितने लोग हैं, इसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है।

सी आई ए के नुमाइंदे 'गोरे' और 'काले' में विभाजित हैं। यह विभाजन चमड़ी के रंग पर आधारित नहीं है, जैसा कि लेबल से भ्रम हो सकता है। 'गोरे' वे हैं जिन्हें बाहर काम करते हुए राजनयिक ओहदा और सुरक्षा भी प्राप्त है और वे भी जो ऊपरी तौर से पूरी तरह वैध कामों में लगे हुए हैं। इस सूची में आने वाले लोग अधिकतर वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दलों के सदस्य, यात्रा पर गए हुए शिक्षक, पत्रकार और पर्यटक होते हैं। आम तौर पर वे अपने सही नाम से ही विचरण करते हैं लेकिन ऐसा भी पाया गया है कि राजनयकों ने भी समय-समय पर बिल्कुल नया नाम चिपका लिया है। यह तब होता है जब पकड़े जाने पर उन्हें किसी देश से बाहर निकाल दिया जाता है, और तब दूसरे देश में उनकी बहाली बिल्कुल नये नाम, नये परिचय से की जाती है। 'गोरे' की सूची में सदरमुकाम लैंगले के वे कर्मचारी भी आते हैं जो किरानी या दूसरे छोटे-मोटे काम करते हैं। 'काले' वे हैं जो

सी आई ए के लिए सही मामले में गंदा काम करते हैं। उनकी वहाली सी आई ए के जासूसी विद्यालयों में तालीम पाने वाले नवसिखुओं के रूप में होती है। जब किसी 'योजना' को लेकर वे विदेश पहुँचते हैं तो उनके ऊपर भारी नकाब चढ़ा होता है—उनके सही परिचय को छिपाने के लिए भरपूर सावधानी वरती जाती है। वे अधिकतर व्यापारियों, वैज्ञानिकों, पर्यटकों या पत्रकारों के रूप में उतरते हैं, लेकिन कभी-कभी राजनयकों ने भी 'काले' की भूमिका निभाई है।

समूचे अमेरिका के विश्वविद्यालयों से एजेन्टों की भर्ती की जाती है। वीयतनाम युद्ध जब पूरी सरगर्मी में था तो सी आई ए भर्ती के खिलाफ कई विश्वविद्यालयों में विरोध प्रदर्शन भी हुए थे। लेकिन यह काम अभी भी कमोवेश खुलेआम होता है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का पहला सर्वेक्षण ओ एस एस और सी आई ए के भूतपूर्व अधिकारियों के द्वारा सम्पन्न होता है। सी आई ए के भर्ती होने के पूर्व बेहद सख्त इम्तहानों से गुजरना पड़ता है और सूची में ऊपर के कुछ ही लोग चुने जाते हैं। चुनाव हो जाने पर वे अमेरिका के विभिन्न भागों में स्थित ६० जासूसी महाविद्यालयों में से किसी एक में कठोर प्रशिक्षण के लिए भेजे जाते हैं। प्रशिक्षण के बारे में सैचर्डे एवनिंग पोस्ट ने ६ नवम्बर, १९५४ को लिखा था, 'पाठ्यक्रम में ६० से भी ज्यादा भाषाएँ हैं, जिनमें अज़रवैजानी जैसी कहाँ-कहाँ की अनसुनी भाषा भी शामिल है। नये बछड़ों में से अधिकतर को जासूसी की मौलिक आवश्यकता के रूप में रूसी भाषा सीखनी होती है। केबिननुमा छोटे कमरों में घंटों बैठे हुए ये लड़के टेपरिकार्डों पर कान गड़ाए रहते हैं और प्रावदा तथा इजवेस्तिया जैसे प्रकाशनों को ६ से ८ सप्ताहों में बाकायदा पढ़ने लगते हैं। प्रशिक्षण की दूसरी कक्षाओं में द्रुत पठन और रिपोर्ट लेखन सिखाया जाता है।'

इस रिपोर्ट में दिनचर्या की और कई बातों का उल्लेख नहीं किया गया था जिनसे नये छात्रों को गुजरना लाजिमी होता है। सी आई कवायत के गन्दे पक्षों पर चुप्पी बरती गई है। इनमें न केवल सूचनाओं क बटोरने, बातों को चोरी-छिपे सुनने और उनका प्रसारण करने में एलेक्ट्रोनि यंत्रों का इस्तेमाल जैसे प्रचलित तौर-तरीके हैं बल्कि हत्या, विघटन और तोड़-फो का आयोजन, घूसखोरी के उम्दे तरीके, यहाँ तक कि महिला प्रशिक्षणार्थियो को लुभाने के अश्लील नुस्खे भी सिखाए जाते हैं। भेजे जाने वाले देशों मे अपनी जघन्य भूमिका सफलतापूर्वक निभाने के लिए जिन नुस्खों, तिकड़मों और हथकंडों की जरूरत पड़ सकती है—सब-कुछ सिखाया जाता है। इसमें

इन देशों के साहित्य, इतिहास और सस्कृति की अच्छी खासी पढाई भी शामिल है। सक्षेप में, अमरीकी साम्राज्यवाद के हितो को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए इन लड़कों को बेहद सूझ-बूझ, कठोर प्रशिक्षण और काफी विस्तार से तैयार किया जाता है।

पिछले सालों में, १९६७-६८ मे सी आई ए के करतूतों का भंडाफोड़ और अमेरिका में एजेन्सी के मनमानेपन पर रोक लगाने की मांगो के बाद, इसे प्रचारित करने की अच्छी खासी कोशिश हुई है। खुद एजेन्सी जमीन के नीचे बिल में घुसकर अदृश्य हो गया है और खामोशी मे अपना काम करता चल रहा है, जबकि इसके निदेशक को ज्यादा से ज्यादा उछाला जाने लगा है। हेल्म्स को लेकर जन-सम्पर्क और सूचनाओं की लहर फैला दी गई, हाल में कॉनब्री को भी लेकर कुछ वैसा ही किया जा रहा है।

२२, नवम्बर १९७१ की न्यूज़वीक पत्रिका ने तत्कालीन सी आई ए निदेशक हेल्म्स के बारे मे लिखा : व्यापारियों की तरह धारीदार कोट-पतलून पहने और जेब मे उन्ही की तरह रूमाल खोंसे हुए ५८ वर्षीय हेल्म्स अमरीकी योग्यतावाद के बेहद खूबसूरत नमूने दीखते है। उन्हें देखकर आसानी से वाल स्ट्रीट के किसी शहरी निगम का कानूनी सलाहकार मान लिया जा सकता है लेकिन असलियत यह है कि यह व्यक्ति दुनिया के सबसे लम्बे-चौड़े जासूसी जाल का सिरमौर है। दुनिया में जासूसी का कोई भी प्रधान इस तरह की खुली जिन्दगी बसर नही करता है। हेल्म्स, जो एक वक्त पत्रकार थे, के बारे में कहा जा सकता है कि वे एक पेशेवर जासूस है। एलेन डलेस के समय वने में ओ एस एस एजेन्ट के रूप मे काम शुरू करके, वे सी आई ए मे इसकी पैदाइश के समय मे बने हुए है। लेकिन १९६२ में आकर ही वे डीडी—योजना के रूप मे खुले मे उभरे, उसके पहले तक वे 'काले' में शुमार किए जाते थे। इन्होंने दो शादियां कीं, १९६७ मे दूसरी बार जब वे सी आई ए निदेशक बन चुके थे। वेतन के रूप में इन्हे सालाना ४२,५०० डालर मिलते हैं। स्वभाव से कम खर्चीले, चेवी चेज के एक फ्लैट मे २२० डालर प्रति माह देकर रहते हैं। समस्याओं को दफ्तर में छोड़कर घर मे अच्छी नीद सोने का तरीका इन्हे मालूम है। रात के भोजन के पूर्व वे स्कॉच का बस एक पेग लेते हैं; हर शुक्रवार लेकिन, वे ड्राइ मार्टिनी के साथ नीबू की कुछ बूंदें मिलाकर धुत्त हो जाते हैं। सप्ताह मे एक बार वे और उनकी पत्नी सिन्थिया फिल्म चले जाते है। हेल्म्स को जासूसी उपन्यास पढ़ने का चस्का है। उनका लड़का, जो न्यूयॉर्क में एटर्नी है, उनके लिए उपन्यास भेजता रहता है। दम्पती हर सप्ताहांत विद्स एड

की [illegible] है, [illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] है। [illegible] है, लेकिन [illegible]
[illegible] सी आई ए [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible] है। [illegible] है, [illegible]
वाशिंगटन के सामाजिक [illegible] है। सी आई ए [illegible]
[illegible]
[illegible] वाशिंगटन के
सामाजिक [illegible] के बाद [illegible]
का ही [illegible] आता है, [illegible] की तुलना
कुछ [illegible] लगती है और [illegible] इतना
ख्याल रखने वाले साथी नजर आते हैं।

सच, दुनिया के सबसे घृणित आदमी का क्या खूब चित्र खींचा है न्यूज़-वीक ने। सी आई ए के वर्तमान प्रमुख का व्यक्तित्व भी बहुत भिन्न नहीं है। कॉलबी के बारे में लिखते हुए ३० सितम्बर, १९७४ की टाइम पत्रिका ने कहा: 'पेशेवर फौजी कर्नल के पुत्र कॉलबी प्रिंसटन के स्नातक हैं। उन्होंने युद्ध के दौरान ओ एस एस के लिए काम किया था। कोरियाई युद्ध के समय तक वे न्यूयॉर्क में वकालत करते रहे थे, युद्ध छिड़ने पर वे सी आई ए में भर्ती हो गए। स्टाकहोम और रोम में काम कर चुकने के बाद १९५९ में उनका तबादला सी आई ए स्टेशन प्रमुख के रूप में सैगन में हुआ। तीन साल बाद वे वाशिंगटन में सी आई ए के सुदूर पूर्व प्रभाग के प्रमुख बन गये। १९६८ में वे सैगन लौटे, इस बार कुख्यात फीनीक्स योजना का अगुआ बनकर। कॉलबी के अपने ही विवरण के अनुसार इस योजना के अन्दर १९७१ तक २०,००० वीयत-कांगो की हत्या की जा चुकी थी। लेकिन उनका कहना है कि वे उन्हें मारने की बजाय पकड़ने पर ज्यादा जोर देते थे'—सर्वविदित है कि पकड़े गए राष्ट्रीय मुक्ति सेनानियों के साथ क्या बर्ताव हुआ था। उनका एक दूसरा दावा है कि उनके दस्ते ने सिर्फ १३ प्रतिशत लोगों की हत्या की, बाकी जिम्मेदारी लड़ने वाली फौज पर जाती है। शक्ल-सूरत से कॉलबी इन गंदी हरकतों के बिलकुल अयोग्य दीखते हैं। एक सी आई ए अधिकारी का कहना है, 'मैं उन्हें एक प्रबुद्ध ठंडे मिजाज का लड़ाकू कहना पसन्द करूँगा। लेकिन याद रखने की जरूरत है कि यह काम काफी ठंडे मिजाज की माँग करता भी है।'

१९७१ में कॉलबी लैंगले स्थिति सी आई ए अट्टालिका में लौट आए।

वे चिले की 'डिगामो योजना' में पहले डी डी-योजना, फिर निदेशक की हैसियत से व्यापक और घनिष्ठ रूप से सबधित थे। कॉलबी का निजी जीवन पेशे के मुखरेपन से बिल्कुल मेल खाता है। वे चार बच्चो के पिता हैं और मेरीलैंड के पर्यनगरी इलाके में बिना तामझाम के एक सामान्य से मकान मे रहते हैं। वे धूम्रपान नहीं करते, कभी-कभार जिन और टॉनिक या शराब का एकाध गिलास पी लेते हैं, और बिल्कुल भक्त कैथोलिक हैं। नाव खेना या साइकिल सवारी करना उनका मनपसन्द मनोरंजन है। निदेशक पद का भार सँभालने के बाद कॉलबी ने सी आई ए के तौर-तरीकों मे सुधार लाकर उसके कलंक को मिटाने और सम्मानित पद पर बिठाने की कोशिश की है। समर्थन प्राप्त करने के लिए अपने पूर्ववर्तियों से अधिक उन्होंने खुलेपन और अनौपचारिकता पर जोर दिया है। वे १८ कांग्रेसनल समितियो के आगे पेश हो चुके हैं (कितने झूठ ?) और १३२ सवाददाताओ से बातचीत कर चुके हैं। पिछले किसी भी सी आई ए निदेशक से अधिक वे लोकमचो से बोलते रहे हैं।

लेकिन इनमे से कोई भी बात सी आई ए के कलकमय इतिहास को धो नहीं सकती है। कॉलबी आज जिस सस्था के सिरमौर है वह दुनिया की सबसे घृणित, सर्वाधिक विनाशकारी, सर्वाधिक जघन्य सस्था है। इस सस्था का अस्तित्व सभी लोकतांत्रिक देशो और शातिप्रिय लोगों के लिए खतरा है। साम्यवाद के खिलाफ जेहाद छेड़ने की कोशिश में सी आई ए पतन की किस गहराई तक जा सकता है, इसकी झाँकी इसके विगत गठबधनो से मिल सकती है।

सी आई ए का पहला शागिर्द जनरल रेनहार्ड गेहलन, हिटलर का सिर-मौर जासूस था, जो नाजी जर्मनी की कुख्यात सैनिक जासूसी सस्था अबेहर का प्रधान भी रह चुका था। इस बर्बर जगखोर को २०० मिलियन डालर की भेंट चढाते हुए सी आई ए ने एवज मे उसकी पुरानी जासूसी सस्था के सारे साजो-सामान, सभी फाइलो और सूचनाओ पर कब्जा कर लिया। इनमें से अधिकतर सूचनाएँ सोवियत रूस के खिलाफ इकट्ठी की गई थी। गेहलन को पश्चिम जर्मनी जासूसी एजेन्सी, बी एन डी, का प्रमुख बनवाने मे भी सी आई ए ने मदद की। उस पद से अपने ही देशवासियो पर जासूसी करते रहने के लिए उसे सी आई ए से तनख्वाह मिलती थी, लेकिन गेहलन ने नमक का अच्छा बदला चुकाया; पश्चिम जर्मनी और नाटो में काम कर रहे अमरीकियों पर भी वह साथ-साथ गुप्त सूचनाएँ एकत्रित करता रहा था।

गेहलन को बेहद अपमानपूर्ण ढंग से चलता कर दिया गया क्योंकि चांसलर एडेन्योर उसे बर्दास्त नहीं कर सके। ऐसा माना जाता है कि इस वक्त वह अमेरिका में "अमन चैन की मुअत्तल जिन्दगी" जी रहा है।

भूतपूर्व पुर्तगाली खुफिया पुलिस, पी आई डी ई, के साथ सी आई ए का और भी घिनौना रिश्ता रहा है। पी आई डी ई के बहुत सारे अफसर सी आई ए के खुफिया कॉलेजों में प्रशिक्षण पाते थे। मोजाम्बिक के फ्रेलिमो देशभक्तों के खिलाफ लड़ने वाली जनरल कुलजा द अरियागा की टुकड़ियों में सी आई ए के विशेष प्रशिक्षक शामिल रहते थे। असलियत यह है कि सी आई ए और पी आई डी ई के सहयोग का एकमात्र लक्ष्य यह था कि अफ्रीका में मुक्ति आन्दोलनों को दबाया जाय। गिनी पर आक्रमण करने में सी आई ए जो मदद पहुँचा रहा था—पहले ही इसका हवाला दिया जा चुका है—उसमें भी पी आई डी ई का सहयोग था। रोडेशिया और दक्षिण अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों को कुचलने में भी सी आई ए ब्रितानी जासूसों की मदद करता रहा है।

सी आई ए और उसकी गतिविधियों की प्रकृति और दायरा यह है। इसके काले कारमानों पर सफेदी पुतवाने की कॉलबी चाहे जो कोशिश करें, पर हकीकत यह है कि उससे सी आई ए का रंग सफेद तो क्या, थोड़ा कम काला भी नहीं हो सकता है।

बदनामियों से कौन डरता है ?

हमारे देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेपों, नरसंहारों, हत्याकाण्डों, षड्यन्त्रों और अन्य अपराध गतिविधियों के इतने सारे भण्डाफोड़ों को देखते हुए कोई सोच सकता है कि सी आई ए अब अपने खोल में सिमट रहा होगा या अपनी गतिविधियों को समेट रहा होगा। कतई नहीं। जिन करतूतों का भंडाफोड़ हुआ है उसकी तुलना में कई गुना अधिक सी आई ए की ढेर सारी योजनाएं दुनिया के हर हिस्से में अभी भी चालू हैं। इसका एकमात्र लक्ष्य दुनिया भर में प्रतिक्रान्तिकारी धाराओं को प्रोत्साहित करना तथा अमरीकी साम्राज्यवाद के हितों को आगे बढ़ाना है। और इस भूमिका में इसका अमरीकी राज्य विभाग से चोली-दामन का रिश्ता है। सी आई ए की योजनाओं और गतिविधियों के लिए आधा नकाब राज्य विभाग ही मुहैया करता रहा है। कहने के लिए "पड़ावों के प्रमुख" राजदूतों की निगरानी और जांच-पड़ताल के मातहत माने जाते हैं, लेकिन सचाई यह है कि "पड़ावों के प्रमुख" बहुत-सी ऐसी बातें जानते या कर रहे होते हैं जिनसे राजदूत बिलकुल अनजान रहते हैं। और सी आई ए इन दो प्रमुखों के बीच चकमेबाजी का यही रिश्ता पसन्द भी करता है।

क्यूबा की पत्रिका बर्दे ओलिवो ने मार्च १९७५ के अंक में लातिन अमरीकी मुल्कों में सी आई ए की हाल की गतिविधियों पर प्रकाश डाला है। पत्रिका का कहना है :

'हम लातिन अमेरिका में सी आई ए की विघटनकारी, जासूसी और उकसाने वाली हरकतों का विवरण उसके अभी हाल के एक अभियान को, जिसका संकेत नाम "सेन्टूर अभियान" था, उदाहरण के रूप में सामने रखकर करेंगे। इस अभियान का लक्ष्य कालाबाजार, राजनैतिक हत्या और खाने और जरूरत की अन्य चीजों को जानबूझकर छिपाने जैसी हरकतों को प्रोत्साहित करना तथा दक्षिणपंथी अखबारों, अतिवामपंथी एवं अन्य क्रान्तिकारी गुटों को आर्थिक मदद पहुँचाना था।

'१९७३ में सी आई ए एजेन्टों ने पनामा सरकार के प्रधान, जनरल ओमर तोरिजोस को मरवाने की विस्तृत योजना तैयार की थी।

'सी आई ए एजेन्ट कोस्टारिका की सरकार पलटने की तैयारी भी कर रहे थे, जिसमें राष्ट्रपति ओदुबेर किजोस और कुछ मंत्रियों को मरवाने का षड्यंत्र रचा गया था। अर्जेन्टाइना में, जहाँ अति दक्षिणपंथियों की आतंककारी हरकतें बेहद खतरनाक मोड़ तक पहुँच चुकी हैं, सी आई ए फासिस्ट संस्था, "अर्जेन्टाइना का साम्यवाद विरोधी दल" को अपराध कर्मों में दीक्षित करता है। यह खुद अर्जेन्टाइना के लोगों का कथन है। सी आई ए के माथे पर चिले के जनरल कार्लोस प्रैट्स की हत्या चेष्टा का दाग मौजूद है (चिले में खूनी तख्तापलट और राष्ट्रपति अयांदे की हत्या के बाद जनरल प्रैट्स चिले छोड़कर भाग निकले; वे अयांदे के जाने-माने समर्थकों में थे)।

'गौतेमाला के लेबर पार्टी के नेता अबर्टो अलबार्दो को बुरी तरह सताया गया, और फिर उनकी हत्या कर दी गई। यह हत्याकाण्ड सी आई ए की करतूत है, जो गौतेमाला सरकार की दमनकारी दस्तों की गतिविधियों का संचालन करता है।

'सी आई ए इस देश (क्यूबा) के "डेथ स्क्वैड्रन" और "मानो ब्लांका" जैसे फासिस्ट दलों का सलाहकार है।

'पिछले दिसम्बर पेरु के प्रतिक्रान्तिकारियों के साथ मिलकर सी आई ए ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मिकाडो हैरिन और दो अन्य मंत्रियों पर कातिलाना वार करवाने की व्यवस्था की थी।

'सी आई ए एजेन्टों की एक बड़ी फौज राजनयों के नकाब में अर्जेन्टाइना, बोलिविया, डोमिनिकन रिपब्लिक और कई दूसरे देशों में अभी भी कार्यरत है। अमरीकी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियाँ भी सी आई ए एजेन्टों की पर्दादारी करती हैं। आई टी टी, स्टैन्डर्ड ऑयल और कई दूसरी कम्पनियों की लातिन अमरीकी शाखाओं में सी आई ए एजेन्टों के नाम बाजाप्ता वेतनभोगी कर्मचारियों की तरह दर्ज हैं।

'इसके अलावा, गुप्त सूचनाओं को बटोरने और खुफियागीरी करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद पीस कोर, एड तथा अन्य सरकारी और अर्ध-सरकारी अमरीकी संस्थाओं का इस्तेमाल करता है।

'अभी हाल में, ५ फरवरी को, सी आई ए ने एक बड़ा "शिकार" मारने की कोशिश की। चन्द राजनैतिक हलकों और दक्षिणपंथी गुटों की मदद से उसने पेरु की क्रान्तिकारी सैनिक शासन को पलटने की चेष्टा की। षड्यंत्र सफल तो

नहीं हो सका, लेकिन हंगामा, लूट-पाट और तोड़-फोड़ की कई घटनाओं के चलते मुल्क को काफी क्षति उठानी पड़ी।'

बर्डे ओलिवो ने रिपोर्ट का अन्त इन शब्दों में किया : 'जाहिर है, सी आई ए अमरीकी साम्राज्यवाद की प्रतिक्रान्तिकारी संस्था है जिसका काम सैनिक, राजनैतिक और वैचारिक क्षेत्रों में विघटनकारी तत्त्वों का सूत्रपात करना है। इस संस्था के अपराध कर्मों में किसी तरह की तब्दीली नहीं आई है। सी आई ए साम्राज्यवादी एकाधिकार व्यवस्था की संतान है। सी आई ए इस एकाधिकार तंत्र का वह हथियार है जिसके द्वारा उपनिवेशवादी, साम्राज्यवादी और गुटवादी जजीरों से मुक्त होने में लगे देशों को कुचलने की कोशिश होती है।'

अमरीकी साम्राज्यवाद की ये जालिम हरकतें लातिन अमेरिका तक ही सीमित नहीं है। २५ मई, १९७५ के टाइम्स ऑफ इण्डिया में वाशिंगटन से लिखी गई एम. वी. कामथ की एक रिपोर्ट में कहा गया :

'न्यूयार्क टाइम्स ने आज कहा कि करीब १५ सालों से अमरीकी नौसेना विशिष्ट इलेक्ट्रोनिक यत्रों से लैस पनडुब्बियों के सहारे सोवियत यूनियन और "अन्य देशों" की जासूसी कभी-कभी ३ मील सीमा के अन्दर घुसकर करती रही है।

'टाइम्स ने कहा कि तीन मील सीमा के अन्दर कितनी दफा घुसा गया इसकी जानकारी दाखिल नहीं हो सकी। यह भी पता नहीं चल सका कि ऐसे सीमोल्लघन के लिए जासूसी कार्रवाइयों की हुक्म बरदारी करने वाली कुख्यात "४० की समिति" से विशेष आदेश लेने की जरूरत है या नहीं। लेकिन अखबार ने इतना जरूर कहा कि एक भूतपूर्व व्हाइट हाउस अधिकारी ने बताया कि डॉ. किसिंजर इन जासूसी कार्रवाइयों के पक्के समर्थक और निकटस्थ पर्यवेक्षक थे तथा निक्सन शासन के शुरू के दिनों में वे इस योजना की बैठकों में हिस्सा लेते रहे थे।

'इस योजना का सकेत-नाम "होलीस्टोन" था। प्रत्यक्षतः; यह अतिविशिष्ट वर्गीकृत अभियान सोवियत पनडुब्बी बेड़ों की बनावट, क्षमता, ध्वनि प्रकृति और प्रक्षेपास्त्र सामर्थ्य के मुतल्लिक उपयोगी सूचना जुटाने में सफल रहा है। ऐसा माना जाता है कि इन सूचनाओं की बदौलत लम्बे दिनों से चल रहे साल्ट समझौते में भी अमेरिका को काफी मदद मिली है।'

रिपोर्ट में कहा गया कि 'होलीस्टोन' अभियान तत्कालीन सुरक्षा मंत्री राबर्ट मैकनमारा के अधीन शुरू हुआ था, लेकिन उनके बाद भी नौसेना गुप्तचरों के अधीनस्थ चालू रहा, जिसका सकेत-नाम "अप्पो ०११०" था। इस जासूसी

अभियान का एक रुचिकर पक्ष यह था कि काम के दौरान अमरीकी पनडुब्बियों की दुर्घटनाओं की संख्या काफी ज्यादा थी। **न्यूयॉर्क टाइम्स** ने इन दुर्घटनाओं की फेहरिस्त इस तरह दी है : सोवियत पनडुब्बियों के साथ दो ज्ञात टकराहटें, सोवियत यूनियन के पूर्वी समुद्रतट से दूर तीन मील सीमा के अन्दर एक पनडुब्बी के डूबने की घटना, गल्फ आफ टोंकिन में एक गश्त लगानेवाली पनडुब्बी के द्वारा एक उत्तर वीयतनामी माइनस्वीपर को डुवाने की घटना, सोवियत नौसैनिक वेड़ों के अभ्यास के बीच एक रूसी जहाज के नीचे गलती से ऊपर आ गई एक पनडुब्बी के नष्ट होने की घटना। ताज्जुब है कि यदि "होलीस्टोन" अभियान में क्षतिग्रस्त होनेवाली पनडुब्बियों की संख्या सिर्फ चार ही मानी जाय तो भी अखबार ने इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला कि अमेरिका इतनी सारी दुर्घटनाओं को कैसे बर्दाश्त करता रहा।

इस नौसैनिक सेंधमारी के तथ्य और औचित्य जो भी हों लेकिन यह सच है कि, सोवियत यूनियन के ऊपर न सही, यू-२ उड़ानें अब भी जारी हैं। ३० मई को ऐसी ही एक उड़ान भरते हुए पश्चिम जर्मनी में एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसके चलते राजनैतिक हलकों में खलबली-सी मच गई। जहाज ब्रिटेन के वेदर्सफाइल्ड हवाई अड्डे से उड़ा था। दुर्घटना के कारणों की छानवीन चल रही है। वैसे अमरीकी वायु सेना के एक प्रवक्ता का कहना है कि हवाई जहाज को मारकर नहीं गिराया गया था।

कुछ ही दिनों पहले लेवर पार्टी के कई संसद सदस्यों ने ब्रिटेन में यू-२ जासूसी हवाई जहाजों की मौजूदगी को लेकर सुरक्षा मंत्री, रॉय मैसन से विरोध जाहिर किया था। उस वक्त संसद सदस्यों ने दावे के साथ कहा था कि दक्षिण पूर्व इंगलैंड के एक अड्डे पर ५ ऐसे हवाई जहाज हैं। उन्होंने कहा था कि इस अड्डे से अगर इन विमानों ने दूसरे देशों के क्षेत्र में उड़ानें भरीं तो इससे ब्रिटेन की आलोचना होगी और देश निन्दनीय विवादों में पड़ेगा।

पश्चिम जर्मन की साप्ताहिक पत्रिका **स्टर्न** ने २२ मई को दावे के साथ कहा कि अमरीकी असवावी जहाज मायागुएज सैगन से जासूसी के अति गुप्त आँकड़े और साजो-सामान ले जा रहा था जब उसे कम्बोदियाई फौज ने घेर लिया। अमेरिका ने अपनी फौज की एक सशस्त्र टुकड़ी भेजकर जबर्दस्ती उस जहाज को फिर से हथिया लिया। पत्रिका ने एक पूरे पन्ने के लेख में कहा कि जहाज पर फिर से कब्जा करने के लिए अगर अमेरिका इस हद तक सैनिक कार्रवाई पर उतरा तो इसका कारण उसमें छिपा हुआ जासूसी सामान ही था।

स्टर्न ने कहा कि सैगन और दक्षिण वीयतनाम के अन्य दफ्तरों से काग-

आतों को ढोने के लिए सी आई ए ने जानबूझकर मायागुएज़ को चुना था, क्योंकि वह जहाज ऊपर से बिलकुल फटेहाल और महत्वहीन दीखता था।

२१ अप्रैल को दक्षिण वीयतनाम के वुग ताउ बन्दरगाह पर सी आई ए की अति गुप्त पेटियों की लदाई मायागुएज़ जहाज पर हुई। दो दिन बाद, जब जहाज हांगकांग पहुँचा, वे पेटियाँ उतारी गईं। हांगकांग में वे बंद पड़ी रहीं। स्टर्न ने कहा कि इस बीच सी आई ए मदरमुकाम में इस पर विचार होता रहा कि हिन्द-चीन के लिए नया एलेक्ट्रोनिक जासूसी केन्द्र कहाँ स्थापित किया जाय। अन्ततः, सी आई ए ने उन पेटियों को बैंकॉक भेजने का फैसला किया और फिर इस काम के लिए मायागुएज को ही चुना गया। इसी यात्रा में कम्बोदियाइयों ने जहाज पर कब्जा कर लिया।

पश्चिम जर्मनी की पत्रिका ने यह भी कहा कि जहाज को "छुड़ाने" के लिए अमरीकी नौसैनिक बेड़ों के हमले के पहले ही अमरीकी फलाग लड़ाकुओं ने उस वक्त जहाज के मस्तूल में विस्फोटक लगा दिए थे जब वह कोह तांग द्वीप से थोड़ा हटकर लंगर डाले हुआ था। हवाई पर्यवेक्षकों के यह संकेत देने पर कि कम्बोदियाई गुप्त पेटियों को खोल रहे हैं, विस्फोटकों में आग लगाकर जहाज को उड़ा दिया जाता।

२६ मई को अमरीकी समाचार एजेन्सी ए पी ने खबर दी कि "प्रधानमन्त्री हैरोल्ड विल्सन से इस बात की छानबीन करने को कहा गया है कि क्या सी आई ए यूरोपियन कॉमन मार्केट में ब्रिटेन को शरीक रखने के प्रश्न पर एक आंदोलन की गुप्त आर्थिक मदद कर रहा है।" यह ब्रिटेन में उन जनमत संग्रह के ठीक पहले की बात है जिसमें यह निर्णय लिया जाना था कि ब्रिटेन ई सी एम में रहे अथवा नहीं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया : '९ देशीय आर्थिक बिरादरी में ब्रिटेन की सदस्यता के कई विरोधियों ने यह माँग तब की जब लंदन की एक पत्रिका में यह आरोप लगाया गया कि यूरोपियाई एकता को प्रोत्साहित करने वाले दो दलों, यूरोपियन मूवमेन्ट और यूरोपियन यूथ को एक बार सी आई ए से वित्तीय सहायता मिली थी।' टाइम आउट पत्रिका ने ये आरोप लगाए थे। पत्रिका ने कहा कि यूरोपियन मूवमेन्ट के भूतपूर्व प्रधान सचिव के पुत्र, रिचर्ड रेवाटेट के द्वारा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डाक्टरेट की उपाधि के लिए लिखे गए एक शोध पत्र में यह दिखाया गया है कि 'द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोपियन मूवमेन्ट को अपने प्रारम्भिक वर्षों में बहुत ज्यादा नहीं तो एक उल्लेखनीय रकम सी आई ए से जरूर मिली थी। टाइम आउट ने कहा कि इस शोध पत्र में

यह भी बताया गया था कि एलाइड यूरोपियन यूथ कैम्पेन का करीब-करीब पूरा खर्चा सी आई ए ही चलाता था। वह भी कुछ दिनों के लिए नहीं, संस्था की पूरी जिन्दगी के लिए। यह संस्था १९५१ में शुरू होकर १९५९ में खत्म हो गई।' दोनों संस्थाओं को दी गई राशि करीब ३२६.८ लाख बैठती है।

अपने देश के पास से कुछ ज्यादा ही चौंकाने वाली खबर मिल रही है। अभी हाल में श्रीलंका के वित्त मंत्री एन. एम. पेरेरा ने विस्मित करने वाले उद्घाटन किए कि कोलम्बो स्थित अमरीकी दूतावास बैंकों में जमा अपने खाद्यान्न ऋण के पैसों से भारी रकम निकाल रहा था। उनका आरोप था कि यह रकम दक्षिणपंथी यूनाइटेड नेशनल पार्टी और द्वीप के दूसरे विच्छेदन-वादी दलों को भरी जा रही थी। करीब-करीब उसी वक्त श्रीलंका के अखबारों में भी देश की राजनीति में विदेशी धन की भूमिका और प्रधानमंत्री सिरिमावो भंडारनायक की सरकार को डिगाने की अनवरत चेष्टाओं की खबरें छपीं।

जून ३ को भारतीय समाचार सूत्र आई पी ए ने कोलम्बो से लिखा: 'अपने बैंक खाते से अमरीकी दूतावास यहाँ भारी रकम निकाल रहा है। गेहूँ और अन्य खाद्य सामग्रियों के आयात से उसके पास बैंकों में भारी रकम जमा है···अधिकारिक सूत्रों के अनुसार, पिछले ६ महीनों से दूतावास हर माह औसतन १.५ मिलयन डालर निकालता रहा है। ऐसी शंका है कि यह पैसा दक्षिणपंथी यूनाइटेड नेशनल पार्टी को जा रहा है, जिसके नेता श्री जे. आर. जयवर्धने ने खुलेआम कहा है कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आई तो वह द्वीप में अमरीकी नौसैनिक और वायु सैनिक गतिविधियों की सुविधाएँ भी प्रदान करेगी।

'श्रीलंका में "जल्द-से-जल्द चुनाव" के लिए यूनाइटेड नेशनल पार्टी भारी अभियान चला चुका है। यहाँ तक कि जयवर्धने ने संसद में अपनी सीट से इस्तीफा भी दे दिया है जिससे उपचुनाव में वे सत्ताहीन संयुक्त सरकार (श्रीलंका फ्रीडम पार्टी, श्रीलंका कम्युनिस्ट पार्टी और सम समाजिस्ट पार्टी) को परेशानी में डाल सकें। सिरिमाओ सरकार के खिलाफ अभियान चलाने में यू. एन. पी. पैसों की बौछार कर सकने की स्थिति में है और इसके खजाने का रहस्य खुलेआम इस बात में ढूंढ़ा जा रहा है कि अमरीकी दूतावास अपने बैंक खाते से अचानक भारी रकम क्यों निकालने लगा है।'

समाचार सूत्र ने इसके तुरंत बाद एक दूसरी रिपोर्ट १८ जून को जारी की। इसमें संकेत था कि पेरेरा के उद्घाटनों के बाद चौकसी में बढ़ोत्तरी के कारण श्रीलंका के विरुद्ध कारंवाइयों के लिए सी आई ए अपना अड्डा वहाँ

ने उठाकर भारत ले जा रहा है। रिपोर्ट में कहा गया : 'मई में श्री थॉमस डी. हाउवेकर की दक्षिण भारत की यात्रा और यूनाइटेड नेशनल पार्टी के विपक्षी नेता तथा संसद सदस्य जनेनी दिस्सानायके के साथ उनकी "रायमशविरों की ई बैठकों" से सबंधित खबरों के बाद यह सवाल उभरकर सामने आया है।' एजेन्सी ने कहा कि हाउवेकर, जो कोलम्बो स्थित अमरीकी दूतावास में द्वितीय सचिव के रूप में बहाल हैं, सी आई ए के वडभैयों में एक माने जाते हैं। कूटनीतिबाजी करने के पहले वे वीयतनाम और जार्डन में बहाल थे। एक ही वक्त इन दो लोगों की दक्षिण भारतीय यात्रा का कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं बताया गया है। समाचार सूत्र ने कहा कि रोचक प्रसंग यह है कि भारत में दिस्सानायके ने कई दक्षिणपंथी नेताओं से भी भेंट की।

पिछले दिनों सी आई ए को लेकर छपने वाली खबरों में कमोवेश सबसे रोचक खबर ११ सालों से गुप्त कार्रवाइयों के एक उस्ताद जासूस का इस्तीफा माना जाता है। इस्तीफे में उस्ताद ने कहा कि वह 'सी आई ए के बर्बर और अनावश्यक विनाशकारी कृत्यों पर लोगों का ध्यान खींचना चाहता है।' इस उन्माद एजेन्ट का नाम है माइक एकरमन। ११ सालों की नौकरी ने उसे किस तरह उस्ताद बनाया ? खुद एकरमन के अनुसार, इन ११ सालों में वह २० देशों में गुप्त अभियान चलाता रहा है। इनमें से १२ देश पश्चिमी गोलार्द्ध में, ३ अफ्रीका में और ५ यूरोप में थे। उसके इस्तीफे की कहानी ८ जून, १९७५ के मियामी हेरल्ड में छापी गई है। अखबार के मजमून पर जरा गौर कीजिए :

एकरमन ने कहा, 'अपनी बेवकूफियों, अमरीकी राजनीतिज्ञों की आलोचनाओं, अमरीकी प्रेस के आघातों और अमरीकी जनता की उदासीनता के चलते सी आई ए पक्षाघात से विकलांग हो चुका है। बात बस इतनी है : "आप जासूसी एजेन्सी को एक सोनमछली की कटोरी में चला नहीं सकते। मैं इसलिए निकल आया क्योंकि सही ढंग से काम कर सकना कतई नामुमकिन हो गया था।" एकरमन ने कहा कि "वह कम्युनिस्ट सूत्रों से उच्चस्तरीय गुप्त सूचनाएँ एकत्रित करता रहा था और जमींदोज कार्रवाइयों में हिस्सा लेता रहा था।"

'एकरमन ने कांग्रेस के द्वारा सी आई ए कार्डों की छानबीन में लगाई जा रही देर तथा प्रेस के द्वारा एजेन्सी पर किए जाने वाले आघातों की आलोचना की। "यदि दो कांग्रेसनल समितियाँ मछली पकड़ने वाले मल्लाहों की तरह एजेन्सी के सदरमुकाम को ऊपर से नीचे तक छानती रहें तो एक

संस्था अपनी विश्वसनीयता किस तरह बनाए रख सकती है ? सच पूछा जाए तो सी आई ए को लेकर अमरीकी अखबारों में मैंने जो कुछ पढ़ा है उनमें से अधिकतर कबाड़े से ज्यादा और कुछ भी नहीं है। बातों की असलियत को कुछ इस तरह से तोड़ा-मरोड़ा जाता है, कुछ इस तरह से कूटा-पीसा जाता है कि प्रकाशित होने तक उनका तथ्यों से कोई संबंध नहीं रह जाता।"'

तो यह है सी आई ए का असली रंग, यह है इस कातिल संस्था का स्तर। दूसरे देशों के खिलाफ इसके अपराध कर्मों के उद्घाटन, उनके आन्तरिक मामलों में इसका हस्तक्षेप, उनके राजनेताओं की हत्याएँ, उनकी राजनैतिक व्यवस्थाओं का विघटन, उनके अर्थतंत्रों को नाकाम करने की कोशिशें—यह सब करते हुए सी आई ए किसी भी दंड से बरी है, कुछ भी करने की इसे पूरी छूट है। अगर इतना भी काफी न हो तो अमेरिका के अपने ही नागरिकों के खिलाफ गैरकानूनी ढंग से उनकी फोन की बातें सुनने, उनके आपसी पत्राचार को खोलकर पढ़ने और जरूरत पड़ी तो उनकी जासूसी करने की छूट भी इसे मिलनी चाहिए। अगर यह सब करने के सी आई ए के अधिकार पर कोई सवाल उठाए, अगर जनता के चुने हुए प्रतिनिधि सी आई ए सिपहसालारों के मनमानेपन पर रोक लगाने की कोशिश करें, तो इसे यह बेहद नापसंद है। इसके कातिल, लुटेरे दस्ते दूसरे देशों के लोगों की जिन्दगी और अधिकार को पैरों तले कुचलते चलें, और कोई इस पर उँगली उठाए तो इस बात से इसको बेहद नाराजगी है। रॉकफेलर रिपोर्ट में कहा गया है कि खुद अमरीकी जनता को इस वास्तविक फ्रैंकस्टीन से किस हद तक खतरा है इसका खयाल किया जाना चाहिए।

स्टेशन नई दिल्ली और अन्य अड्डे

हिन्दुस्तान की आज़ादी के पहले ही इस मुल्क मे अमरीकी जासूसी कार्रवाइयो की शुरुआत हो चुकी थी; द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनका सूत्रपात हुआ था। हिन्दुस्तान समेत एशिया के दूसरे मुल्को की धरती पर अमरीकी फौज की व्यापक उपस्थिति ने ओ एस एस को आवश्यक पर्दा और प्रोत्साहन प्रदान किया। अप्रैल, १९४८ मे एटलांटिक मथली ने इसका बखान इस तरह से किया है: 'सुदूर पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया मे, जो अब तक पूर्णरूपेण ब्रिटिश और डच इलाका था, अमरीकी सैलाब की तरह छा गए। तेजी से और धमाके के साथ इसका परिणाम सामने आया। लेकिन साथ-साथ वहाँ एक पूर्णरूपेण स्वतन्त्र जासूसी कड़ी की रचना भी हुई।' दूसरे शब्दो मे, पत्रिका का दावा है कि एशियाई गतिविधियो के दौरान ही खुद सी आई ए की नींव डाली गई।

जहाँ तक हिन्दुस्तान का सवाल है, यहाँ की बुनियाद डालने वाले और कोई नही, 'वाइल्ड बिल' दोनोवान ही थे। संस्था की स्थापना करने के लिए जो उन दिनो मुख्यत. जापान के विरुद्ध क्रियाशील था, वे कुछ महीने हिन्दुस्तान मे रहे। १९४२ मे अमेरिकन टेक्निकल मिशन की आड मे कर्नल लुई जॉनसन आए। बाद मे वे राष्ट्रपति रूजवेल्ट के 'निजी दूत' के रूप मे अपने पद पर बने रहे। १५ जून, १९५१ को अमरीकी सिनेट कमेटी की एक सुनवाई मे यहाँ के कामो के बारे मे उन्होने बताया. 'कुछ लोग, कुछ संस्था के लोग वहाँ आया करते थे। चीन और दूसरी जगहों से कुछ अच्छे लोग आकर मुझसे मिले। और हम वाइल्ड बिल दोनोवान के साथ एक तरह की आर्थिक रूपरेखा पर काम कर रहे थे।' जॉनसन के बाद भारत भेजे जाने वाले रूजवेल्ट के दूसरे 'निजी दूत' थे, विलियम फिलिप्स। यहाँ आने के पहले वे लदन मे ओ एस एस के प्रमुख थे; इसलिए यहाँ वे किस तरह के काम पर आए होंगे इस पर कोई शका नहीं होनी चाहिए।

शुरू के दिनो मे अमरीकी जासूसो के लिए हिन्दुस्तान में काम कर सकना

उतना आसान नहीं था; खुद यहाँ की दिक्कतों के चलते नहीं, वल्कि इंगलैंड के विरोध के चलते। ओ एस एस की एक भूतपूर्व कर्मचारी, एलिजावेथ मैकडोनल्ड ने अपनी पुस्तक "अनुस्वायर गर्ल" में ओ एस एस की मनोवल अभियान शाखा के प्रधान को १९४२ में यह कहते हुए उद्धृत किया है : 'कुछ दिनों पहले व्रिटिश खुफियागीरी के प्रधान ने जनरल दोनोवान से कहा था कि ओ एस एस के लिए हिन्दुस्तान का दरवाजा वंद था। इस पर जनरल ने जवाव दिया, "हम खिड़की की सलाखों से कूद आयेंगे।" ठीक यही काम हम कर रहे हैं। हम धीरे-धीरे घुसपैठ कर रहे हैं। जैसा कि आप देख रहे हैं, अभी हमारी ज्यादा पूछ नहीं है।'

लेकिन व्रिटिश अवरोध ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सका। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन से आसन्न अन्त की एक झलक उन्हें मिल चुकी थी। थोड़ी झिझक से ही सही, लेकिन व्रितानी साम्राज्यवादियों ने अमेरिका को गद्दी सौंप दी। १९४३ के ग्रीष्म तक ओ एस एस भारत में पूरी तरह जम गया। तत्कालीन सीलोन के कैंडी स्थान पर उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया का दफ्तर खोला। भारतीय सदरमुकाम कलकत्ता के टौलीगंज इलाके के एक मकान में स्थित था। ओ एस एस नुमाइंदों के कई ट्रेनिंग सेन्टर आसाम में खोले गए।

शुरुआत की इन घटनाओं के वाद सी आई ए के विकास और फैलाव की कथा अधिक रहस्यपूर्ण है। हमें ज्यादा से ज्यादा इसकी कुछेक झाँकियाँ मिल सकती हैं। ओ एस एस की तालेवंदी के वाद उसकी जगह पर पहले सी आई जी, और फिर सी आई ए का आगमन हुआ। इसी वीच हिन्दुस्तान आजाद हुआ। देश ने धीमी गति से, रास्ते की टोह लेते हुए, कभी-कभी लड़खड़ाते हुए आर्थिक स्वतंत्रता और निष्पक्षता की ओर अपनी कठिन यात्रा शुरू की और इसीके साथ हिन्दुस्तान में अमरीकी जासूसों की दिलचस्पी भी वढ़ने लगी, मुल्क में उनकी जासूसी कार्रवाइयों की वढ़ोत्तरी भी होने लगी। ऐसा कहा जा सकता है कि आज इस देश में हर जगह उनकी छाप मौजूद है, वे हर क्षेत्र में मौजूद हैं।

१५ दिसम्वर, १९४८ को अमरीकी सरकार के सभी विभागों के लिए काम करने वाले अमरीकियों की कुल संख्या इस देश में ५६ थी। इनमें विदेश विभाग, सूचना विभाग और प्वाइंट फोर प्रोग्राम (चार सूत्रीय कार्यक्रम) के लिए काम करने वाले कर्मचारी थे। इनके अलावा कुछ व्यापारी और धर्म प्रचारक भी जरूर रहे होंगे। इस देश में आज कितने अमरीकी काम रहे हैं इसकी खवर किसी को नहीं है, भारत सरकार को भी नहीं। अगस्त १९६७ में नई

दिल्ली स्थित अमेरिका के तत्कालीन राजदूत, चेस्टर बाउल्स ने इस देश में अमरीकियों की कुल संख्या का एक संकेत प्रस्तुत किया था। अमेरिकन रिपोर्टर में लिखते हुए उन्होंने बताया कि हिन्दुस्तान में ८,००० से ज्यादा अमरीकी थे, जिनमें अमरीकी सरकार के कर्मचारी और उन पर आश्रित लोगों की संख्या १,८७६ थी, पीस कोर के १२०० लोग थे, व्यापारियों और उन पर आश्रित लोगों की संख्या ३,००० थी, २६०० धर्म-प्रचारक थे, १६२ शिक्षाविद् तथा र छात्र थे। फोर्ड और रॉकफेलर प्रतिष्ठानों में काम कर रहे लोगों की कोई गिनती नहीं हुई थी। अगर बाउल्स के आंकड़े में उन्हें भी शुमार किया गया हो तो भी यह काफी बड़ी संख्या थी।

आज इस देश में उतने अमरीकी नहीं रह गए होंगे। १९६७ के वे दिन हिन्दुस्तान में अमरीकी नवउपनिवेशवाद के बहार के दिन थे; तब से वक्त बदल गया है। अमरीकी सैनिक आपूर्ति दल को चलता कर दिया गया है, यू एस एड अपनी दूकान उठाकर घर रवाना हो चुका है। तथाकथित शोध छात्रों और शिक्षाविदों की यात्राओं पर कई पाबंदियां लगा दी गई हैं। फिर भी अमरीकियों की अच्छी खासी संख्या बची है, वे चाहे दूतावास ; लोग हों, व्यवसायी या धर्म-प्रचारक हों। सिर्फ संख्या में गिरावट से हिन्दुस्तान को बहुत ज्यादा खुश नहीं होना चाहिए। वांछित स्थानों पर अपने एजेन्टों को बिठा देने में सी आई ए को महारत हासिल है, इसलिए उसे अपना आदमी वहां भेज देने में कोई दिक्कत नहीं होती होगी। सरकार की इन पाबंदियों से शायद निर्दोष शिक्षाशास्त्रियों का आना ही बंद होगा। जो भी हो, अमरीकी सूत्रों की अपनी ही स्वीकारोक्तियों के अनुसार कूटनीतिज्ञ, व्यवसायी, धर्म-प्रचारक में से हर कोई शंका का पात्र है।

दूतावास के कर्मचारियों को लेकर विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है। उनमें से आधे लोग निश्चित रूप से सी आई ए के पट्टे हैं। हिन्दुस्तान में अमरीकी सरकार के सभी कर्मचारियों की संख्या ८०० रखने पर, जाहिर है, सी आई ए के ४०० लोग देश भर में विचरण कर रहे हैं।

बिना किसी शंका के, अमरीकी प्रतिष्ठानें सी आई ए के साथ [illegible] की तरह मिलजुलकर काम कर रही हैं। सी आई ए के साथ एशिया फाउन्डेशन के [illegible] रिश्ते के उद्घाटनों के बाद उसे [illegible] अपने देश से चलता कर दिया गया। लेकिन फोर्ड और रॉकफेलर प्रतिष्ठानें अभी भी यहां मौजूद हैं, हालांकि उनकी प्रत्यक्ष गतिविधियों में काफी कमी हुई है। हम उनकी छिपी गतिविधियों से उतने वाकिफ नहीं हैं। वे

भी

जेन्सिन एजेन्सी ए बी सी के एक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में ऐलेन डलेस ने कहा
इस दौर के पन्निरत को और चीन के आकर्षण को पहचानते हैं, स्वीकारते
है।' यह इस बात को कहने का सबसे सटीक तरीका था कि सी आई ए अपने
पूर्ति उद्देश्यों के लिए जहाँ तक संभव होता है चोरों का इस्तेमाल करता है।
१९५६ में लिटरेचुर्नाया गजेटा ने मेलबर्न ओलम्पिक खेलों में भी सी आई ए की
नसीब, नट्कोनी ठाकरियों के द्वारा रूसी खिलाड़ियों को लुभाने के प्रयत्नों
का भण्डाफोड़ किया था। योजना सफल नहीं हो सकी, अन्त में सारा कार्यक्रम
रद्द कर दिया गया था। दिसम्बर १९६३ में एक देशद्रोही, पार्टी के मार्जीन
पर चलाए गए मुकदमे की बहस के दौरान सोफिया में इस बात का उद्घाटन
हुआ कि एक अमरीकी राजनेता की यौन तृप्ति के लिए अमेरिका के बाहर से तीन
औरतें खास तौर पर न्यूयॉर्क भेजी गई थीं।

व्यवसायियों, श्रमिक नेताओं, वैज्ञानिकों, छात्रों, शिक्षाविदों, पर्यटकों और
उन्हें सी आई ए में मिले संरक्षण को लेकर पूरी की पूरी पुस्तकें लिखी गई हैं।
औज़ार बनने और मर्जी के मुताबिक इस्तेमाल होने के लिए जो भी मिल
जाए, सी आई ए उसको भर्ती कर लेता है। लेकिन विदेश जा रहे लोगों या
विदेशी लोगों या संस्थाओं से सम्बन्धित लोग मिलें तो और भी अच्छा। कुछ
तथ्यों को यहाँ दुहराना गैरमुनासिब नहीं होगा।

जॉर्ज मोरिस ने अपनी पुस्तक "सी आई ए और अमरीकी श्रमिक" में इस
बात का विस्फोटक उद्घाटन किया है कि अपने पैसों को झोंकने और दूसरे
देशों में अपनी मर्जी के मुताबिक काम करवाने के लिए सी आई ए किस तरह
ए एफ एल-सी आई ओ के मातहत आने वाले श्रमिक संघों और उनके जरिए
आई सी एफ टी यू का भी इस्तेमाल करता रहा है। मई १९७६ में लास
एंजेल्स टाइम्स के साथ एक भेंटवार्ता में भूतपूर्व सी आई ए एजेन्ट, थॉमस
ब्रेडेन ने बताया कि सी आई ए ने 'भारतीय बन्दरगाहों में सामुद्रिक श्रमिक
संघों का आयोजन करवाया था।' संडे ईवनिंग पोस्ट के एक लेख में उन्होंने
इस बात को दुहराया, हालांकि उन्होंने संघों का नाम नहीं बताया। ब्रेडेन
१९५० से १९६४ तक सी आई ए में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से निबटने वाले
विभाग के प्रमुख थे। ए एफ एल-सी आई ओ के प्रमुख, जॉर्ज मीनी के श्रमिक
विरोधी करतूतों के खिलाफ विद्रोह करने वाले विक्टर रूथर ने एक बार कहा
कि 'ए एफ एल-सी आई ओ के साथ सी आई ए के वित्तीय तथा अन्य
की कथा विद्यार्थियों के साथ उसके वैसे ही सम्बन्धों से कहीं ज्यादा
तेज है।'

छात्र संस्थाओं और श्रमिक संघों के साथ सी आई ए के सम्बन्धों में कौन अधिक सनसनीखेज था, इसकी हमें जानकारी नहीं है। लेकिन इतना तय है कि छात्रों और उनकी संस्थाओं के बीच सी आई ए के पैर सचमुच गहरे धँसे हुए थे। रैम्पार्ट्स पत्रिका के उद्घाटनों के अनुसार, अमेरिका का राष्ट्रीय छात्र संघ सी आई ए के पैसों पर पलता था और उसीकी डफली बजाता रहा था। इस काम का मुख्य सम्पर्क सूत्र युवक छात्र विषयक प्रतिष्ठान था। नेशनल स्टूडेण्ट्स एसोसियेशन के माध्यम से सी आई ए वर्ल्ड एसेम्बली आफ यूथ (विश्व युवक संघ) का संचालन, निर्देशन करता था। वे-इण्डिया नाम से इसकी एक भारतीय शाखा थी। वे (डब्ल्यू ए वाई) के साथ सी आई ए के सम्बन्धों के उद्घाटन के बाद इस शाखा का नाम इण्डियन एसेम्बली ऑफ यूथ पड़ गया है। एसेम्बली के कुछ नेता सिण्डिकेट कांग्रेस के सदस्य हैं। नई दिल्ली के चमक-दमक पूर्ण इलाके, चाणक्यपुरी में वे-इण्डिया ने 'इन्टर नेशनल हाउस' का निर्माण करवाया था, जो प्रत्यक्षत: अब भी अमरीकी समर्थक विश्व युवक केन्द्र के द्वारा संचालित होता है। सी आई ए सम्बन्ध काण्ड के उद्घाटन के समय इसके बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ के चेयरमेन मोरारजी देसाई मैनेजिंग ट्रस्टी रामकृष्ण बजाज थे।

सी आई ए के साथ एन एस ए के सम्बन्धों को लेकर अमेरिका में जब भंडाफोड़ हुआ तो छात्र संस्था में एजेन्सी के चमचे, वाल्टर पिंकस ने निम्न-लिखित उद्घाटन किए: 'आक्रा युवक सम्मेलन में सी आई ए के द्वारा नियुक्त होकर भाग लेने और वहाँ से लौटने के तीन महीने बाद एक सी आई ए दोस्त ने मुझे सूचित किया कि एक भारतीय युवक नेता, जिससे आक्रा में मेरी मुला-कात हो चुकी थी, की इच्छा थी कि मैं हिन्दुस्तान में होनेवाली एक विशाल राजनैतिक सभा में पर्यवेक्षक की हैसियत से भाग लूं। मेरे सी आई ए वाकिफ ने इस बात का जिम्मा लिया कि यात्रा-व्यय का भार भारतीयों की तरफ से उठाया जाएगा। दूसरे दिन एक संदेशवाहक के हाथ नई दिल्ली का विमान टिकट भेजा गया। उसके थोड़ी ही देर बाद भारतीय मित्र का तार मिला जिसमें निमंत्रण के साथ मेरे आने की मंजूरी पर धन्यवाद भी दिया गया था।' काफी दिलचस्प किस्सा है, नहीं? सी आई ए हिन्दुस्तान में अपने आदमी के प्रति निश्चिन्त था, इसलिए हिन्दुस्तानी प्यादे से निमन्त्रण मिलने के पूर्व ही टिकट पहुँच गया। हिन्दुस्तानी प्यादा अपने मालिक से वाकिफ था इसलिए निमन्त्रण के साथ उसने 'आने की मंजूरी पर शुक्रिया' भी जाहिर कर दी।

अमेरिका के करीब-करीब सारे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों और उच्च शैक्षिक

यानों—कैलिफोर्निया, कोलम्बिया, कॉर्नेल, हरवर्ड, स्टैनफोर्ड—की आस्तीन
पी आई ए और उसके डालर की पट्टी पड़ी हुई है। यह फेहरिस्त जहाँ तक
ों हो, लम्बी की जा सकती है। प्रतिष्ठानों और छात्रवृत्तियों की एक पूरी
है जिसके माध्यम से उन तक पैसे पहुँचाए जाते हैं। इनमें से कई विश्व-
विद्यालयों का भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ संयुक्त कार्यक्रम और सहयोग
योजनाएँ चालू थीं; कुछ अब भी है। इन शोध कर्मों से अमरीकी संस्थानों
को जो सूचना हासिल होती है, उसे बाजाप्ता सी आई ए की कोठरियों तक
पहुँचा दी जाती है।

धर्म-प्रचारकों के माथे पर लोगों को अपने धर्म में बदलने का भूत सवार
रहता है। अपनी इसी बदमिजाजी के चलते, खासकर आजादी के बाद, वे
हिन्दुस्तान में लोकप्रिय नहीं हो सके हैं। पिछले सालों में कई ऐसी मिसालें
सामने आई हैं जिनसे साबित हुआ है कि उनमें से कुछ भारत विरोधी गति-
विधियों में शरीक थे। कइयों को देश से बाहर भी कर दिया गया है। मिसाल
के तौर पर, हिमालय की सीमाओं पर विघटनकारी गतिविधियों के चलते एक
अमरीकी पादरी, चार्ल्स मार्टिन समर्स को देश से निकाल बाहर किया गया।
उत्तर भारत और पाकिस्तान के लिए एसेम्बली ऑफ गॉड संस्था के एक दूसरे
सज्जन, बैरिक को बोरिया बिस्तर समेत अमेरिका भेज दिया गया। अगस्त
१९६७ में कई अखबारों में खबर छपी कि स्टीवान्स नाम के एक सज्जन ने
उत्तर बंगाल में रहने की अनुमति माँगी, लेकिन उन्हें स्वीकृति नहीं मिली।
उनकी विसा का नवीनीकरण नहीं किया गया, लेकिन सरकारी सूत्रों का कहना
था कि वे अचानक गुम हो गए। बाद में यह पता चला कि वे एक वक्त
पाकिस्तानी सेना में ब्रिगेडियर के ओहदे पर काम कर चुके थे। इन धर्म-
प्रचारकों में कौन सी आई ए के एजेन्ट थे और कौन सिर्फ भारत विरोधी थे,
यह कहना मुश्किल है।

सी आई ए के ढाल-तलवार से लैस कातिलों को सबसे अच्छी आड़ अनजानेपन
से मिलती है। न्यूयार्क टाइम्स ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि अभी कोशिशों
के बावजूद किसी मुल्क में 'काले' की अचूक पहचान कर पाना काफी नामुम-
किन है। लेकिन मित्र देशों में 'गोरों' की पहचान काफी आसानी से हो जाती
है। गार्डियन ने एक बार सदन में दबाव प्रमुख के आगमन की खबर छापी।
लंदन में हर कोई दबाव प्रमुख को पहचानता होगा था, जैसे [illegible]
नाम की कोई चीज नहीं थी। हिन्दुस्तान में आमतौर पर सी आई ए [illegible]
काम करता है। फिर भी कभी-कभी यह दिल में [illegible] सा रहे

[illegible]

[illegible]

[illegible] चुनावों में [illegible] नहीं है, [illegible] ऐसी भी बात नहीं है। लेकिन [illegible] भारत की [illegible] और [illegible] के विरुद्ध हाथ उठाने की [illegible] कोशिशें की हैं, जैसा कि [illegible] के उदाहरण से प्रत्यक्ष है। भारतीय चुनावों में भी [illegible] ने क्या [illegible] किया है, इसकी सारी जानकारी प्राप्त नहीं है। लेकिन प्रकाश में [illegible] इसकी कुछ [illegible] का ब्योरा इस तरह है :

वी. के. कृष्णा मेनन बराबर से अमरीकी साम्राज्यवादियों की आंख की किरकिरी रहे हैं। १९६२ के चुनाव में भी सी आई ए ने उन्हें पराजित करवाने की दृढ़ चेष्टाएं कीं। ब्लिट्ज साप्ताहिक ने उस वक्त ५ एजेन्टों के नाम गिनाए : कीलैंड, मोहर, रोसजिरल्फ, कोगान और कनेरिज। पहले के दो पत्रकारों के रूप में गुप्त कार्रवाई में लगे हुए थे, बाद के तीन अमरीकी दूतावास के अधिकारी थे। दूसरी रिपोर्ट में पांच और नाम गिनाए : बम्बई स्थित तत्कालीन काउन्सल, रावर्ट ब्वाइरा, दूतावास की सैनिक शाखा के अधिकारी, कर्नल रावर्ट वर्रोज, दिल्ली स्थित अमरीकी तकनीकी मिशन के वाटकिसन, नई दिल्ली स्थित अमरीमी दूतावास के लियोनार्ड सेडगन और स्टिलवेल नाम की एक महिला। दिन-दहाड़े डकैती की तरह बम्बई चुनाव में सी आई ए की दखलंदाजी कुछ इस सनसनीखेज सीमा तक पहुँच गई कि नेहरू ने खुलेग्राम भर्त्सना करते हुए कहा : 'बाहरी मुल्कों की तरफ से लगे हुए कुछ विदेशी न केवल भारतीय चुनावों में रुचि ले रहे हैं बल्कि वे अपने शीत युद्ध स्वार्थों के मुताबिक उनमें दखलंदाजी करने की कोशिशें भी कर रहे हैं।' उस वक्त सी आई ए अपने मंसूबे

असफल नहीं हो सका। और चुनाव के तुरन्त बाद पत्रकार अपने घर लौट गए। दोषी अधिकारियों को विश्वास खो चुकने जैसे आरोप की धमकी देकर अपनी मातृभूमि लौटने पर मजबूर कर दिया गया।

पुरानी कांग्रेस की माध्य बेला में १९६७ के चुनाव लड़े गए। गुट कांग्रेस के दक्षिणपंथी तत्वों समेत देश की समस्त दक्षिणपंथी शक्तियों को इकट्ठा कर चुनाव के बाद एक पूर्णरूपेण दक्षिणपंथी सरकार बनाने का मंसूबा पाला जाने लगा। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर योजना की पूर्ण सफलता के लिए सी आई ए ने एक दस्ते का आयोजन भी कर डाला। असंदिग्ध सूत्रों का हवाला देते हुए ब्लिट्ज ने फौरी दस्ते के लोगों का नाम भी गिनाया : नई दिल्ली स्थित अमरीकी दूतावास के डब्ल्यू. सी. ग्रिम्सले, हरवर्ट स्पिवाक, डब्ल्यू. एन. कैम्पबेल, हॉवर्ड स्कैफर, एडविन पिकाउज, फ्रैंक रैंटनबर्ग और बम्बई स्थित कॉनसुलेट के आर. एच. लार्सन। साप्ताहिक ने यह भी बताया कि दूतावास में राजनैतिक-आर्थिक मामलों के सलाहकार-मंत्री लियोनार्ड वेस चुनावबाजी में हिस्सा भी ले रहे थे। कई रूपों में इस बात का सबूत उपलब्ध था। मिसाल के तौर पर, स्कैफर ने जनवरी १९६७ में कश्मीर की दो यात्राएँ की थीं। महीने की आखिर में, दूसरी बार, उन्हें जल्दबाजी में वहाँ से लौटना पड़ा था क्योंकि जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस समिति के तत्कालीन अध्यक्ष, मीर कासिम ने उन पर चुनाव में दखलंदाजी करने का आरोप लगाया। अखबारों में इसकी पूरी चर्चा बाद में छपी। अपनी कश्मीर यात्रा में स्कैफर दूतावास की दो सुन्दरियों को भी साथ ले गए थे। उन्होंने एक बजरे में अपना दफ्तर खोला तथा पाकिस्तान-समर्थक तत्वों के साथ उनकी कई मुलाकातें हुईं। इस दल से मुलाकात करने वाले प्लेबिसाइट फ्रंट टिकट पर लोकसभा सीट के लिए लड़ने वाले एक उम्मीदवार भी थे। चुनावों के दौरान कई नाजुक मौकों पर वैसे कई शहरों में घूमते-फिरते देखे गए। जिस वक्त स्थानीय कांग्रेस ने कृष्णा मेनन को टिकट न देने का फैसला लिया उस वक्त वे बम्बई में ही थे।

फौरी दस्ते की महिला, जेन आवेन, अखबारों में पहले भी एक बार चर्चा का विषय बन चुकी थी। यह उस वक्त की बात है जब वह १९६० के शुरू के सालों में बम्बई कॉनसुलेट में कुछ दिनों के लिए काम पर लगी थी। १९६१ के पहली छमाही में जब पी एस पी भोपाल में अपना छठा राष्ट्रीय सम्मेलन कर रहा था तो बिलासपुर टाइम्स ने लिखा : 'पी एस पी ... सम्मेलन में जहाँ प्रधानमंत्री नेहरू के इस्तीफे की माँग

रहे थे। इसी बीच सी आई ए और उसके कारनामों के ढेर सारे विस्तृत
विवरण प्रकाशित हुए।

[illegible] भूतपूर्व सी आई ए एजेन्ट, जॉन स्मिथ ने धमाके किए। "मैं
एक सी आई ए एजेन्ट था" शीर्षक से लिटरेतुर्नाया गजेटा में छपी स्मिथ की
लेखमाला ने सनसनी फैला दी। १९५० से १९५६ तक ६ सालों की अपनी
सी आई ए नौकरी में स्मिथ १९५५ से १९५७ तक हिन्दुस्तान में बहाल थे।
राजनैतिक और सैनिक हलकों में सी आई ए ने जिन लोगों को अपना एजेन्ट
बहाल कर रखा था, स्मिथ ने उन सबों का नाम खोल दिया। सेना के बीच
सी आई ए के कुछ गुप्तचर सूत्रों के संकेत-नाम भी उसने प्रकाशित करवाए।
उसने कहा कि सेना के उच्चस्तरीय अफसरों के साथ मुख्य सम्पर्क के रूप में
और कोई नहीं, खुद उसकी बीवी काम कर रही थी। एक बार, जबकि उसकी
[illegible] सैनिक मुख्यालय के बाहर एक आदमी को ८,००० रुपये की भुगतान
[illegible]ते हुए कुछ दस्तावेज हथिया रही थी, वह अपनी मोटर गाड़ी में बैठा बीवी
का इन्तजार कर रहा था। ऊँचे ओहदे पर बैठा एक धनाढ्य था जिसकी
सरकार के गुप्त दस्तावेजों तक पहुँच थी, वह सी आई ए के वेतनभोगी एजेन्ट
के रूप में काम कर रहा था। स्मिथ ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री चाऊ-एन-
लाई और उनके दल को बांडुंग ले जाने के लिए मुस्तैद हवाई जहाज, कश्मीर
प्रिंसेज को उड़ाने वाले टाइम बम नई दिल्ली से भेजे गए थे और उन बमों को
एक चीनी एजेन्ट के हाथ सुपुर्द करने वाला आदमी, हालांकि अनजाने ही, वह
खुद था।

सहकारी खेती को प्रोत्साहित करने की सरकारी योजनाओं को अपंग
करने के लिए सी आई ए ने एक मंत्री महोदय को पकड़ा जिनके साथ उन
दिनों दो अमरीकी सलाहकार, थॉमस कील्ह और अलेक्स फेल्डर रहा करते
थे। 'एक बड़े पुरस्कार की एवज में मंत्रीजी ने भारतीय सहकारी संघ के
[illegible]ताओं को सहकारी खेती के विरुद्ध शोर मचाने के लिए फुसला लिया और
[illegible]स तरह सारी योजना पर पानी फिर गया।' स्मिथ ने मंत्री का नाम नहीं
खोला। जब एक संसद सदस्य ने भारतीय सहकारी संघ के तत्कालीन अवैतनिक
महासचिव, बी. जे. पटेल के नाम सी आई ए एजेन्ट कील्ह के खतों की फोटो-
स्टैट प्रतियाँ पेश की तो सहकारी संघ के साथ सी आई ए के संबंधों को लेकर
राज्य सभा में हंगामा मच गया। एक खत में कहा गया था कि नई दिल्ली में
हुए आपसी समझौतों के अनुसार उनकी सेवाओं के बदले उनके बेटे के लिए

इन उद्घाटनों के चलते इस देश में बड़ा हंगामा खड़ा हो गया और सी आई ए की गतिविधियों तथा चुनावों में विदेशी पैसे की भूमिका को लेकर छानबीन करने की संसद में बार-बार मांग शुरू हुई। अन्ततः, तत्कालीन गृह मंत्री वाई.बी.चवन ने जांच करवाने का वादा किया। इस जांच की रिपोर्ट न तो प्रकाशित की गई और न संसद के सामने पेश की गई। लेकिन इसके कुछ निष्कर्षों से बहुत सारे पत्रकार वाकिफ थे। सोशलिस्ट कांग्रेसमैन के तत्कालीन सम्पादक और मौजूदा कांग्रेस संसद सदस्य, एच. डी. मालवीय ने १९६८ में सी बी आई की जांचों के बारे में लिखा: 'ब्यूरो ने पाया कि भारत के एक दल के महत्त्वपूर्ण नेतागण अमरीकी दूतावास के उच्च अधिकारियों से मिलते रहे थे। साथ ही इसने इस पर भी सहमति जाहिर की कि सी आई ए एजेन्ट माने जाने वाले लोगों के साथ रक्षा विभाग के उच्चस्तरीय अफसर भी मिलते रहे थे। लेकिन यह सच है कि ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है कि वे इनसे

मर्यादित हुए थे। ब्यूरो ने स्वीकारा कि कोआॅपरेटिव लीग आॅफ अमेरिका के दो अमरीकी सदस्य भारतीय सहकारी संघ के कामों में 'दखलदाजी' करते पाये गए, लेकिन यह आरोप कि वे मंत्री के माध्यम से काम कर रहे थे, नकारा गया"'ब्यूरो ने अकाली दल के साथ यू एस आई एस (अमरीकी सूचना सेवा) के सम्पर्कों की पुष्टि की, लेकिन भारत विरोधी उकसाहटों का आरोप खारिज कर दिया गया। फिर भी हम इतना जानते हैं कि स्वर्गीय मास्टर तारासिंह भारत से पंजाब को अलग करने की बात करने लगे थे और पाकिस्तान से रायमशविरा करने का ख्वाब देखने लगे थे।'

अमेरिका में भारी सुर्खियाँ बटोरी जा रही थी। यह सितम्बर १९६७ की बात है।

जॉन स्मिथ के खुलासों की बात करें। 'भारत और पाकिस्तान की जनता के बीच झगड़े उभारने और मनमुटाव लाने के लिए सी आई ए ने सारे हथकंडों का सहारा लिया। भारतीय संघ से अलग नागालैंड के रूप में एक स्वतंत्र देश की स्थापना के लिए नागा जातियों के संघर्ष। इसी आंदोलन को अमरीकियों से काफी मदद मिलती रही थी। १९५६ के पतझड़ में अमरीकी दूतावास के सहायक सैनिक संलग्नक के साथ अमरीकी तकनीकी सहयोग मिशन में काम करने वाला एक सी आई ए एजेन्ट इम्फाल गया। वहाँ नागा जातियों के साथ एक गुप्त बैठक हुई। नागा आंदोलन के नेताओं के साथ ढाका (तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान) स्थित अमरीकी काउन्सल जनरल की भी एक गुप्त बैठक हुई थी। ये नागा नेता भारतीय सीमाओं को पार कर पूर्व पाकिस्तान जाया करते थे। इन अलगाववादी नेताओं को उनसे अच्छी खासी रकम और ढेर सारे निर्देश मिला करते थे। भारत से अलग होने की इसी मांग को लेकर आंदोलन फैलाने पर वाशिंगटन जोर दे रहा था।' आगे यह भी कहा गया कि अमरीकी सैनिक जासूसी का एक एजेन्ट, जोसेफ मैकालर, तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान से नागा क्षेत्रों में हथियारों के आवागमन की देख-रेख कर रहा था। जॉन ग्रोवर और कई अन्य अमरीकी राजनयिक इस काम में मदद पहुँचा रहे थे। मदद करने वालों में डेविड एच. ब्ली भी थे जो बाद में नई दिल्ली स्थित दूतावास में एक राजनयिक के रूप में बहाल किए गए।

इन उद्घाटनों के चलते इस देश में बड़ा हंगामा खड़ा हो गया और सी आई ए की गतिविधियों तथा चुनावों में विदेशी पैसे की भूमिका को लेकर छानबीन करने की संसद में बार-बार मांग शुरू हुई। अन्ततः, तत्कालीन गृह मंत्री वाई.बी.चवन ने जाँच करवाने का वादा किया। इस जांच की रिपोर्ट न तो प्रकाशित की गई और न संसद के सामने पेश की गई। लेकिन इसके कु निष्कर्षों से बहुत सारे पत्रकार वाकिफ थे। **सोसलिस्ट कांग्रेसमैन** के तत्काली सम्पादक और मौजूदा कांग्रेस संसद सदस्य, एच. डी. मालवीय ने १९६८ सी बी आई की जाँचों के बारे में लिखा : 'ब्यूरो ने पाया कि भारत के ए दल के महत्त्वपूर्ण नेतागण अमरीकी दूतावास के उच्च अधिकारियों से मिल रहे थे। साथ ही इसने इस पर भी सहमति जाहिर की कि सी आई ए एजेन माने जाने वाले लोगों के साथ रक्षा विभाग के उच्चस्तरीय अफसर भी मिल रहे थे। लेकिन यह सच है कि ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है कि वे इन

किसिंजर के अड़तालीस घण्टे

जांच होनी है तो होती रहे, लेकिन इनके चलते सी आई ए बोरिया-बिस्तर समेत घर न लौट जायगा। सी आई ए यहां बना रहा, इसने यहां अपनी घृणित और खौफनाक हरकतें जारी रखीं। १९७१ के लोक सभा चुनावों में अमरीकी जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी ले रहे थे। इसे काफी स्वाभाविक भी माना जाना चाहिए, क्योंकि सत्ता हथियाने के लिए संयुक्त प्रतिक्रियावादियों ने इस बार सबसे बड़ी बाजी लगाई थी। हरबर्ट लिवाक अब भी दूतावास में ही थे और वे मुल्क भर में बेरोकटोक घूमते चल रहे थे। कैरोल लैंजे, जिन्हें १९५७ के चुनावों में अपने कृत्यों के चलते घर लौटना पड़ा था, जनवरी के दूसरे पख-वाड़े में अपने पुराने दोस्तों से मिलने काठमांडू से यहां पधारीं। वह फरवरी के पहले सप्ताह तक यहां बनी रहीं। और फिर नई दिल्ली में बहाल अमेरिका के दो भूतपूर्व राजदूत, चेस्टर बाउल्स तथा शर्मन कूपर करीब-करीब एक साथ यहां उतरे। हम लोगों ने पहले भी देखा है कि अमरीकी जीवन शैली में रा-दूत, जिनमें भूतपूर्व राजदूत भी [illegible] कार्रवाइयों तथा विघटन [illegible] गतिविधियों से मुक्त नहीं होते [illegible]

इससे कहीं [illegible] पास ने तब शुरू की
उसने इस देश [illegible] निकास शुरू कि[illegible]
भारतीय संसद [illegible] राशि रिजर्व बैंक
अमेरिका का व[illegible] के द्वारा पी [illegible]
४८० खाद्यान्न [illegible] [illegible] की [illegible]
बंदी के पहले तक [illegible] [illegible]तिवि[illegible]
का संचालन किया [illegible]
१९६९ से सितम्बर [illegible]
योग के लिए ५८.८४ [illegible]
यह होता है कि यह पै[illegible]

था। यह आंकड़ा दूतावास के पिछले १३ सालों के कुल खर्चे की ८३ प्रतिशत राशि के बराबर बैठता है। इस सारे वाकयात में जो पक्ष सबसे महत्त्वपूर्ण है वह है पैसे के निकास की अवधि—कांग्रेस में फूट पड़ने के ठीक पहले से पैसों की इतनी बड़ी निकासी शुरू हुई थी। १९७१ के चुनावों के दौरान रिजर्व बैंक से कितना पैसा निकाला गया इसका आंकड़ा आसानी से उपलब्ध नहीं हो सका है लेकिन ऐसा विश्वास है कि उस अवधि में भी कुछ उतनी ही बड़ी रकम निकाली गई थी। ये सारे पैसे कहाँ गए, किसे मिले ?

१९७२ में विधानसभाओं के चुनाव के समय सी आई ए काफी असुविधाजनक स्थिति में था। बंगला देश राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध में अमेरिका की गंदी भूमिका, भारत के प्रति उसका शत्रुतापूर्ण रुख, पाकिस्तान के प्रति हेनरी किसिंजर का दुर्वचित 'रुझान' और बंगाल की खाड़ी में उसके द्वारा भेजे गए सातवें बेड़े की सम्मिलित प्रतिक्रिया के रूप में अमरीकी साम्राज्यवादियों के प्रति भारतीय जनता का गहरा आक्रोश था। ऐसी स्थिति में अनुमान लगाया जाना चाहिए कि सी आई ए आम तौर पर दब कर रहा होगा, लेकिन यह इस एजेन्सी की प्रकृति के बिल्कुल खिलाफ बात है। फिर भी, उस वक्त इसकी हरकतें छोटे पैमाने पर जरूर खिसक आई थीं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने विधानसभा में यह रहस्योद्घाटन किया कि चुनाव के दौरान बम्बई स्थित अमरीकी कॉनसुलेट का एक अधिकारी मध्यप्रदेश गया था और उसने जनसंघ के कई नेताओं और उम्मीदवारों से भेंट-मुलाकात की थी। उन्होंने कहा कि उन्होंने केन्द्र से इस केस में छानबीन करने की माँग की थी। और किन प्रान्तों ने सी आई ए का ध्यान अपनी ओर खींचा था, हमें नहीं पता।

सिर्फ चुनावों के दौरान ही नहीं, सी आई ए इस मुल्क में हमेशा क्रियाशील रहा है। भारतीय अखबारों में कई दफा कई अमरीकियों और अन्य गुटों के द्वारा भारतीय मामलों, खासकर नाजुक क्षेत्रों और उनसे सम्बन्धित सूचनाओं में एक या दूसरे तरह की अस्वाभाविक रुचि लेने की खबरें प्रकाशित होती रही हैं।

हवाई चित्रों से भी सी आई ए को बेहद लगाव है। कई तरह की मशीनें, जिनमें मुख्यतः वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग योजनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, इस काम के लिए इस्तेमाल में लाई जाती हैं। मिसाल के तौर पर, १९६२ में यह देखा गया कि कलकत्ता के हवाई चित्रों के लिए अमरीकी तत्पर बने हुए थे। उन्हें हासिल करने के लिए फोर्ड फाउंडेशन, जो उन दिनों कलकत्ता मेट्रोपोलिटन प्लानिंग ऑर्गनाइजेशन को 'तकनीकी कर के सहायता' दे

है हत कर लिया गया। यह एजेन्ट पत्रकारनवीस की प्रच्छन्न आड़ में काम
रहा था। राज्य सरकार ने अखबारों को अपनी तो कर दी लेकिन जासूस को
छोड़ कर साथ-साथ अपनी उदारता भी दिखाई।

"मैं सी आई ए एजेन्ट था" नाम से छपी अपनी पुस्तक में जॉन स्मिथ ने
भारत के अलगाववादी आन्दोलन में सी आई ए की गहरी दिलचस्पी और इन
आन्दोलनों को उसकी ओर से दिये जाने वाले प्रोत्साहन तथा संरक्षण का भी
रहस्योद्घाटन किया है। उन्होंने मराठी आन्दोलन और साथ-साथ नागा
विद्रोहियों के भी उदाहरण पेश किए हैं। 'सी आई ए कल्पना से भी अधिक
रोमांचक" नाम की अपनी पुस्तक में नोरमन कोन ने द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम
और इसके प्रमुख अलगाववादी आन्दोलन के साथ सी आई ए की गलबाही
का बयान किया है। १९६४ में, जब डी एम के का अलगाववादी आन्दोलन
जोरों पर था, सी आई ए के कुछ एजेन्ट मद्रास गये और वहां उन्होंने गृह-युद्ध
छिड़वाने का बेहद प्रयास किया। "इन आगन्तुकों ने कुछ डी एम के नेताओं
को आश्वासन दिया कि 'स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के लिए लड़ने वाली यहां की
जनता' के लिए अमरीकी जनता स्वाभाविक रूप से सहानुभूति दिखायेगी,
यानी उत्तर और दक्षिण भारत के अलगाव में अमरीकी जनता की दिलचस्पी
है।" ऐसा जाना जाता है कि इन अमरीकियों की मद्रास यात्रा पर भारत
सरकार के गृह मन्त्रालय ने कुछ पूछताछ की थी।

इस देश के विध्वंसनवादी और क्षेत्रीय आन्दोलनों के प्रति सी आई ए
गुमाश्तों के आकर्षण पर टिप्पणी करते हुए अंग्रेजी साप्ताहिक आर्गनाइजर ने
५ फरवरी, १९६६ के अंक में कहा : 'अमरीकी षड्यन्त्र उपराष्ट्रीयता या
पी एल ४८० के पैसों पर पलने वाले धर्मप्रचारकों के जरिए तमिलनाडु,
नागालैंड, महाराष्ट्र, आदिवासी क्षेत्र जैसी क्षेत्रीय राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने
और मजबूत करने के लिए है। इस देश में हर कहीं कुकुरमुत्ते की तरह उग आने
वाले कई अमरीकी सिनेटरों का निर्वाह भी उसी पैसे से होता है।'

२९ अक्तूबर, १९६६ को मेनस्ट्रीम ने एक शोध परियोजना की आड़ में
कुछ भारतीय गांवों में सी आई ए की गतिविधियों की [illegible] इसमें
कहा गया था कि यह परियोजना मिशिगन स्टेट विश्ववि[illegible]
स्थित नेशनल इंस्टिच्यूट ऑफ कम्युनिटी डेवेलपमेन्ट [illegible]
चालू थी। सी आई ए के साथ मिशिगन के संबंध [illegible]
१९६५ में रैम्पार्ट्स पत्रिका ने रहस्योद्घाटन किया [illegible]
अभियान की देखरेख दो एजेन्टों, सी. जी. फ्लीगेल [illegible]

रंगे हाथ पकड़ लिया गया। यह एजेन्ट प्रचारात्मक फिल्म की प्रतियां भारत में काम कर रहा था। भारत सरकार ने तस्वीरों को जब्त तो कर ली लेकिन जासूस को रिहा कर साथ-साथ अपनी उदारता भी दिखाई।

"मैं सी आई ए एजेन्ट था" नाम से छपी अपनी पुस्तक में जॉन स्मिथ ने भारत के अलगाववादी आन्दोलन में सी आई ए की गहरी दिलचस्पी और इन आन्दोलनों को उसकी ओर से दिये जाने वाले प्रोत्साहन तथा संरक्षण का भी रहस्योद्घाटन किया है। उन्होंने अकाली आन्दोलन और साथ-साथ नागा विद्रोहियों के भी उदाहरण पेश किए हैं। "सी आई ए. कल्पना से भी अधिक षडयंत्रकारी" नाम की अपनी पुस्तक में नोरमन कोन ने द्रविड मुन्नेत्र कड़गम और इसके तमिल अलगाववादी आन्दोलन के साथ सी आई ए की गलबांही का बयान किया है। १९६४ में, जब डी एम के का अलगाववादी आन्दोलन जोरों पर था, सी आई ए के कुछ एजेन्ट मद्रास गये और वहां उन्होंने गृह-युद्ध छिड़वाने का बेहद प्रयास किया। "इन आगन्तुकों ने कुछ डी एम के नेताओं को आश्वासन दिया कि 'स्वतन्त्रता और लोकतंत्र के लिए लड़ने वाली यहां की जनता' के लिए अमरीकी जनता स्वाभाविक रूप से सहानुभूति दिखायेगी, यानी उत्तर और दक्षिण भारत के अलगाव में अमरीकी जनता की दिलचस्पी है।" ऐसा जाना जाता है कि इन अमरीकियों की मद्रास यात्रा पर भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने कुछ पूछताछ की थी।

इस देश के विच्छेदनवादी और क्षेत्रीय आन्दोलनों के प्रति सी आई ए गुमाश्तों के आकर्षण पर टिप्पणी करते हुए अंग्रेजी साप्ताहिक आर्गनाइजर ने ५ फरवरी, १९६६ के अंक में कहा: 'अमरीकी षड्यन्त्र उपराष्ट्रीयता या पी एल ४८० के पैसों पर पलने वाले धर्मप्रचारकों के जरिए तमिलनाडु, नागालैंड, महाराष्ट्र, आदिवासी क्षेत्र जैसी क्षेत्रीय राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए है। इस देश में हर कहीं कुकुरमुत्ते की तरह उग आने वाले कई अमरीकी मिशनरियों का निर्वाह भी उसी पैसे से होता है।'

२६ अक्तूबर, १९६६ को मेनस्ट्रीम ने एक शोध परियोजना की आड़ में कुछ भारतीय गांवों में सी आई ए की गतिविधियों की रिपोर्ट छापी। इसमें कहा गया था कि यह परियोजना मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय और हैदराबाद स्थित नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ कम्युनिटी डेवेलपमेन्ट की संयुक्त देखरेख में चालू थी। सी आई ए के साथ मिशिगन के संबंध सर्वविदित हैं। अप्रैल १९६५ में रैम्पार्ट्स पत्रिका ने रहस्योद्घाटन किया कि हैदराबाद में मिशिगन अभियान की देखरेख दो एजेन्टों, सी. जी. फ्लीगेल और जे. वी. वेबरमायर

के जिम्मे है। यू एस ए आई डी ने इस परियोजना के लिए ७.२६ लाख रुपये भी दिए।

शैक्षणिक और वैज्ञानिक परियोजनाओं को जासूसी की गुप्त सूचना एकत्रित करने जैसे काम में लगाने के और भी कई उदाहरण सामने रखे जा सकते हैं। १९५३-५४ में सी आई ए के साथ अपने गठबंधन के लिए कुख्यात दो अमरीकी संस्थाओं ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय के साथ मिलकर एक परियोजना की शुरुआत की जिसके अध्ययन का विषय था : 'बम्बई से लेकर कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर कास्मिक किरण की स्थितियाँ।' फिलाडेल्फिया के फ्रैंकलिन इंस्टीच्यूट से इस परियोजना में पैसे लगाए जा रहे थे। अध्ययन करने वाली संस्था थी नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका। "भारत के ऊपर अमरीकी छाया" नामक अपनी पुस्तक में एल. नटराजन ने लेफ्टिनेन्ट जनरल यूजिन रेबोल्ड को, जो अमरीकी सेना में नक्शे बनवाने की जिम्मेदारी सँभाल रहे थे, नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी की प्रशंसा में यह कहते हुए उद्धृत किया है कि यह सोसाइटी अमरीकी सैनिक नक्शा प्रतिष्ठान का अभिन्न अंग है।

जुलाई १९६८ में अमरीकी सिनेट की विदेश संबंध समिति की सुनवाई में यह रहस्योद्घाटन हुआ कि कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के द्वारा चालू करवाई गई तथाकथित हिमालय सीमा देशीय परियोजना असल में सी आई ए का हथकंडा था। इस परियोजना में दो शोध कार्यक्रमों के द्वारा पेन्टागन भी सहयोग कर रहा था। विदेश मंत्रालय के तत्कालीन राज्य मंत्री ने संसद में कहा कि 'हिमालय परियोजना के ६० प्रतिशत खर्चे का भुगतान करने वाली संस्था, उच्चस्तरीय शोध परियोजना एजेन्सी, अमरीकी सुरक्षा विभाग का ही अंग है। सिनेट की विदेश संबंध समिति में यह स्वीकारा गया कि राज्य विभाग ने इस परियोजना के लिए २.८ लाख डालर का भुगतान किया था। दो कार्यक्रमों का नेतृत्व करने वाले दो लोग थे : अरिज़ोना विश्वविद्यालय के जे. डाउन्स तथा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के जेराल्ड वेरीमन। संसद में प्रश्नों की बौछार पर प्रधानमंत्री ने क्रुद्ध सदस्यों को आश्वासन दिया कि सरकार 'इस मुद्दे की सतर्कता से छानबीन करेगी।'

१९७२ में भारतीय जासूसी सूत्रों का हवाला देते हुए ब्लित्ज पत्रिका ने कहा कि ऐसा संदेह किया जाता है कि कलकत्ता की जन परिवहन व्यवस्था के डीज़ल तेल में सी आई ए ने बड़े पैमाने पर मिलावट करवायी, जिसके चलते इंजनें धीरे-धीरे नाकाम होती चली गईं। एक उच्चस्तरीय

पुलिस अधिकारी ने एक सरकारी रिपोर्ट मे इस बात की ओर सकेत किया था कि कर्नल एडवर्ड लैंसडेल के नेतृत्व मे सी आई ए का एक दल हेन्वाई मे भी इसी तरह की तोड़फोड़नुमा कार्रवाई करता पाया गया था। उसे १९५४ में हेन्वाई से बाहर खदेड दिया गया था। पेन्टागन दस्तावेज के अनुसार, लैंसडेल के खुद अपने ही शब्दों मे : 'बसों की इजनों को धीरे-धीरे नष्ट करने के उद्देश्य से बस कम्पनी की तेल आपूर्ति मे मिलावट कर उसे दूषित करने, रेल की पटरियों को उड़ाने की दिशा में कदम उठाने—जिस काम मे जापान स्थित सी आई ए के एक विशेष तकनीकी दल के साथ हमने मिलजुल कर काम किया—तथा भविष्य की कार्रवाइयों के लिए सभावित लक्ष्यों को लेकर विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने जैसे कामों मे हमारे दल ने हेन्वाई मे अपने अन्तिम दिन गुजारे।' यह वही आदमी है जिसकी बाद में जनरल के रूप मे पदोन्नति हुई, और जो क्यूबा के प्रधानमंत्री फिडेल कास्त्रो की हत्या के षड्यत्र मे भी शरीक था।

उसी साल आसाम के मुख्यमंत्री ने प्रान्तीय विधान सभा में कहा कि विदेशी चालबाजियों मे काफी बढोतरी हुई थी और ऐसी कोशिशें जारी थी जिसमे प्रान्त मे तनाव और मुश्किलें पैदा की जा सकें। बाद मे, वहाँ पर भाषाई दगे शुरू हो गए, जो इस प्रान्त के लिए एक अचम्भित करने वाली घटना थी। काफी दिनों बाद गौहाटी की एक काग्रेस सभा मे प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी ने सवाल किया : यह कैसे सम्भव हुआ कि *न्यूयॉर्क टाइम्स* ने पिछले मई मे ही इस मुतल्लिक एक खबर छापी थी कि आसाम मे अक्तूबर मे दगे होंगे ? और अक्तूबर मे सचमुच दगे हुए। आसानी से निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

राजस्थान के मुख्यमत्री, स्वर्गीय बर्कतुल्लाह खाँ और गृह मंत्री, कमला बेनीवाल ने करीब-करीब उसी वक्त विधानसभा मे यह रहस्योद्घाटन किया था कि दो अमरीकी 'विद्वान' राज्य की सिचाई व्यवस्था पर शोध कर रहे थे, हालांकि केन्द्र और राज्य सरकारों से उन्हे इसकी अनुमति नहीं मिली थी। इसका भी भंडाफोड़ हुआ कि इन शोधकर्त्ताओं मे से एक सज्जन का नाम ब्लू था, जो मिनेसोटा विश्वविद्यालय मे पाकिस्तानी विभाग के मुलाजिम थे। ये सज्जन राजस्थान नहर पर शोध कर रहे थे, और यह नहर, जैसा कि यह सिर्फ सयोग हो कि सीमा से थोड़ा ही हटकर ठीक हिन्द-पाक सीमा के समानान्तर बहती थी।

इन सारे भडाफोड़ों के ऊपर से अरुणाचल के मुख्य आयुक्त, के. ए. ए. राजन ने खबर दी कि सघीय क्षेत्र के आदिवासी गाँवों मे सी आई ए एजेन्टों

के जिम्मे है। यू एस ए आई डी ने इस परियोजना के लिए ७.२६ लाख रुपये भी दिए।

शैक्षणिक और वैज्ञानिक परियोजनाओं को जासूसी की गुप्त सूचना एकत्रित करने जैसे काम में लगाने के और भी कई उदाहरण सामने रखे जा सकते हैं। १९५३-५४ में सी आई ए के साथ अपने गठबंधन के लिए कुख्यात दो अमरीकी संस्थाओं ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय के साथ मिलकर एक परियोजना की शुरुआत की जिसके अध्ययन का विषय था : 'बम्बई से लेकर कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर कास्मिक किरण की स्थितियाँ।' फिलाडेलफिया के फ्रैंकलिन इंस्टीच्यूट से इस परियोजना में पैसे लगाए जा रहे थे। अध्ययन करने वाली संस्था थी नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका। "भारत के ऊपर अमरीकी छाया" नामक अपनी पुस्तक में एल. नटराजन ने लेफ्टिनेन्ट जनरल यूज़िन रेवोल्ड को, जो अमरीकी सेना में नक्शे बनवाने की जिम्मेदारी सँभाल रहे थे, नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी की प्रशंसा में यह कहते हुए उद्धृत किया है कि यह सोसाइटी अमरीकी सैनिक नक्शा प्रतिष्ठान का अभिन्न अंग है।

जुलाई १९६८ में अमरीकी सिनेट की विदेश संबंध समिति की सुनवाई में यह रहस्योद्घाटन हुआ कि कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के द्वारा चालू करवाई गई तथाकथित हिमालय सीमा देशीय परियोजना असल में सी आई ए का हथकंडा था। इस परियोजना में दो शोध कार्यक्रमों के द्वारा पेन्टागन भी सहयोग कर रहा था। विदेश मंत्रालय के तत्कालीन राज्य मंत्री ने संसद में कहा कि 'हिमालय परियोजना के ६० प्रतिशत खर्चे का भुगतान करने वाली संस्था, उच्चस्तरीय शोध परियोजना एजेन्सी, अमरीकी सुरक्षा विभाग का ही अंग है। सिनेट की विदेश संबंध समिति में यह स्वीकारा गया कि राज्य विभाग ने इस परियोजना के लिए २.८ लाख डालर का भुगतान किया था। दो कार्यक्रमों का नेतृत्व करने वाले दो लोग थे : अरिज़ोना विश्वविद्यालय के जे. डाउन्स तथा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के जेराल्ड बेरीमन। संसद में प्रश्नों की बौछार पर प्रधानमंत्री ने क्रुद्ध सदस्यों को आश्वासन दिया कि सरकार 'इस मुद्दे की सतर्कता से छानबीन करेगी।'

१९७२ में भारतीय जासूसी सूत्रों का हवाला देते हुए ब्लिट्ज पत्रिका ने कहा कि ऐसा संदेह किया जाता है कि कलकत्ता की जन परिवहन व्यवस्था के डीजल तेल में सी आई ए ने बड़े पैमाने पर मिलावट करवायी, जिसके चलते इंजनें धीरे-धीरे नाकाम होती चली गईं। एक उच्चस्तरीय

पुलिस अधिकारी ने एक सरकारी रिपोर्ट में इस बात की ओर संकेत किया था कि कर्नल एडवर्ड लैंसडेल के नेतृत्व में सी आई ए का एक दल हेनाई में भी इसी तरह की तोड़फोड़नुमा कार्रवाई करता पाया गया था। उसे १९५४ में हेनाई से बाहर खदेड़ दिया गया था। पेन्टागन दस्तावेज के अनुसार, लैंसडेल के गुट वाले ही शब्दों में : 'बसों की इंजनों को धीरे-धीरे नष्ट करने के उद्देश्य से बस कम्पनी की तेल आपूर्ति में मिलावट कर उसे दूषित करने, रेल की पटरियों को उड़ाने की दिशा में कदम उठाने—जिस काम में जापान स्थित सी आई ए के एक विशेष तकनीकी दल के साथ हमने मिलजुल कर काम किया—तथा भविष्य की कार्रवाइयों के लिए सम्भावित लक्ष्यों को लेकर विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने जैसे कामों में हमारे दल ने हेनाई में अपने अन्तिम दिन गुजारे।' यह वही आदमी है जिसकी बाद में जनरल के रूप में पदोन्नति हुई, और जो क्यूबा के प्रधानमंत्री फिदेल कास्त्रो की हत्या के षड्यन्त्र में भी शरीक था।

उसी साल आसाम के मुख्यमंत्री ने प्रान्तीय विधान सभा में कहा कि विदेशी धर्मप्रचारकों में काफी बढ़ोतरी हुई थी और ऐसी कोशिशें जारी थीं जिससे प्रान्त में तनाव और मुश्किलें पैदा की जा सकें। बाद में, वहाँ पर भाषाई दंगे शुरू हो गए, जो इस प्रान्त के लिए एक अचम्भित करने वाली घटना थी। काफी दिनों बाद गौहाटी की एक कांग्रेस सभा में प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने सवाल किया : यह कैसे सम्भव हुआ कि न्यूयार्क टाइम्स ने पिछले मई में ही इस मुतल्लिक एक खबर छापी थी कि आसाम में अक्तूबर में दंगे होंगे ? और अक्तूबर में सचमुच दंगे हुए। आसानी से निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री, स्वर्गीय बर्कतुल्लाह खाँ और गृह मंत्री, कमला बेनीवाल ने करीब-करीब उसी वक्त विधानसभा में यह रहस्योद्‌घाटन किया था कि दो अमरीकी 'विद्वान' राज्य की सिंचाई व्यवस्था पर शोध कर रहे थे, हालांकि केन्द्र और राज्य सरकारों से उन्हें इसकी अनुमति नहीं मिली थी। इसका भी भंडाफोड़ हुआ कि इन शोधकर्ताओं में से एक सज्जन का नाम ब्लू था, जो मिनेसोटा विश्वविद्यालय में पाकिस्तानी विभाग के मुलाजिम थे। ये सज्जन राजस्थान नहर पर शोध कर रहे थे, और यह नहर, जैसा कि यह सिर्फ संयोग हो कि सीमा से थोड़ा ही हटकर ठीक हिन्द-पाक सीमा के समानान्तर ,बहती थी।

इन सारे भंडाफोड़ों के ऊपर से अरुणाचल के मुख्य आयुक्त, के. ए. ए. राजन ने खबर दी कि संघीय क्षेत्र के आदिवासी गाँवों में सी आई ए एजेन्टों

के द्वारा प्लास्टिक के ग्रामोफोन और कागज के बने रेकर्ड बांटे जा रहे थे।

१९७३ में कलकत्ता स्थित अमरीकी कॉनसुलेट के पीटर बर्ले अपनी करतूतों को लेकर कुख्यात हो गए थे। कई फसादी स्थलों पर उन्हें देखा गया था। अपनी ही जनता और भारत के खिलाफ जिस वक्त छोग्याल ने स्थिति नाजुक कर दी थी, यह महाशय सिक्किम में ही थे। याद रहे, छोग्याल की पत्नी अमरीकी है। १९७४ के प्रारम्भ में, मध्यावधि चुनाव के ठीक पहले, वे उड़ीसा में देखे गए। वे दार्जलिंग में पाए गए जब वहां के कुछ लोगों ने नेपाल, सिक्किम और उत्तर बंगाल के कुछ जिलों को मिलाकर 'हिमालय राज्य' का आन्दोलन छेड़ा था। एक ऐसे राज्य का निर्माण लम्बे अर्से से अमरीकी साम्राज्यवादियों का प्यारा सपना रहा है। इतने सारे भंडाफोड़ों के बावजूद बर्ले की उछल-कूदों में कोई कमी नहीं आई, हालांकि नई दिल्ली के एक संवाददाता सम्मेलन में अपने चारित्रिक ढंग से हेनरी किसिंजर यह भड़कीला वादा कर गये थे कि राजनयिक कायदे-कानूनों का उल्लंघन करते हुए अगर किसी को पाया गया तो उसे '४८ घंटे के अन्दर वापिस बुला लिया जायगा।' अन्ततः, मार्च १९७५ में जाकर ही उन्होंने यह धरती छोड़ी। पर छोड़ी भी क्या, उनका तबादला पास ही ढाका कर दिया गया, जिससे वे अपने मन-पसन्द आखेट क्षेत्र के नजदीक ही रह सकें।

दार्जिलिंग क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाले बर्ले अकेले आदमी नहीं हैं। अमरीकी सेना के मेजर टी० हंट ने अप्रैल १९७४ में भारत यात्रा की। वे 'अफसरों के लिए दक्षिण-पूर्व एशियाई विदेश क्षेत्र' से सम्बद्ध हैं, पता नहीं इसका अर्थ क्या है। वे नई दिल्ली में अमरीकी सैनिक सलाहकार के निजी अतिथि के रूप में आए थे, और सरकार के पास आधिकारिक रूप से उनके यहाँ आने की कोई सूचना नहीं थी। फिर भी, वे कलकत्ता, दार्जिलिंग और सिलिगुड़ी घूम आए। पूर्वी क्षेत्र में उनके कार्यक्रमों को निश्चित और निर्देशित करने वाले और कोई नहीं, महाशय पीटर बर्ले ही थे। जाहिर है, उनकी यात्रा हिन्दुस्तान के किसी फायदे के लिए नहीं रही होगी।

हिन्दुस्तान के अमरीकी राजनयिक दूतावासों में अब भी जाने-माने सी आई ए नुमाइंदे हैं। जून के आरम्भ में अखबारों में खबर छपी कि फिलिप एगी की पुस्तक 'कम्पनी के अन्दर—सी आई ए डायरी' (इस पुस्तक और इसके तथ्यों की विशेष चर्चा अगले अध्याय में है) में दिए गए सी आई ए एजेन्टों के नामों में से कुछ लोग हिन्दुस्तान में बहाल हैं।

ऐसे पहले व्यक्ति हैं पॉल डिलियन—नई दिल्ली स्थित अमरीकी दूता-

वास के प्रथम सचिव और काउन्सल। एगी ने उनका विवरण 'मेक्सिको सिटी में सोवियत विभाग की देख-रेख करने वाले सी आई ए अफसर' के रूप में दिया है। दूतावास के दूसरे व्यक्ति है, विलियम किम्सले। वे नई दिल्ली में दूसरी बहाली पर है। अपनी पहली अवधि मे उनका नाम १९६७ के आम चुनाव में सी आई ए कार्रवाइयों के लिए गठित विशेष दल के अन्तर्गत दर्ज था। वे पाकिस्तान और नेपाल में भी काम कर चुके हैं।

कलकत्ता स्थित अमरीकी कॉनसुलेट मे नॉरवर्ट गैरेट है। वे कन्सास विश्व-विद्यालय के स्नातक हैं। वे १९६२ मे सी आई ए मे दाखिल हुए। वे पहले पाकिस्तान, जॉर्डन तथा मिस्र मे काम कर चुके है।

बम्बई के अमरीकी कॉनसुलेट मे वेतनभोगी कर्मचारी के रूप मे काम करने वाले एडवर्ड गौचेफ सी आई ए के आदमी माने जाते है। वे कुछ दिनों तक हंगरी में थे, लेकिन उन्हें वह देश शायद बेहद गर्म महसूस हुआ।

मद्रास स्थित अमरीकी कॉनसुलेट के ज्या एस. ओ' जेनी इस वक्त भारत में बहाल सी आई ए के आदमी हैं, और उन्हें उसी रूप में जाना-पहचाना भी जाता है। वे उटाह विश्वविद्यालय के स्नातक है, और १९६२ में सी आई ए में बहाल हुए। वे इसके पहले मिस्र और नेपाल मे काम कर चुके हैं।

यह बात भी खुल चुकी है कि भारत में सी आई ए के एक नही, कम से कम चार प्रतिष्ठान हैं। वाशिंगटन त्रैमासिक काउन्टर स्पाई ने अभी हाल में कहा : 'जहाँ अमरीकी उपस्थिति व्यापक है, वहाँ अमरीकी कॉनसुलेटों और/या सैनिक अड्डों पर अतिरिक्त व्यवस्थापकीय अधिकारी बहाल किए जाते हैं। इन्हें मुख्य अड्डा अधिकारी (चीफ ऑफ बेस, सी ओ बी) नाम से पुकारा जाता है। मिसाल के तौर पर, हिन्दुस्तान मे सी आई ए चार ज्ञात स्थलों—नई दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास—पर अपने अड्डे डाले हुए है। नई दिल्ली मे चीफ ऑफ स्टेशन (स्टेशन प्रमुख) का दफ्तर है। प्रत्यक्षत:, मद्रास, कलकत्ता और बम्बई मे अड्डा अधिकारियों के निवास हैं।'

सम्बन्धित कार्यों की निर्देश तालिका

फिलिप एगी इन्डियाना के स्नातक हैं। १९५६ में सी आई ए ने उनकी भर्ती एक तरह से विश्वविद्यालय के अहाते में ही कर ली। वर्जिनिया राज्य के कैम्प पियरे स्थित सी आई ए प्रशिक्षण महाविद्यालय और अन्य कई सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों में कठोर प्रशिक्षण दिए जाने के बाद १९६० में उन्हें सी आई ए का पिटा-पिटाया, अच्छा खासा एजेन्ट बना दिया गया। वे इक्वेडोर देश भेजे गए जहाँ कियतो नामक जगह में खेमा डालकर उन्हें चारों ओर चौकड़ी भरनी होती थी। तीन साल बाद उनका तबादला उरुगी के मान्तोभिदियो नामक स्थान पर कर दिया गया। वहाँ भी वे तीन साल रहे। उसके बाद १९६८ के ओलम्पिक खेल की विशेष बहाली पर वे मेक्सिको सिटी गए। लेकिन सी आई ए, इसके इरादों, लातिन अमरीकी देशों में इसकी करतूतों को लेकर एगी के दिमाग में द्वन्द्व मचने लगा था; वे सी आई ए से खिन्न रहने लगे थे। ओलम्पिक के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया।

इसके बाद एगी ने अपना समय एक किताब लिखने में लगाया कि कैसे उनकी भर्ती की गई, उन्हें कैसी-कैसी तालीम दी गई और किन कामों की जिम्मेदारी सौंप कर उन्हें कियतो, मोन्तोभिदियो और मेक्सिको सिटी भेजा गया। इन जगहों में सी आई ए जिन कामों में हाथ डाले हुए था, पुस्तक में इसका भी ब्यौरा दिया गया है। उन्होंने इसका भी विवरण प्रस्तुत किया है कि यह जान लेने पर कि वे एजेन्सी के ऊपर एक किताब लिख रहे हैं, किस तरह सी आई ए ने उन्हें इस योजना से विमुख करने की कोशिश की। उन्हें पेरिस जाना पड़ा और किताब पूरी करने के लिए वहाँ एक तरह से गुप्तवास करना पड़ा। इतना कुछ कर-धर लेने के बाद उन्होंने पाया कि अमेरिका में उनकी किताब छापने को कोई तैयार नहीं था। अन्ततः, ब्रिटेन के पेंगुइन प्रकाशन ने 'इनसाइड द कम्पनी—सी आई ए डायरी' (कम्पनी के अन्दर—सी आई ए डायरी) नाम से उनकी पुस्तक छापी। सी आई ए कारनामों के तौर-

का प्रकाशन जिन्हें नकार पाना दल के लिए मुश्किल हो. लेकिन जो उसके लिए अहितकर हो, पार्टी कार्यकर्त्ताओं को मारने-पीटने तथा धमकाने के लिए गुंडा दस्तों का संचालन, सभाओं में हंगामा और भगदड़ फैलाने के लिए बदबू छोड़ने वाले बमों और ऐसे ही परेशान करने वाले नुस्खों का इस्तेमाल और स्थानीय जासूसी संस्था में बैठे अपने दलालों से इच्छित दमनकारी कदम उठवाने जैसी गतिविधियों का संचालन सी आई ए करता है।'

इसके अलावा समाजवादी देशों, खास कर रूस, के खिलाफ अलग गतिविधियाँ हैं। 'पहला नियम यह है कि पड़ाव सहायक एजेन्ट सोवियत दूतावास की चहारदीवारी से लगने वाली सारी सम्पत्ति खरीद लेने की घात में रहें··· जहाँ भी संभव होता है, रूसी अहाते के सारे फाटकों और अन्दर के बगीचों पर छिपी हुई नजरें मुस्तैद रखी जाती हैं' ···हजार तिकड़मों से यह सब चालू रखा जाता है। उद्देश्य रहता है : सही जानकारी हासिल करना और उनके खुफियों में से अपना आदमी निकाल लेना। एगी का कहना है : 'अन्तिम लक्ष्य यही रहता है : सोवियत और उनके पिछलग्गू अफसरों को अपनी ओर जासूसी पर बिठा देना, उन्हें अपना एजेन्ट बना लेना।' यह काम तभी किया जा सकता है जब उनके बारे में सब कुछ पता हो, इसलिए नियुक्ति पर आने के बहुत पहले से सी आई ए के लोग उनके पीछे लगे रहते हैं। 'अगर मास्को स्थित भारतीय दूतावास से सोवियत विदेश मंत्रालय ने इवान इवानोविच के लिए राजनयिक पारपत्र की माँग की तो नई दिल्ली का सी आई ए स्टेशन भारत सरकार के पत्राचारों के मार्फत बहाली की खबर पहले ही हासिल कर सकता है।'

मनोवैज्ञानिक और अर्धसैनिक गतिविधि सिर्फ गुप्त सूचनाओं को एकत्रित करने जैसे काम से थोड़ा अलग है। इन कार्रवाइयों के जरिए इच्छित परिणामों तक पहुँचा जाता है। एगी का कहना है कि अमेरिका के सरकारी महकमों में सिर्फ सी आई ए को अंध प्रचार अभियान चलाने का अधिकार प्राप्त है। अंध प्रचार अभियान में सूत्रहीन, कपोल-कल्पित सामग्रियों या कल्पित सूत्र से हासिल की गई सामग्रियों या सही सूत्र के नाम से झूठी सामग्रियों का प्रचार और प्रसार आता है। यह काम कैसे होता है इसका बखान वे इन शब्दों में करते हैं : 'एक देश में साम्यवादी प्रभाव से उत्पन्न सवालों को "एक का खतरा सबों का खतरा" नाम देकर अन्तर्राष्ट्रीय समस्या के रूप में पेश किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, करॉकास का सी आई ए पड़ाव अपने बोगोटा पड़ाव को वेनिजुएला की एक गुप्त साम्यवादी

योजना के बारे में सूचित कर सकता है। वेनिजुएला के एक मध्यवत अधिकारी का हवाला देते हुए बोगोटा के स्थानीय प्रचार एजेन्ट इस खबर को वहाँ फैला दे सकते हैं। कोलम्बिया के अखबार इस खबर को वहाँ से उठाकर क्विटो, लिमा, लापाज, सेन्टियागो और सभवत: ब्रेजिल के भी सी आई ए अड्डों तक इसका प्रसारण कर दे सकते हैं। कुछ दिनों के बाद इन स्थानों के अखबारों में इस समस्या पर सम्पादकीय आने शुरू होते हैं और साम्यवादियों के खिलाफ दमनकारी कदम उठाने के लिए वेनिजुएला की सरकार पर दबाव जोर पकड़ने लगता है।'

सी आई ए ने हर अन्तर्राष्ट्रीय लोकतांत्रिक सस्था के समानान्तर अपनी एक सस्था खड़ी कर दी है। *एगी का कहना है कि 'जहाँ तक युवा और छात्र* आन्दोलन का सवाल है, सोवियत रूस समर्थित दो संस्थाओं से मुठभेड़ लेने के लिए सी आई ए ने वर्ल्ड असेम्बली ऑफ यूथ (विश्व युवक परिषद) और *इन्टरनेशनल स्टूडेन्ट कॉनफरेन्स (अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सभा) नाम से दो* अन्तर्राष्ट्रीय सस्थाएँ खड़ी की।' सी आई ए को अन्य रचनाओं में आई सी एफ टी यू और क्षेत्रीय स्तर पर इनसे जुड़ी हुई संस्थाएँ, इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट *(अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार सघ) और अन्तर्राष्ट्रीय जूरी* आयोग के नाम गिनाए जा सकते है। 'अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार सघ की गतिविधियों से एजेन्सी को मिलने वाले फायदों में एक है भविष्य मे प्रचार एजेन्ट बनने वाले लोगों को छाँटना *और उन्हें अपने काम की ओर प्रेरित करना।'* और 'अन्तर्राष्ट्रीय जूरी आयोग में सी आई ए की पहली दिलचस्पी तो इसी बात से है कि वह आई ए डी एल (इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक लायर्स) *का विकल्प प्रदान करता है। इसके अलावा साम्यवादी भूखंड मे* मानव अधिकारों की अवहेलना जैसे छूने वाले मुद्दों पर विशिष्ट प्रचार साहित्य तैयार करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।'

फिर आती हैं राजनीतिक हरकतें। इन हरकतो की परिभाषा देते हुए एगी कहते हैं: 'साम्यवाद के खिलाफ कोई खास नीति अपनाने की दिशा में विदेशी सरकार को प्रोत्साहित करने की तिकड़मे राजनैतिक कार्रवाइयो के अन्तर्गत आती हैं।' इन कामों मे पैसे लगाकर और रायमशविरा देकर उन विदेशी राजनेताओं को तैयार तथा प्रोत्साहित करना आता है जिनके जरिए सरकारी नीति में तोड़-मरोड़ करवाकर इच्छित परिणाम हासिल किया जा सकता है। विपरीततः इस योजना के तहत वे नुस्खे भी अख्तियार किए जाते

हैं जिनसे अवांछित नेताओं के प्रभाव को या तो खत्म किया जा सके या उन्हें नीचा दिखाया जा सके।

एगी का कहना है: 'वैसे राजनैतिक कार्रवाइयों की शुरुआत द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद १९४०वें दशक के अन्तिम सालों में फ्रांस और इटली की साम्यवाद विरोधी राजनैतिक पार्टियों को चुनाव में पैसे देने से हुई, लेकिन अब उस तरह का काम अविकसित देशों में ज्यादा प्रचलित है, क्योंकि इन देशों की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ साम्यवादी विकास के लिए सही वातावरण तैयार करती हैं। स्पष्टतः, इन राजनैतिक कार्रवाइयों के मानवीय तत्त्व तो राजनैतिक पार्टियाँ, राजनेता और सैनिक अफसर ही हैं लेकिन मनोवैज्ञानिक और अर्धसैनिक कार्रवाइयों में लगे हुए एजेन्ट भी—जिनमें मजदूर, छात्र और युवक तथा संचार क्षेत्रों में लगे लोग भी शामिल हैं—किसी खास राजनैतिक लक्ष्य के लिए अक्सर इस्तेमाल किए जाते हैं।'

किसी खास देश में सी आई ए की गतिविधियों की सही प्रकृति और दायरा अमेरिका के साथ उसके सम्बन्धों तथा विश्व मुद्दों पर उसके रुखों के अनुसार बदलता रहता है। उसकी एक झाँकी इक्वेडोर के लिए दी गई सम्बन्धित कार्रवाइयों की तालिका से (यह प्रमुखताओं और उद्देश्यों का एक आम ब्योरा होता है जिसे सी आई ए हर पड़ाव के लिए तैयार करता है) मिल सकती है। यह तालिका एगी के कच्चे चिट्ठों की सामग्री से ली गई है।

प्रमुखता अ

अमेरिका की खिलाफत करने वाली साम्यवादी और अन्य राजनैतिक संस्थाओं की शक्ति और मंसूबों पर सूचना जुटाओ और भेजो। इसमें इसका भी जिक्र रहना चाहिए कि उनके समर्थन तथा निर्देशन में किन अन्तर्राष्ट्रीय सूत्रों का हाथ है तथा इक्वेडोर की सरकार में उनका कैसा दबदबा है।

लक्ष्य १: इक्वेडोर की साम्यवादी पार्टी (पी सी ई), इक्वेडोर समाजवादी पार्टी (पी एस ई क्रांतिकारी), इक्वेडोर युवक साम्यवादी (जे सी ई), इक्वेडोर युवक क्रांतिकारी संघ (यू आर जे ई) तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं के उच्चतम संभवस्तर पर अपना एजेन्ट बिठाओ या कोई और तकनीकी घुसपैठ करो।

लक्ष्य २: इक्वेडोर के क्यूबाई दूतावास में अपना एजेन्ट बिठाओ या कोई और तकनीकी घुसपैठ करो।

प्रमुखता ब

इक्वेडोर की सरकार की स्थिरता और विपक्षी राजनैतिक दलों की ताकत तथा इरादों पर गुप्त सूचना जुटाओ और उन्हें भेजो।

उद्देश्य १ : शासन, सुरक्षा सेवाओं और सत्तारूढ़ राजनैतिक संस्था के उच्चतम स्तर पर एजेन्ट बनाने की कोशिश करो।

उद्देश्य २ : विरोधी राजनैतिक दलों, खासकर विरोधी दलों के चहेते सैनिक अधिकारियों के बीच एजेन्ट बनाने की कोशिश करो।

प्रमुखता स

प्रचार और मनोवैज्ञानिक सामरिक कार्रवाइयों के जरिए . (१) अमेरिका विरोधी और साम्यवाद समर्थक प्रचार को मिटाने के लिए अपने विचारों और सूचनाओं को फैलाने की कोशिश करो; (२) प्रमुख जन संस्थाओं में साम्यवादी या अतिवामपंथी प्रभावों को मिटाओ या गैर साम्यवादी नेतृत्व में चलने वाली वैकल्पिक संस्थाओं की स्थापना करो या उनका भरण-पोषण करो।

उद्देश्य १ : सर्वाधिक प्रभावकारी स्थानीय संचार-प्रचार तंत्र में अपना उचित प्रचार साहित्य घुसेड़ने की कोशिश करो।

उद्देश्य २ : राजनैतिक, मजदूर, युवा और छात्र संस्थाओं, खासकर इक्वेडोर विश्वविद्यालय छात्र संघ (एफ ई यू ई), इक्वेडोर कामगर महासंघ (सी टी ई) जैसी संस्थाओं में जहाँ साम्यवादी प्रभाव सर्वाधिक है, लोकतान्त्रिक नेताओं का समर्थन करो। उन लोकतान्त्रिक नेताओं की भी मदद करो जो साम्यवादी तोड़-फोड़ के खिलाफ लड़ने को उद्यत हो सकते हैं।

इक्वेडोर समाजवादी देश नहीं है, यहाँ की सरकार चिले में भूतपूर्व अयादे सरकार की तरह की भी कोई हस्ती नहीं है। फिर भी उस देश की गतिविधियों में कोई भी ऐसा सामाजिक क्षेत्र नहीं है जिसमें सी आई ए की रुचि न हो, जहाँ उसकी उपस्थिति न हो। यह कोई अपवाद नहीं बल्कि भारत समेत दुनिया के सारे मुल्कों के निस्बत यह आम नियम है। इसकी एक झलक उन्हीं के लिए बनाई गई उसी की तरह की सबधित कार्रवाइयों की तालिका से मिल सकती है। एगी ने इसका विवरण निम्नलिखित ढंग से दिया है :

प्रमुखता अ

अमेरिका की खिलाफत करने वाली साम्यवादी और दूसरी राजनैतिक

संस्थाओं की ताकत और इरादों पर सूचना जुटाओ और उन्हें भेजो। इसमें इसका भी जिक्र होना चाहिए कि उनके समर्थन और दिशा-निर्देशन में किन अन्तर्राष्ट्रीय सूत्रों का हाथ है।

उद्देश्य १ : उरूगी में क्यूबा, रूस और अन्य साम्यवादी देशों के दूतावासों में अपना एजेन्ट बिठाने की कोशिश करो।

उद्देश्य २ : उरूगी की साम्यवादी पार्टी, उरूगी का युवा साम्यवादी, वामपंथी मुक्ति मोर्चा (एफ आई डी ई एल), उरूगी कामगर महासंघ, उरूगी की समाजवादी पार्टी (क्रांतिकारी शाखा), विश्वविद्यालय छात्र संघ, उरूगियाई क्रांतिकारी आंदोलन (एम आर ओ) और अन्य संबंधित संस्थाओं के उच्चतम स्तर पर अपना एजेन्ट बिठाओ या कोई और तकनीकी घुसपैठ करो।

उद्देश्य ३ : उरूगी में काम करने वाली पेरोन समर्थक अर्जेन्टीना की आतंकवादी और वामपंथी संस्थाओं, पारागुए की साम्यवादी पार्टी, पारागुए के राष्ट्रीय मुक्ति संयुक्त मोर्चा और उरूगी से काम करने वाली तीसरे देशों की ऐसी ही संस्थाओं में एजेन्ट बिठाओ या कोई और तकनीकी घुसपैठ करो।

प्रमुखता ब

उरूगी की सुरक्षा सेवाओं, खासकर वहां के सैनिक खुफिया विभाग तथा मोन्तोविदियो पुलिस विभाग के साथ सम्पर्क सूत्र स्थापित करो।

उद्देश्य १ : सम्पर्क सूत्रों और दलालों के माध्यम से स्टेशन की अपनी कार्रवाइयों के लिए गुप्त सूचना जुटाने के साधनों की पूर्ति करो तथा उनके जरिए अमरीकी सरकार तथा उरूगी में साम्यवादी आंदोलन से संबंधित उरूगी सरकार की नीतियों पर सूचना जुटाओ।

उद्देश्य २ : उरूगी सरकार को वामपंथी और उरूगी में उससे संबंधित आन्दोलनों से सूचित रखने के लिए दलालों और अन्य सम्पर्क सूत्रों के साथ गुप्त सूचनाओं का आदान-प्रदान कार्यक्रम चलाते रहो। जहां तक मुमकिन हो स्वतंत्र सूत्रों से भी ऐसी सूचना भिजवाने की कोशिश करो (इसका मतलब यह है कि साम्यवादी पार्टी—पी वी पी—पर उत्तेजक खबरें मढ़ो और उन्हें इन सूत्रों से प्रसारित करवाओ)।

उद्देश्य ३ : स्टेशन की अपनी कार्रवाइयों में मदद पहुंचाने के लिए उरूगी की सुरक्षा सेवाओं में बैठे अपने लोग विकसित तरीकों से गुप्त सूचना जुटा और पहुँचा सकें, इसके लिए वहां की सुरक्षा सेवाओं के साथ मिलकर षड्यंत्र चलाओ।

उद्देश्य ४ : उरुग्वे की सुरक्षा सेवा वहां के साम्यवादी आंदोलन पर सूचना जुटाने में हर तरह से सक्षम बने, इसके लिए उन्हें तालीम, दिशा-निर्देश और आर्थिक सहायता देकर विकसित करने की कोशिश करो।

प्रमुखता स

गुप्त कार्रवाइयों के जरिए : (१) सूचना और विचारों का प्रचार-प्रसार करके अमेरिका विरोधी तथा साम्यवाद समर्थक प्रचार को जब्त करो, (२) मुख्य जन संस्थाओं में साम्यवादी या अति वामपंथी प्रभावों को मिटाओ या गैर-साम्यवादी नेतृत्व में चलने वाली वैकल्पिक संस्थाओं की स्थापना करो और उनका भरण-पोषण करो।

उद्देश्य १ : प्रेस, रेडियो और टेलीविज़न समेत अन्य सर्वाधिक प्रभावशाली संचार सेवाओं में अपने काम का प्रचार साहित्य घुसेड़ो।

उद्देश्य २ : मजदूर, युवा और छात्र संस्थाओं में (खासकर उरुग्वे विश्वविद्यालय छात्र संघ और उरुग्वे कामगर महासंघ जैसे क्षेत्रों में जहां साम्यवादी प्रभाव सर्वाधिक है) लोकतान्त्रिक नेताओं का समर्थन करो। उन लोकतान्त्रिक नेताओं को भी समर्थन दो जो साम्यवादी तोड़फोड़ के खिलाफ लड़ने के लिए उकसाए जा सकते हैं।

तो यह तरीका है सी आई ए का। हिन्दुस्तान के किन राजनैतिक दलों और नेताओं को सी आई ए का आश्रय मिला हुआ है? जैसा कि पहले उल्लेख हुआ है, संसद में स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ पर यह आरोप लगाया गया था कि १९६७ के चुनाव में उन्हें सी आई ए से पैसे मिले थे; कांग्रेस (ओ) के अतुल्य घोष और सी. बी. गुप्ता पर भी यही आरोप लगे थे। १० दिसम्बर, १९७३ को टाइम्स ऑफ इण्डिया की एक खबर में कहा गया : "बंगला देश संकट के समय भारत सरकार के अन्दर सी आई ए का एक 'उच्च स्तरीय' संवादिया बैठा हुआ था। प्रत्यक्षतः, यह संवादिया भारत सरकार के अन्दर संकट को लेकर लिए जाने वाले निर्णयों से सी आई ए को भली-भांति सूचित रखता था।" सी आई ए के द्वारा विश्व संस्था से जुड़ी हुई समानान्तर मजदूर, युवा एवं छात्र संस्थाएँ खड़ी की गई हैं। अभी हाल में, पत्रकार संघ में फूट पड़ने के कारण दक्षिणपंथी तत्वों ने अपना अलग संघ बना डाला है। ढेर सारे अखबार ऐसी सामग्री छापते हैं जिन पर सी आई ए की मुहर-सी लगी दीखती है। एक दक्षिणपंथी नेता के सम्पादन में चलने वाले साप्ताहिक के एक विशेष कालम की सामग्री सी आई ए के अलावा और किसी की भेंट नहीं हो सकती है।

वामपंथी एवं लोकतांत्रिक ताकतों की एकता पर बल देने वाले कांग्रेसियों के खिलाफ तो एक सुसंचालित अभियान ही छिड़ा हुआ है। अखबार का एक हिस्सा छींटाकशी करते हुए उन्हें सी पी आई-समर्थक तत्त्व कहता है और उनके विरुद्ध निन्दा अभियान चलाने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता। इसी के साथ-साथ, सत्तारूढ़ दल के अन्दर दक्षिणपंथी तत्त्वों की स्थिति मजबूत करने और उनका रूप निखारने की कोशिश भी हर वक्त चालू रहती है। ऐसी कार्रवाइयों में पैसे भी लगाए जाते हैं। २३ दिसम्बर, १९७३ को **करेन्ट** साप्ताहिक ने उड़ीसा की मुख्य मंत्री, नन्दिनी सत्पथी को उद्धृत करते हुए कहा : "विपक्षियों को विदेशी पैसा मिल रहा है और मेरे पास ऐसी विश्वसनीय सूचना है कि उन्हें सी आई ए का पैसा मिलता है। मुझे पता है कि सी आई ए से संबंधित लोग प्रांत में आते रहे हैं और उन्हें आर्थिक मदद पहुँचाते रहे हैं। उनका उद्देश्य है कि उड़ीसा की कांग्रेस पार्टी में फूट डाली जाय।"

इक्वेडोर और उरूगी के लिए बनाई गई सम्बन्धित कार्यक्रमों की तालिकाओं में फिलिप एगी ने जिन कार्रवाइयों का हवाला दिया है, वे सब यहाँ हिन्दुस्तान में भी उसी तरह चालू हैं; हर छोटी-बड़ी बात, जिसका खयाल वहाँ रखा जाता है, यहाँ भी रखा जाता है।

एक एजेण्ट की डायरी

भेदियों और उखाड़-पछाड़ की राजनैतिक कार्रवाइयों में हिस्सा लेने वाले लठैतों और दलालों की भर्ती करने में सी आई ए कितना सफल हो पाता है? अगर हम फिलिप एगी की सी आई ए डायरी को प्रमाण मानें, तो कहना पड़ेगा कि वह इस काम में काफी सफल रहता है। यहाँ हम उसकी कुछेक वास्तविक करतूतों का मोटामोटी सर्वेक्षण करेंगे।

मिसाल के तौर पर, सी आई ए ने क्वितो की स्थानीय पुलिस के गुप्तचरी विभाग के प्रमुख की भर्ती कर ली थी। राष्ट्रीय पुलिस सदरमुकाम की विशेष सेवा के नाम से वहाँ इस विभाग को जाना जाता है। उसका नाम था पुलिस कैप्टन जोस वर्गाज़, सी आई ए ने उसका सकेत-नाम दे रखा था, इकँमोरस-२। एगी का कहना है: 'जन सुरक्षा की आड़ लेकर हमारा अफसर, वेदरवैक्स एक तरह से अपना सारा काम-धाम वर्गाज़ के साथ ही करता है। यह वर्गाज़ कुछ दिनों पहले वेलास्को समर्थक नौजवान अफसरों के एक गुप्त दल की रहनुमाई करने के आरोप में दिक्कत में पड़ गया था (उस वक्त वेलास्को वहाँ के राष्ट्रपति थे)। सच पूछा जाय तो इकँमोरस सम्पर्क सूत्र कायम करनेवाली कार्रवाई है, लेकिन हकीकत यह थी कि वहाँ की पुलिस गुप्तचरी शाखा का सम्पूर्ण संचालन सी आई ए के हाथ में था। सी आई ए के स्टेशन प्रमुख, नोलेंड से वर्गाज़ को वेतन मिलता है, सहायक एजेन्टों और अन्य खर्चों के लिए उसे अतिरिक्त राशि दी जाती है। पड़ाव की ओर से वर्गाज़ को फोटो गीयर और सुनने वाले छोटे-मोटे यन्त्रों की तकनीकी सहायता भी मिली है और हम लोगों ने उसके मुख्य तकनीसियन, लेफ्टिनेन्ट लुई सैण्डोवाल को तालीम भी दी है। वर्गाज़ नौजवान और थोड़ा हुड़दंग है, लेकिन साथ ही साथ काफी याराना, मिलनसार तथा कुशाग्र भी है। वैसे राष्ट्रीय पुलिस में दीर्घकालीन पुनर्पैठिग के रूप में उसे उत्कृष्ट आदमी माना जाता है, लेकिन भविष्य कार्रवाइयों में भी लगाया जा सकता है। निःसन्देह उसक

पड़ाव के प्रति है, और सी आई ए ने जब कभी उसके पुलिस ओहदे की आड़ में कोई काम करने की अनुमति माँगी है, उसने खुशी-खुशी इसकी इजाजत दी है।'

लैफ्टिनेन्ट कर्नल रोजर पैरीडीज क्विटो में दूसरा एजेन्ट था और उसका संकेत-नाम इकजैक था (इक्वेडोर के सारे संकेत नाम 'इक' से शुरू होते हैं)। वह इक्वेडोरियाई सैनिक गुप्तचरी शाखा (एस आई एम ई) का प्रमुख था और उसकी तालीम अमेरिका के फोर्ट लेवनवर्थ में अमरीकी फौज के हाथों हुई थी। सी आई ए के साथ काम करने के दौरान एक बार उसने फौज से इस्तीफा देकर पूरा समय एजेन्सी का काम करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव मान लिया गया और उसे चौकसी तथा आम छानबीन करने वाले एक सी आई ए दल का सुपरवाइज़र बना दिया गया। दिलचस्प बात यह है कि वह एस आई एम ई संस्था का इस्तेमाल आड़ की तरह तथा कार्रवाई में लगे दूसरे एजेन्टों के प्रत्यक्ष उत्तरदायी के रूप में करता था। पैरीडीज का एक सहायक एजेन्ट था जो सरकारी मंत्रालय (अपने देश के गृह मन्त्रालय का प्रतिरूप) में पहचान-पत्र शाखा का प्रमुख था। चूँकि हर नागरिक को अपना नाम वही में दर्ज कराकर एक सरकारी पहचान-पत्र बनाना पड़ता है, इसलिए आग्रह करने पर वह एक तरह से किसी भी इक्वेडोर निवासी का पूरा नाम, जन्म-स्थान और जन्म-तिथि, माँ-बाप का नाम, पेशा, पता और फोटो हाजिर कर देता है। एगी का कहना है कि पड़ाव के लिए इस सहायक एजेन्ट की मदद का सबसे बड़ा महत्त्व यह था कि उससे लिक्स सूची बनाने में सहूलियत होती थी। लिक्स सूची में गैर-समाजवादी देशों के प्रमुख साम्यवादियों और अन्य वामपंथियों का सिलसिलेवार ब्योरा होता है। यह सूची सभी सी आई ए पड़ावों के लिए अत्यावश्यक सामग्री है। 'संकट के समय' स्थानीय सरकार के हाथ यह फेहरिस्त पेश कर दी जाती है जिससे 'खतरनाक लोगों की एहतियाती गिरफ्तारी' की जा सके। लेकिन यह फेहरिस्त सरकार की माँग पर ही सौंपी जाती है। इसका दूसरा उपयोग भी है। संकट के समय इसका इस्तेमाल नरसंहार के लिए भी किया जा सकता है, जैसा कि मुक्ति संघर्ष की विजय के ठीक पहले बंगला देश के बौद्धिकों के साथ हुआ।

सी आई ए के तीसरे एजेन्ट का नाम रखा गया था इकस्टसी, जो क्विटो के केन्द्रीय पोस्ट ऑफिस में बाहर से आने वाली हवाई डाक शाखा का प्रमुख था। वह पड़ाव सूचना अफसर, जॉन बैकन के हाथ समाजवादी देशों से आनेवाली सारी डाक सुपुर्द कर देता था। बैकन भाप लगाकर चिट्ठियों को खोलता था,

पढ़ता था और उसी दिन उन्हें लौटा भी देता था।

सी आई ए के लिए कलम की भड़ुआगिरी करने वाले एक चौथे एजेन्ट का संकेत-नाम इक्योर्म था। एगी कहते हैं : "स्टेशन की तरफ से प्रचार सामग्रियों को जगह-जगह घुसेड़ने की प्रमुख जिम्मेदारी गुस्तावो सालगादो की है। वह पहला साम्यवादी था, लेकिन इन दिनों देश का वह प्रमुख उदारवादी राजनैतिक पत्रकार माना जाता है। उसका कालम हफ्ते में कई बार क्वितो के मुख्य दैनिक अखबार एल कमर्सियो तथा कई प्रान्तीय अखबारों में छपता है। विस्तृत प्रकाशन के लिए सालगादो छद्म नाम से भी लिखता है। अपने पड़ाव दफ्तर में बैठे-बैठे मर्जी के मुताबिक तोड़-मरोड़ करके जॉन बेंकन इक्वेडोर और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर प्रारूप तैयार करता है और फिर उसे एजेन्ट के पास अन्तिम सुधार के लिए भेज देता है (इस काम की जिम्मेदारी भी जॉन बेंकन पर ही है)। प्रचार सामग्रियों पर जारी किये गए सदरमुकाम के निर्देशों का भारी-भरकम पुलिंदा भी उसके पास भेजा जाता है। दूसरे पड़ावों के आग्रह पर सालगादो अन्य देशों की घटनाओं पर भी अपनी टिप्पणी भेजता रहता है, जिन्हें बाद में वहाँ प्रसारित किया जाता है। इक्वेडोर की साम्यवादी और समानधर्मी पार्टियों में घुसपैठिए एजेन्टों से मिलने वाली गुप्त सूचनाओं के प्रकाशन तथा तोड़-फोड़ वाली गतिविधियों में साम्यवादी हाथ के रहस्योद्घाटन जैसे कामों के लिए भी सालगादो अत्यन्त उपयोगी है (इन सारी सामग्रियों को पार्टी से मिलने वाली अन्दरूनी खबर कहकर प्रसारित किया जाता है।) जितना काम, एजेन्ट को उसी के अनुसार पैसा मिलता था।"

हथपर्चे की छपाई और वितरण तथा दीवार-लेखन जैसी गतिविधियाँ भी प्रचलित थीं। लेकिन राजनैतिक कार्रवाई का सबसे महत्त्वपूर्ण काम कजर्वेटिव पार्टी से सम्बन्धित था। यहाँ पूरी तौर से एगी को उद्धृत करना ही उचित होगा :

"कजर्वेटिव पार्टी और सोशल क्रिश्चियन मूवमेन्ट के चुनिंदा नेताओं को पैसे और राय मशविरों से नाथे रहना पड़ाव की साम्यवाद-विरोधी कार्रवाइयों का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। इस योजना के विकास का श्रेय पोंक सरकार में पड़ाव के सबसे महत्त्वपूर्ण घुसपैठिए, रेनातो पेरेज द्रुएत को जाना चाहिए, जो पोंक के नीचे प्रशासन का महासचिव था। बाद में वह क्वितो स्थित अपनी यात्रा एजेन्सी की देखरेख में लग गया। पेरेज के माध्यम से पड़ाव इन दिनों साम्यवाद विरोधी प्रचार तथा सोशल क्रिश्चियन मूवमेंन्ट की राजनैतिक कार्रवाइयों की वित्तीय सहायता पहुँचाता है। पेरेज खुद सोशल क्रिश्चियन ... का एक नेता भी है।

"१९६० चुनाव अभियान के पूर्व पेरेज़ ने नोलेंड के एक युवा इंजीनियर, औरेलियो डैविला कजास, इक्वेटर-१ का समर्थन प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव की अहमियत को पहचानकर नोलेंड इस युवा इंजीनियर से मेल-जोल बढ़ाने लगा। डैविला ने कंजर्वेटिव पार्टी में अपनी गतिविधि तेज कर दी और पड़ाव के पैसे के बल पर वह जून के चुनाव में नेपो के सुदूरवर्ती तथा छिटपुट आबादी वाले अमेजोनियाई प्रांत का प्रतिनिधि बन चैम्बर ऑफ डिप्युटिज में शामिल हो गया। डैविला इस वक्त कंजर्वेटिव पार्टी का सबसे उदीयमान युवा नेता है और कैथोलिक चर्च के मठाधीशों के साथ बेहद नजदीकी से घुला-मिला आदमी है। राजनीति में कंजर्वेटिव पार्टी कैथोलिक चर्च की तरफदारी करती है। डैविला एक बेबाक और जुझारू साम्यवाद विरोधी है। साथ-ही-साथ नोलेंड की यह धारणा है कि सामाजिक सुधार पर उसका दृष्टिकोण बेहद प्रखर और संतुलित है। अपनी निजी संस्था खड़ी करने में अब उसे पड़ाव की ओर से मदद मिल रही है। कैथोलिक विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति में उसकी संस्था की शाखाएँ खुल रही हैं। नोलेंड और डैविला के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान तथा पैसे के लेन-देन का सम्पर्क-सूत्र रेनातो पेरेज़ है। लेकिन आपातकालीन स्थितियों में पड़ाव की सचिव-टाइपिस्ट, बारबरा स्वेले के हाथ भी संदेश और पैसे भिजवाए जाते हैं। बारबरा डैविला के ही मकान के एक हिस्से में किराए पर रहती है।

"रेनातो पेरेज के ही माध्यम से नोलेंड ने रैफेल एरिजागा से भी मेल-जोल बढ़ाकर बाद में उसे इक्वेटर-२ के रूप में भर्ती किया। एरिजागा क्वेंका में कंजर्वेटिव पार्टी—इक्वेडोर की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी—का प्रमुख नेता है। इसी एजेन्ट के माध्यम से नोलेंड एजेन्ट के पुत्र, कार्लोस एरिजागा वेगा (इक्वेटर-३) समेत क्वेंका के अन्य कंजर्वेटिव पार्टी उम्मीदवारों को [illegible] सहायता कर रहा था। कार्लोस वेगा आजुए की प्रान्तीय समिति का सदस्य चुन लिया गया। क्वेंका आजुए प्रांत की राजधानी है। [illegible] की इस शाखा के साथ हर समय सम्पर्क बनाये रखना कठिन है, लेकिन आम तौर पर बातचीत के लिए नोलेंड क्वेंका जाता रहता है; [illegible] मुख्य एजेन्ट क्विटो भी आ जाता है। इस योजना के पैसे से [illegible] प्रचार, क्वेंका विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति और स्थानीय [illegible] के युवा दलों की [illegible] [illegible] [illegible] है।

"इक्वेडोर के चौथे सबसे बड़े नगर, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] के लिए [illegible] एक और एजेन्ट की [illegible]

निकारा की एक भौगीर राजधानी है। इस एजेन्ट का नाम है, जार्ज गोतॅयर
(इंकाहा-८)। वह आदमी वाशिंगटन मे अन्तर-अमरीकी सुरक्षा बोर्ड की
नौकरी से सेवा-निवृत्त होकर घर लौट आया है। वह यहाँ फौजी कर्नल था।
सोमोजा पोक समर्थक उन सैनिक अफसरों की सूची में है जिनकी अब छुट्टी
हो रही है। १९६६ में वह सैनिक सेवाओं के कार्यकारी निदेशक के रूप में
चुना गया था, लेकिन एक माह के बाद ही पोक ने उसे अन्तर-अमरीकी सुरक्षा
बोर्ड के लिए मनोनीत कर दिया। वाशिंगटन में सी आई ए मदरमुकाम के
एक अफसर ने, जिसका काम सुरक्षा बोर्ड के प्रतिनिधियों के बारे में जानकारी
हासिल कर भविष्य के एजेन्टों को छानना था, उससे मेलजोल बढ़ाया। गोतॅयर
पर एक रिपोर्ट लिखी गई और उसे रिक्ती पड़ाव प्रमाणित कर दिया गया।
नोलॅड ने गोतॅयर से सम्पर्क की शुरुआत की है और मनागुआ में साम्यवाद
विरोधी प्रचार और कार्रवाइयों में इस एजेन्ट का उपयोग करने के लिए
सी आई ए का हेडक्वार्टर विभाग अनुमति लेने की प्रक्रिया में है। इस नये एजेन्ट
को विशेष महत्त्व का इसलिए माना जा रहा है कि मनागुआ के मेयर क्रांतिकारी
सत्तावादी है और वे नगरपालिका शासन की सुविधाओं को अति वामपंथी
तत्त्वों की घुसपैठ कराने में इस्तेमाल करते हैं। गोतॅयर में बेहद संभावना है
क्योंकि अगले चुनाव में अगर पोक पुन निर्वाचित हुए तो यह आदमी रक्षा-
मंत्री बन सकता है। इस बीच फौजी तबकों में असंतोष की खबरों और
अफवाहों से वह सी आई ए को सूचित रख सकता है।"

मगर इतना ही काफी न हो, तो मजदूर क्षेत्र की कार्रवाइयों पर एक
सरसरी निगाह डालिये। इस कार्रवाई का संकेत-नाम इक्लूम है: 'क्विती
पड़ाव की गतिविधियों और कार्यक्रमों में मजदूर क्षेत्र का काम ढीलाढाला
है, हालांकि राजनैतिक कार्रवाइयों में लगे एजेन्ट, ओरेलियो डैविला और
मैनुएल नराजो में ऐसे कामों की बेहद संभावना है (मैनुएल नराजो दक्षिण-
पंथी समाजवादी नेता है)। फिर भी, मजदूर वर्ग और गरीब लोगों के बीच
वेलास्को की लोकप्रियता को देखते हुए नोलॅड वेलास्किवस्ता आन्दोलन में
अपने एक दीर्घकालीन एजेन्ट, जोस वैकुरो दि ला वाले को समर्थन देता रहा
है। वैकुरो राष्ट्रपति बनने की महत्त्वाकांक्षा पाले हुए है और वह कैथोलिक
चर्च की मिलीभगत में चलने वाले वेलास्किवस्ता आंदोलन का नेता है। वह
अभी वेलास्को के अधीन श्रम एवं समाज कल्याण मंत्री है और नोलॅड
आशा है कि उसकी मदद से गैर-साम्यवादी मजदूर संस्थाओं को
बनाया जा सकता है। लेकिन चर्च के साथ उसकी घनिष्ठता और

एक तरह से उसके काम में आड़े आ रहा है। उसके इस स्वरूप के चलते मजदूर क्षेत्र की कार्रवाइयों में उसकी संभावना सिर्फ चर्च नियंत्रित कैथोलिक मजदूर केन्द्र (सी ई डी ओ सी) तक सीमित है। यह केन्द्र छोटे-मोटे कामगरों और दस्तकारों की एक लघु संस्था है। वैकुरो नोर्नेड से तनख्वाह पाता है। इसके अलावा अपनी संस्था का खर्चा चलाने तथा सरकार और वेलास्किवस्ता राजनीति की तरफदारी करने के लिए उसे अलग से पैसा दिया जाता है।'

तो देख लीजिए, वेतन और जेब खर्चा लेकर मंत्रीगण भी सी आई ए का काम करते हैं। लेकिन महत्त्वपूर्ण यह है कि ऊपर की बातों को पढ़कर अपने भी देश के कई राजनीतिज्ञों और मजदूर नेताओं का नाम दिमाग में घूमने लगता है। उनकी शक्लें पेरेज, उंविला, एरिजागा, गोर्तेयर तथा वैकुरो से बेहद मिलती-जुलती हैं। हमें इस बात का पता नहीं है कि सी आई ए के असल एजेन्ट कौन हैं, कौन नहीं हैं। लेकिन वे जिस तरह की राजनीति के हिमायती हैं, अपने को ऊपर उठाने के लिए वे जिन तिकड़मों का सहारा लेते हैं, सत्तारूढ़ दल के प्रगतिशील तत्वों की भर्त्सना करने में वे जो मुस्तैदी दिखाते हैं और साम्यवादियों पर हमला बोलने को वे जिस तरह हर वक्त तैयार रहते हैं उनसे वे सचमुच शंका के पात्र माने जा सकते हैं।

एगी की क्वितो डायरी में इसका सिलसिलेवार बखान किया गया है कि इक्वेडोर और क्यूबा के बीच भाईचारे के संबंध को तोड़ने के लिए सी आई ए ने किन हथकंडों का सहारा लिया; अपनी इस कोशिश में उसने किस तरह क्यूबा से मैत्री रखने के हिमायती तथा वेलास्को सरकार के एक प्रमुख सदस्य, मैनुएल अरौजो को अलग से हमले के लिए चुना; किस तरह वेलास्को और अरौजो के बीच फूट और वैमनस्य पैदा करने के लिए हर छोटा-बड़ा नुस्खा अपनाया गया; किस तरह इक्वेडोर और क्यूबा के संबंधों में तनाव पैदा करने के लिए अखबारों में झूठी खबरें घुसेड़ी गईं; किस तरह सरकार और पुलिस में बैठे सी आई ए के एजेन्टों ने भी झूठी कहानियाँ गढ़ीं और बवाल खड़ा करवाने की कोशिशें कीं; किस तरह अन्त में सी आई ए ने खुद वेलास्को का पत्ता काटने की ठानी और उसमें सफल भी हो गया; किस तरह उनकी जगह उपराष्ट्रपति अरोसेमेना ने ली जो शुरू में तो प्रगतिशील थे, पर बाद में चलकर राष्ट्रपति बनने के लोभ में सी आई ए से साँठ-गाँठ कर विक गए। एगी के अनुसार, सी आई ए का दिन कुछ इस तरह शुरू होता है :

"क्वितो, १६ दिसम्बर, १९६१।

क्रिसमस की मंदी के पूर्व घटनाओं और गतिविधियों में बेहद तेजी आ

गई है, जिनमें हम लोगों के सुगठ महत्व की कोई खास बात नहीं है। तीन दिन पहले सी टी ई समर्थित इक्वेडोरियाई इण्डियन ग्रुप की कांग्रेस में अरोसेमेना मुख्य वक्ता थे। इण्डियन कांग्रेस की पीठ पर कल सी टी ई से संबद्ध तटवर्ती बागान मजदूरों की संस्था की कांग्रेस भी बुलाई गई। यहां भी अरोसेमेना मुख्य वक्ता थे। इण्डियन कांग्रेस की तरह यह बैठक भी प्रतिगामपंथियों के लिए भारी संकट रही।

ग्वेयाक्विल मसले में जो सी आई ए एजेन्ट अलबर्तो अलारकॉन की देखरेख में चलने वाली छात्र कार्रवाइयों को एक बार फिर मुंह की खानी पड़ी है। राष्ट्रीय एफ ई यू ई कांग्रेस ने अभी हाल में ग्वेयाक्विल में अपनी बैठक बुलाई थी और यहां भी प्रतिगामपंथियों का ही बोलबाला रहा था। ग्वेयाक्विल विश्वविद्यालय—यहां एफ ई यू ई शाखा यू आर जे ई के जुझारुओं के हाथ में है—पश्चिम भाग का राष्ट्रीय स्थल होने जा रहा है। अलारकॉन के द्वारा प्रकाशित बयोका और पोन्तिफिकल विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि कांग्रेस के विरोध में उस वक्त बाहर निकल गये जब क्यूबा की क्रांति के समर्थन और एलायंस और प्रोग्रेस की भर्त्सना में प्रस्ताव पारित किये जा रहे थे। कैथोलिक विश्वविद्यालय युवा संस्था और बोज यूनिवर्सिटारिया के सम्पादक डेविला, विल्सन अलमेडा (जो सी आई ए का एक और एजेन्ट) की तरफ से भी प्रतिगामपंथियों के बहिर्गमन पर विरोध प्रकट किया गया।

"क्विटो की एफ ई यू ई शाखा का एक क्रांतिकारी समाजवादी अध्यक्ष चुना जाना भी हमारी छात्र कार्रवाइयों पर एक तमाचा है। वोट के बाद नये पदाधिकारियों ने अरोसेमेना के समर्थन में एक वक्तव्य जारी किया जिसमें कृषि सुधारों की आवश्यकता और क्यूबा के मामले में 'हस्तक्षेप नहीं' करने जैसे मुद्दों पर बल दिया गया था।

"अब लोजा समेत क्विटो और ग्वेयाक्विल की एफ ई यू ई शाखाएँ प्रतिगामपंथियों के हाथ में हैं। बहरहाल, सड़कों और गलियों में यू आर जे ई का आधिपत्य जारी है। कुछ दिनों पहले क्यूबाई प्रवासियों के एक दल (ऐसे कई सौ प्रवासी ग्वेयाक्विल में बसने आये हैं) पर यू आर जे ई जुझारुओं ने उस वक्त हमला कर दिया जब वे एक सरकारी दफ्तर में अपना नाम दर्ज कराने पहुँचे थे।

"राष्ट्रीय पुलिस में चलने वाली कार्रवाई संक्रमण के दौर से गुजर रही है। पुलिस गुप्तचरी शाखा से जोस वर्गास को न केवल हटा दिया गया, बल्कि वह अपनी गुप्त वेलास्कियस्ता पुलिस संस्था के अन्य सदस्यों के हिरासत में बंद है। सौभाग्य से लुई संडोवाल को छुआ नहीं गया है और

अभी अपने पद पर बना रहेगा। वर्गाज के निष्कासन के बाद पहले की अपेक्षा मैं सैंडोवाल से ज्यादा मिलता रहा हूँ और जब तक हम लोग पुलिस गुप्तचर विभाग के नये प्रमुख, मेजर पैसिफिको दि लौस रियेज़ के बारे में पक्की राय नहीं बना लेते हैं, पुलिस गुप्तचरी में हमारा प्रमुख सम्पर्क-सूत्र सैंडोवाल ही रहेगा। व्यवहारतः, वह हम लोगों का वेतनभोगी घुसपैठिया है। वर्गाज को दिये गये किसी औजार से संबंधित बहाना बनाकर दि लौस रियेज़ पड़ाव पर आये थे, लेकिन जाहिर था उनके आगमन के पीछे मेल-जोल बढ़ाने का इरादा था। नोलेंड और मैं बारी-बारी से उससे मिलते रहेंगे लेकिन मैं उसे यह नहीं बताऊँगा कि सैन्डोवाल के साथ मेरी नियमित मुलाकात होती रही है।

"क्वेंका क्षेत्र में कर्नल लागो ने कार्यभार सँभाल लिया है। उसका सौतेला लड़का, एडगर कमाचो उसके साथ नियमित सम्पर्क-सूत्र का काम करेगा, सिवाय उन मौकों पर जब कि वह क्वितो आता है। करीब-करीब हर महीना वह क्वितो आता ही है। उसकी इच्छा है कि मैं उसकी और अन्य सहायक एजेन्टों की तनख्वाह एक साथ उसके ही हाथ सौंप दिया करूँ, इससे मेरा अनुमान है कि वह हर महीना क्वितो आयेगा।

"राष्ट्रीय स्वतंत्र मजदूर महासंघ के निर्माण की दिशा में प्रगति हो रही है। १६-१७ दिसम्बर को सी आर ओ सी एल ई (क्रोक्ले) के नेतृत्व में चलने वाली मौजूदा स्वतंत्र मजदूर संस्थाओं ने राष्ट्रीय महासंघ की संघटक कांग्रेस की संगठन समिति के निर्माण के लिए एक सभा बुलाई। इसका नाम होगा स्वतंत्र मजदूर संस्थाओं का इक्वेडोरियाई महासंघ (सी ई ओ एस एल)। एनरिके अमादोर ग्वेकिल अड्डे के मजदूर एजेन्टों में एक सभा का अध्यक्ष था। समुद्र तट से पिछले साल मजदूर वर्ग का सिनेटर चुना गया एडलवर्तो मिरांडा गिरोन, जो अड्डे का एजेन्ट भी है, मुख्य वक्ता था। संघटक कांग्रेस अगले साल अप्रैल के अन्त में बुलाई जाने की बात तय हुई।

"इस सबके बावजूद स्वतंत्र मजदूर संघ और दलों के बीच दिखाई पड़ने वाली प्रगति के पीछे गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। विभिन्न संस्थाओं के नेताओं के बीच नौकरी की सुरक्षा और अफसरशाही का झूठा आडम्बर ही समस्या का मुख्य विन्दु है। सी ई ओ एस एल के गठन के बाद उसमें सबसे अच्छा ओहदा हासिल करने की होड़ ईर्ष्या और फसाद पैदा कर रही है। नवम्बर के शुरू में १०वें डिविजन (सी आई ए के लैंगले सदरमुकाम की एक शाखा) के पश्चिमी भूखंड के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लेबर एजेंट, सेराफिनो रोमाल्डी (लातिन अमेरिका में ए एफ एल - सी आई ओ के

प्रतिनिधि) ग्वेकिल आये और उन्होंने थोड़ा भाईचारा स्थापित करने की कोशिश की। उनके ही आगमन के परिणामस्वरूप वह सभा सभव हुई जो अभी-अभी समाप्त हुई है। लेकिन नेतागण अभी भी आपस में झगड़ रहे है।

"अब जबकि वेलास्को का निष्कासन हो चुका है, गिल साउदेद (एक सी आई ए अफसर) की लोकप्रिय क्रातिकारी उदारवादी पार्टी पूरी तरह से लुप्त न भी हुई तो प्रभावहीन जरूर होती जायेगी। वह उस पार्टी से मेतियास उल्लोआ, कार्लोस वलेजो और रिकार्डो वाजकुएज जैसे कुछ एजेन्टो को जल्द-से-जल्द सी ई ओ एस एल सस्था मे भेजने जा रहा है, क्योकि कुछ वेतनभोगी एजेन्टों की उपस्थिति से सस्था मे थोड़ा अनुशासन और तौर-तरीका बना रहेगा। अगर ऐसा नही हुआ तो संस्था हमेशा के लिए कमजोर बनी रहेगी और सी टी ई का कभी मुकाबला नही कर सकेगी।

"हम लोगों के राष्ट्रीय सुरक्षा मोर्चे (सी आई ए द्वारा स्थापित एक संस्था) ने क्यूबा से सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा जारी की है, लेकिन अभी हाल की कंजर्वेटिव पार्टी बैठक मे यह तय हुआ कि क्यूबा के साथ सम्बन्ध-विच्छेद किए जाने पर जोर देते रहने के साथ अरोसेमेना को आम समर्थन दिया जाता रहना चाहिए। (अनुदारवादियो की बैठको के छपने वाले चित्र अजीबोगरीब हैं—वक्ता के टेबुल के आगे बालिश्त भर ऊँचा एक सलीब रखा हुआ था जो जेसुइट वापसी की याद दिलाता था)। डैविला पार्टी का उप-महानिदेशक चुना गया। बाकी सभी महत्वपूर्ण राजनैतिक पार्टियो ने सभाएँ की हैं और सबों ने अरोसेमेना को आम समर्थन देते रहने का फैसला किया है।

"अरोसेमेना और सभवत. सेना की साम्यवाद विरोधी परम्परा को लेकर राज्य विभाग भी बाजी खेलने जा रहा है। कुछ दिनो पहले एक नये ऋण की घोषणा की गई है। चालीस साल के लिए बिना किसी सूद के अमरीकी सरकार ने बजट सहयोग के रूप मे ८ मिलियन डॉलर दिया है। वेलास्को के अधीनस्थ वित्त मत्री जार्ज अकोस्टा ने ही शुरू में इस ऋण का समझौता किया था……"

इसी तरह काफी लम्बाई मे यह किस्सा आगे बढ़ता गया है। सिर्फ यही कि फिलिप एगी के क्वितो छोडने के पहले ही सी आई ए ने अरोसेमेना को भी उखाड़ फेंककर शासन में सैनिक जुंता की स्थापना कर दी। सी आई ए गतिविधियों का एक दूसरा पक्ष, चिनगारी भड़काने वाली कार्रवाई, १६ जनवरी, १९६२ के रोजनामचे मे दर्ज किया गया है।

"हम लोगो का नया अभियान शब्दश: धमाके के साथ शुरू हुआ है। दो

दिन पहले क्वेंका में यू आर जे ई का राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू होने वाला था लेकिन एक रात पहले क्वेंका के दो गिरजाघरों के दरवाजों पर बम के धमाके हुए। धमाके से किसी को चोट नहीं आई—कार्लोस एरिजागा वेगा के नेतृत्व में काम कर रहे हमारे साम्यवाद विरोधी लड़ाकू इस बात को लेकर सावधान थे—लेकिन सम्मेलन शुरू होने के दिन बमकांड के विरुद्ध 'स्वत: स्फूर्त्त' विशाल प्रदर्शन हुए। कत्लेआम और रक्तपात रोकने के लिए सरकारी अधिकारियों ने यू आर जे ई सम्मेलन पर पाबंदी लगा दी।"

सी आई ए ने जुंता के साथ किस तरह "सहयोग" किया, इसका वर्णन १५ अगस्त, १६६३ की डायरी में मिलता है। सम्पर्क के नाम पर सी आई ए का मुख्य लक्ष्य फौज के अन्दर भेदियादलों को बिठाना था। इन दलों की भक्ति सिर्फ सी आई ए के प्रति थी।

"डीन (सी आई ए अफसर) घर की छुट्टी से वापस लौट आया है और जुंता में स्थापित होने के लिए तेजी से काम कर रहा है। इतने ही दिनों में वह जुंता के सबसे शक्तिशाली सदस्य कर्नल गन्दारा, रक्षा मंत्री, कर्नल औरेलियो नरांजो और शासन मंत्री, कर्नल लुई मोरा बावेन से बराबर मिलने लगा है। गन्दारा के आगे लातिन अमरीकी और विश्व गुप्तचरी का हफ्तेवार ब्योरा पेश करने का वह लोभ दिखा रहा है। यह ब्योरा (गुप्त नाम पी बी बी ए एन डी) सदरमुकाम से हर शुक्रवार यहाँ पहुँचता है, शनिवार और रविवार को वह अनूदित होता है और सोमवार को गन्दारा के आगे रखा जाता है। छिपकर टेलीफोन की बातें सुनने की एक संयुक्त योजना के लिए सिद्धांत में उसने अनुमति भी दे दी है। इस योजना में हम उपकरण और विभिन्न साजोसामान मुहैया करेंगे तथा वह टेलीफोन एक्सचेन्ज में तार जोड़ने की सुविधा तथा छिपकर सुनने की जगह देगा। सैनिक अकादमी को सुनने की जगह के रूप में इस्तेमाल करने के प्रस्ताव पर वह मोटे तौर पर राजी हो गया है। डीन की इच्छा है टेलीफोन सुनने की यह योजना मेक्सिको सिटी में चल रही ऐसी ही योजना से भरपूर मुकाबला कर सके, जहाँ, डीन का कहना है, सी आई ए पड़ाव ३० लाइनों पर एक साथ नियन्त्रण कर सकता है। इस योजना के चालू हो जाने पर हम लोग रैफेल बुकेली को महत्त्वपूर्ण राजनैतिक लाइनों की रखवाली पर भेज देंगे। जाहिर है, जुंता को इसका पता नहीं चलना चाहिए।

"गिल साउदादे का तबादला क्यूरितिबा (ब्राजिल) कर दिया गया है (वहाँ कॉनसुलेट में एक आदमी को लेकर अड्डा चलाया जा रहा है) और

उनकी जगह पर आने वाला, नॉरेन वाल्श इस्पहानी नहीं बोल सकता है। क्यारों को एक यात्रा के बाद वाल्श का तबादला सुदूरपूर्व प्रभाग से सदर-मुकाम के पश्चिम भूभाग प्रभाग में कर दिया गया था। इस्पहानी भाषा का अध्ययन छोड़कर उसे प्रति-विद्रोह में एक अन्तरविभागीय तालीम लेने जाना पड़ा। स्टेशन प्रमुख या सहायक स्टेशन प्रमुख के रूप में नियुक्त होने वाले हर नये अफसर के लिए यह तालीम अब जरूरी हो गयी है। मेरे लिए इसका मतलब यह हुआ कि माउदादे की जिम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा मुझे ही सँभालना पड़ेगा : विल्सन अलमेडा और बोज यूनिवर्सितारिया, मेतियास उल्लोआ कोरिमानो के साथ सी ई ओ एस एल मजदूर क्षेत्र की कार्रवाई, रिकार्डो वेडनुएज दियाज और कार्लोस वलेजो और अंतोनियो उल्लोआ कोरिमानो के इर्द-गिर्द प्रचार की कार्रवाई, एजेंसिया आर्वे लैनोआमेरिकानो का क्विटो संवाददाता। इनमें से अधिकतर एजेंन्ट लोकप्रिय क्रांतिकारी उदारवादी पार्टी के सदस्य भी हैं। अंतोनियो उल्लोआ पी एल पी आर रेडियो स्टेशन चलाता था, लेकिन हम लोगों ने अपनी खबरों के प्रसार के लिए रेडियो स्टेशन को उल्लोआ और जुआं येपेज देल पोजो (जूनियर) के हाथ से ले लिया। मेरे कामों के मुतल्लिक यह नई व्यवस्था थोड़ी असुविधा-जनक है क्योंकि मेरा नया सहायक इन कामों में कोई काम सँभाल नहीं सकता है; एक भी एजेन्ट अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल सकता। डीन ने कहा कि जल्द ही आराम मिल जायेगा क्योंकि उसे दूतावास से तीन नई स्लॉट मशीनें मिली हैं; अगले महीनों में दो चालू हो जायेंगी, तीसरी अगले साल के शुरू में चालू होगी। इन नये एजेन्टों के साथ मैं सिर्फ यह कर सकता हूँ कि उन्हें तब तक फँसाकर रखूँ जब तक कोई इनके साथ काम करने का समय लेके आये।

"इस समय क्विटो में करीब १२५ राजनैतिक बंदी हैं। इनमें न केवल साम्यवादी बल्कि वेलास्क्विस्ता और पोपुलर फोर्सेज के सदस्य भी हैं। जुन्ता की यह नीति है कि उन्हें निर्वासन की अनुमति दे दी जाय, हालांकि उनमें से कुछ लोगों को इक्वेडोर में रहने की छूट भी मिल सकती है। लेकिन यह इस पर निर्भर करता है कि राजनैतिक मान्यताओं को लेकर उनका पिछला इतिहास क्या रहा है। सरकारी फैसला अधिकतर उन सूचनाओं के आधार पर किया जाता है जिन्हें हम शासन मंत्री लुई मोरा बावेन के पास भेजते हैं। यहाँ और ग्वेकिल के अन्य बंदियों की छँटनी में काफी समय लगेगा क्योंकि लम्बी पूछ-ताछ के बाद ही कोई कदम उठाया जाता है। हालांकि बंदियों की छँटनी में डीन शासन मंत्री के साथ काफी मिल-जुलकर काम कर रहा है,

ओलम्पिक तैयारियों में जुटी हुई विभिन्न संस्थाओं के नेताओं के चक्कर लगा रहा हूँ : संगठन समिति मेक्सिको की ओलम्पिक समिति और अपने देश के खिलाड़ियों के लिए बनाया गया विशाल प्रशिक्षण मैदान, मेक्सिको खेल महासंघ और अलग-अलग खेलों के कई संघ। इनमें से हर संस्था की कुछ ऐसी विशेष आवश्यकताएँ हैं जिनकी पूर्ति अमरीकी दूतावास का ओलम्पिक खेल दफ्तर पूरा कर सकता है···काम पर सिर्फ पांच दिन गश्त लगाने से ही काफी बड़ी तादाद और विभिन्न किस्म के लोगों के द्वार हमारे लिए खुल गए हैं।

"स्टेशन प्रमुख विन स्कौट से लेकर पड़ाव का हर छोटा-बड़ा अफसर इस बात को लेकर उत्तेजित है कि ओलम्पिक में मेरे प्रवेश पा जाने से उनके अपने क्षेत्र की जिम्मेदारी में कहाँ तक मदद मिलेगी। जहाँ तक स्कौट की बात है, उन्होंने राय दी कि मुझे सबसे पहले ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिलने की कोशिश करनी चाहिए और ओलम्पिक मुखौटे को मजबूती से स्थापित कर देना चाहिए।

"सोवियत कार्रवाइयों वाले विभाग में, जहाँ मैंने एक डेस्क और एक टाइपराइटर की व्यवस्था कर ली थी, सबसे बड़ी दिलचस्पी इस बात में है कि मैं नये सम्पर्क-सूत्रों (यानी एजेन्टों) की खोज करके उन्हें आजमाऊँ और ओलम्पिक काम पर लगे हुए रूसी और अन्य पिछलगू गुप्तचरों के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करूँ। साम्यवादी दल विभाग की चाह है कि मैं क्रांतिकारी संस्थाओं में घुसपैठिया बनने को तैयार लोगों को छान के बाहर कर लूँ जिससे बाद में उनकी बहाली की जा सके। गुप्त कार्रवाई करने वाली शाखा की तमन्ना है कि संगठन समिति के प्रेस अफसरों पर अनुमान सामग्री जुटाकर उन्हें दूँ जिनसे सूचना संचार के एजेन्ट की हेराफेरी में आगे उन्हें मदद मिले। सम्पर्क विभाग की फरमाइश है कि मैं ओलम्पिक की बहाली पर आए रूसी और अन्य पिछलगू सहचारियों पर मेक्सिकी सेवाओं तक पहुँचाने लायक गुप्त सूचना दूँ। लिकोय्रा विभाग की माँग है कि मैं ऐसे एजेन्टों की खोज करूँ जो पी आर आई (सत्तारूढ़ दल) और मेक्सिकी सरकार में घुसपैठिया बनने को तैयार हों। क्यूबाई कार्रवाई विभाग, जो संभवतः एजेन्ट के मामले में शायद सबसे पिद्दी विभाग है, की इच्छा है कि क्यूबा के ओलम्पिक सहचारी, ओलम्पिक के सिलसिले में आए ऐसे वामपंथी जो भविष्य में क्यूबा जाने वाले हों, या ऐसा कोई भी आदमी जिसमें क्यूबा की दिलचस्पी जग सके, उनके बारे में वैयक्तिक सूचनाएँ एकत्र करूँ। हर अफसर मेरे ओलम्पिक

मुखौटे में अपने निर्धारित लक्ष्यों की कमोबेश पूर्ति देख रहा है।

"इसे किसी तरह से नकारा नहीं जा सकता कि यह काम स्टेशन के लिए सचमुच उपयोगी होगा। ओलम्पिक के नये परिचित के साथ पहचान-पत्र की अदला-बदली आम तरीका है, और अब तक मैं जितने लोगों से मिल सका हूँ उनमें से बहुत सारे स्टेशन की फाइलों में महत्त्वपूर्ण ढंग से अंकित हैं। मैंने अपनी कार्ड फाइल ही खोल डाली है और मैं जिन लोगों से मिलता हूँ उन पर स्मारपत्र भी लिखने लगा हूँ। अगर विभिन्न विभागों में वितरण के लिए मैं ऐसे स्मारपत्र लिखता जाऊँ तो काफी समय तक भर्ती करने के काम से बच सकता हूँ—संभवत: ओलम्पिक के अन्त तक मैं इस काम को टाल सकता हूँ। दूसरी मंजिल के ओलम्पिक दफ्तर से पड़ाव दफ्तर तक शालीनतापूर्वक पहुँच जाने में कोई दिक्कत नहीं है क्योंकि दूतावास के पीछे वाली लिफ्ट की ओर ही पड़ाव का भी दरवाजा है और सबसे ऊपरी मंजिल तक जाने वाले लोगों की संख्या बहुत नहीं होती है।"

एगी ने इतना अच्छा काम किया कि पड़ाव प्रमुख विन स्कौट ने ओलम्पिक की समाप्ति के बाद उनका तबादला राजनैतिक कार्रवाई की शाखा में करवाना चाहा। स्कौट की इच्छा थी कि एगी जिनसे मिल चुके हैं उनके साथ मेल-जोल बढ़ाते रहें, उन्हें तैयार करते रहें। उनकी पदोन्नति भी कर दी गई। पड़ाव में सोवियत शाखा के प्रमुख, पॉल डिलियन ने एगी के आगे यह प्रस्ताव रखा। यह वही डिलियन है जो इन दिनों नई दिल्ली स्थित अमरीकी दूतावास में मौजूद है।

लेकिन उस वक्त तक एगी सी आई ए से पूरी तरह तृप्त हो चुके थे। उन्होंने डिलियन से कहा कि ओलम्पिक के बाद वे इस्तीफा दे रहे थे। एक और सी आई ए जीवन-क्रम का अंत हुआ।

हस्तक्षेप का 'दैवी अधिकार'

प्रश्न : "किस अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अन्तर्गत हमें दूसरे देश की विधिवत चुनी गई सरकार को गिराने की चेष्टा का अधिकार है ?"

उत्तर : "मैं इस पर फैसला देने नहीं जा रहा हूँ कि कोई अन्तर्राष्ट्रीय नियम ऐसा करने की अनुमति या अधिकार देता है अथवा नहीं। यह जानी-मानी बात है कि ऐतिहासिक रूप से और वर्तमान समय में भी ऐसे काम सम्बन्धित देशों की ज्यादा से ज्यादा भलाई को ध्यान में रखकर ही किए जाते हैं।"

इन शब्दों में अमेरिका के राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड ने घोषणा की कि अमरीकी साम्राज्यवादी अपने एकाधिकार और नव-औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए दूसरे देशों के मामले में हस्तक्षेप और दखलंदाजी करते रहेंगे। अमरीकी राष्ट्रपति ने ऐतिहासिक अधिकार का हवाला देते हुए बल्कि यह दावा किया कि ह्वाइट हाउस की कुर्सी पर चाहे जो भी बैठा हो, अगर दूसरे देशों की सरकारें उसकी पसन्द की नहीं हैं तो उन्हें उखाड़ने की कोशिश की जायेगी। उपरोक्त प्रश्न और उत्तर १६ सितम्बर, १९७४ को ह्वाइट हाउस में फोर्ड के संवाददाता सम्मेलन के मजमून में उद्धृत किये गये हैं।

इतना ही नहीं, फोर्ड ने सी आई ए के द्वारा चिले के आन्तरिक मामलों में खुली, जालिम दखलंदाजी तथा अयांदे सरकार को उखाड़ने की कोशिश का जिम्मा लेते हुए इस बर्बरता को उचित भी ठहराया। उन्होंने कहा कि चिले में सी आई ए की कार्रवाई "विरोधी अखबारों और एलेक्ट्रोनिक संचार साधनों तथा विपक्षी, राजनैतिक पार्टियों की रक्षा में मदद पहुँचाने के लिए की गई थी।" चिले की जनता के लिए क्या अच्छा है इसे तय करने के अधिकार को भी अपने ऊपर ओढ़ते हुए फोर्ड ने दावा किया, "मैं समझता हूँ कि चिले की जनता की सर्वाधिक हितरक्षा इसी में है, और निश्चय में हमारी भी सर्वाधिक हित रक्षा है।"

मुखौटे में ग्रपने निर्धारित लक्ष्यों की कमोवेश पूर्ति देख रहा है।

"इसे किसी तरह से नकारा नहीं जा सकता कि यह काम स्टेशन के लिए सचमुच उपयोगी होगा। ग्रोलम्पिक के नये परिचित के साथ पहचान-पत्र की ग्रदला-वदली ग्राम तरीका है, ग्रौर ग्रव तक मैं जितने लोगों से मिल सका हूँ उनमें से वहुत सारे स्टेशन की फाइलों में महत्त्वपूर्ण ढंग से ग्रंकित हैं। मैंने ग्रपनी कार्ड फाइल ही खोल डाली है ग्रौर मैं जिन लोगों से मिलता हूँ उन पर स्मारपत्र भी लिखने लगा हूँ। ग्रगर विभिन्न विभागों में वितरण के लिए मैं ऐसे स्मारपत्र लिखता जाऊँ तो काफी समय तक भर्ती करने के काम से वच सकता हूँ—संभवतः ग्रोलम्पिक के ग्रन्त तक मैं इस काम को टाल सकता हूँ। दूसरी मंजिल के ग्रोलम्पिक दफ्तर से पड़ाव दफ्तर तक शालीनतापूर्वक पहुँच जाने में कोई दिक्कत नहीं है क्योंकि दूतावास के पीछे वाली लिफ्ट की ग्रोर ही पड़ाव का भी दरवाजा है ग्रौर सवसे ऊपरी मंजिल तक जाने वाले लोगों की संख्या वहुत नहीं होती है।"

एगी ने इतना ग्रच्छा काम किया कि पड़ाव प्रमुख विन स्कौट ने ग्रोलम्पिक की समाप्ति के वाद उनका तवादला राजनैतिक कार्रवाई की शाखा में करवाना चाहा। स्कौट की इच्छा थी कि एगी जिनसे मिल चुके हैं उनके साथ मेल-जोल बढ़ाते रहें, उन्हें तैयार करते रहें। उनकी पदोन्नति भी कर दी गई। पड़ाव में सोवियत शाखा के प्रमुख, पॉल डिलियन ने एगी के ग्रागे यह प्रस्ताव रखा। यह वही डिलियन है जो इन दिनों नई दिल्ली स्थित ग्रमरीकी दूतावास में मौजूद है।

लेकिन उस वक्त तक एगी सी ग्राई ए से पूरी तरह तृप्त हो चुके थे। उन्होंने डिलियन से कहा कि ग्रोलम्पिक के वाद वे इस्तीफा दे रहे थे। एक ग्रौर सी ग्राई ए जीवन-क्रम का ग्रंत हुग्रा।

हस्तक्षेप का 'दैवी अधिकार'

प्रश्न : "किस अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अन्तर्गत हमें दूसरे देश की विधिवत चुनी गई सरकार को डिगाने की चेष्टा का अधिकार है ?"

उत्तर : "मैं इस पर फैसला देने नहीं जा रहा हूँ कि कोई अन्तर्राष्ट्रीय नियम ऐसा करने की अनुमति या अधिकार देता है अथवा नहीं। यह जानी-मानी बात है कि ऐतिहासिक रूप से और वर्तमान समय में भी ऐसे काम सम्बन्धित देशों की ज्यादा से ज्यादा भलाई को ध्यान में रखकर ही किए जाते हैं।"

इन शब्दों में अमेरिका के राष्ट्रपति जेराल्ड फोर्ड ने घोषणा की कि अमरीकी साम्राज्यवादी अपने एकाधिकार और नव-औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए दूसरे देशों के मामले में हस्तक्षेप और दखलंदाजी करते रहेंगे। अमरीकी राष्ट्रपति ने ऐतिहासिक अधिकार का हवाला देते हुए बल्कि यह दावा किया कि ह्वाइट हाउस की कुर्सी पर चाहे जो भी बैठा हो, अगर दूसरे देशों की सरकारें उसकी पसन्द की नहीं हैं तो उन्हें उखाड़ने की कोशिश की जायेगी। उपरोक्त प्रश्न और उत्तर १६ सितम्बर, १९७४ को ह्वाइट हाउस में फोर्ड के सवाददाता सम्मेलन के मजमून से उद्धृत किये गये हैं।

इतना ही नहीं, फोर्ड ने सी आई ए के द्वारा चिले के आन्तरिक मामलों में खुली, जालिम दखलंदाजी तथा अयादे सरकार को उखाड़ने की कोशिश का जिम्मा लेते हुए इस बर्बरता को उचित भी ठहराया। उन्होंने कहा कि चिले में सी आई ए की कार्रवाई "विरोधी अखबारों और एलेक्ट्रोनिक सचार साधनों तथा विपक्षी, राजनैतिक पार्टियों की रक्षा में मदद पहुँचाने के लिए की गई थी।" चिले की जनता के लिए क्या अच्छा है इसे तय करने के अधिकार को भी अपने ऊपर ओढ़ते हुए फोर्ड ने दावा किया, "मैं समझता हूँ कि चिले की जनता की सर्वाधिक हितरक्षा इसी में है, और निश्चय ही इसी में हमारी भी सर्वाधिक हित रक्षा है।"

थोड़ा गौर करें तो पायेंगे कि फोर्ड के अन्तिम जुमले में असलियत छिपी हुई है। चिले का खूनी तख्तापलट अमरीकी साम्राज्यवाद और आई टी टी तथा केनेकोट कॉपर जैसे अमरीकी एकाधिकारों के सर्वाधिक हित में था, जिन्हें राष्ट्रपति अयांदे ने अपने शासन काल में चिले से बाहर कर दिया था। राष्ट्रपति फोर्ड ने रोजमर्रे की आम बात को दुहराते हुए कहा : "दूसरी सरकारों की तरह हमारी सरकार भी अपनी विदेश नीति के कार्यान्वयन तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में मदद पहुँचाने के लिए गुप्तचरी की कुछ कार्रवाइयां करती रहती है।" इससे तो हर कोई भली-भाँति परिचित है कि अमरीकी साम्राज्यवादी विदेश नीति का कार्यान्वयन सी आई ए द्वारा करवाया जाता है; लेकिन जो बात ठीक से किसी की समझ नहीं आ रही है वह यह है कि चिले में अयांदे सरकार का अस्तित्व अमेरिका की सुरक्षा समस्या कैसे बन गया था। हाँ, अगर फोर्ड का मतलब चिले की जनता के खून पर पलने और बुलन्द होने वाली आई टी टी तथा केनेकोट कॉपर कम्पनियों की सुरक्षा से हो, तो बात और है।

विदेश नीति की जरूरतों की पूर्ति—जिसमें बाकी सभी देशों की कामगर जनता के विरुद्ध स्थायी युद्ध संचालन आता है—के लिए ही सी आई ए काम करता है, इसका पोषण सी आई ए निदेशक, विलियम कॉलबी के कथन से भी होता है। कॉलबी इसकी जरूरत महसूस करते हैं कि सी आई ए दुनिया-भर में तोड़-फोड़ और विघटनकारी कार्रवाई करता चले, लोगों को मारता और विकलांग करता रहे। सितम्बर १९७४ के मध्य में सी आई ए गतिविधियों पर विचार करने के लिए बुलाई गई वाशिंगटन की एक सभा में उन्होंने कहा : "मैं समझता हूँ कि हमारे देश से किसी विदेशी समस्या के प्रतिक्रियास्वरूप कुछ मामूली गुप्त कार्रवाइयों की सम्भावना छीन लेना और हमारे सामने कूटनीतिक विरोध तथा आक्रमण के लिए पनडुब्बियों को भेजने के बीच कोई तीसरा रास्ता न छोड़ना गलत होगा।" याद रखिए कि यह चिले को लेकर हुए रहस्योद्घाटनों के बाद की बात है। कॉलबी के इन शब्दों से साफ है कि अमेरिका जहाँ भी अपनी पनडुब्बी भेजने में असमर्थ है, वहाँ वह अपना सी आई ए भेज देगा।

अमरीकी राष्ट्रपति की निस्संकोच घोषणा कि उन्हें दूसरी सरकारों को डिगाने का अधिकार है, उनके अपने देश में भी पसन्द नहीं की गई। 'बेहद असावधान' वक्तव्य की संज्ञा देते हुए टाइम पत्रिका ने कहा : "इन शब्दों में यह चिन्तित करने वाली ध्वनि है कि अमरीकी नीति के सुविधानुसार किसी दूसरी सरकार को डिगाने जैसे काम के प्रति अमेरिका अपने को स्वतंत्र महसूस

करता है। बड़ी बात तो यह है कि धक्का को कम करने के लिए अमरीकी प्रशासन ने बाद में भी कोई सफाई देना उचित नहीं समझा। सोवियत रूस के साथ बढ़ते हुए भाईचारे और चीन के साथ सम्बन्ध-सुधार के इस युग में ये शब्द बेतुके और असामयिक हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में १९५० के शीत युद्धकालीन रवैयों की याद दिलाते हैं।"

सिनेटर फ्रैंक चर्च ने शोक प्रकट करते हुए कहा कि इन शब्दों का अर्थ 'सिवाय इसके और क्या हो सकता है कि जंगल के नियम के अलावा हम कोई भी नियम मानने को पाबन्द नहीं हैं।'

अगर अमरीकी राष्ट्रपति साम्राज्यवाद के इन गन्दे मनसूबों की घोषणा करते हो रहे थे तो नई दिल्ली स्थित अमरीकी राजदूत, डेनियल पेट्रिक मोइनिहन ने फिर वह प्रसिद्ध तार क्यों भेजा था ?

क्या नई दिल्ली में अपने लिए उचित वातावरण तैयार करने या घर वापसी के बाद वहां के शैक्षणिक जगत में फिर से स्थापित होने की यह भोंडी कोशिश थी ? क्या इसमें यह दिखाने की कोशिश थी कि कुछ 'अच्छे लोग' भी हैं जो दूसरे देशों में सी आई ए की विघटनकारी और अवैध कार्रवाइयों से दुखी होते हैं ? या यह अमरीकी साम्राज्यवाद की ही कोई नकली चाल तो नहीं थी ? इन ठीक से कुछ नहीं कह सकते।

दुनिया भर में कई ऐसे अमरीकी राजदूत हैं जो खुद सी आई ए एजेन्ट हैं। हमारा संकेत यह नहीं है कि मोइनिहन उनमें एक हैं लेकिन यह हकीकत है कि निक्सन ने राजदूत पद पर कई एजेंटों की बहाली की थी।

ऐसी बहाली में भूतपूर्व सी आई ए निदेशक, रिचर्ड हेल्म्स का नाम सबसे उल्लेखनीय है। लैंगले से उठाकर उन्हें सीधा तेहरान भेजा गया। १९५४ में प्रधानमंत्री मोहम्मद मोस्सादेघ के तख्तापलट और गद्दी पर ईरान के शाह के प्रतिष्ठापन में हेल्म्स ने अच्छी-खासी भूमिका निभाई थी। जब तेल के दाम पर ईरान और अमेरिका के बीच विरोध का दायरा बढ़ रहा था, तो ठीक उसी वक्त तेहरान में वाशिंगटन के आदमी के रूप में हेल्म्स का चुनाव सचमुच कपटपूर्ण लगा था।

लंदन के डेली मेल के अनुसार : "ईरान में भूतपूर्व सी आई ए प्रमुख रिचर्ड हेल्म्स की अत्यधिक लोकप्रियता से शाह चिंतित हैं। उनका सोचना है कि दुनिया में तेल के दामों की बढ़ोतरी में उन्होंने जो भूमिका निभाई है उसके चलते हेल्म्स उनका तख्ता पलटना चाहते हैं। शाह की चिंता इस बात से भी जायज लगती है कि अमेरिका ने तेल उत्पादन करने वाले कुछ देशों को धमकी दी है।"

गॉड्ले। लेवनन में अमरीकी राजदूत के रूप में उनकी हाल की बहाली से वहाँ कई प्रदर्शन हुए और विरोध जाहिर किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गॉड्ले सी आई ए की पूर्ववर्ती संस्था, ओ एस एस के दफ्तर में काम कर चुके थे। कांगो के सबसे संकटकालीन वर्षों में गॉड्ले ने पहले दूतावास के उप-प्रमुख और बाद मे राजदूत के रूप में लुमुम्बा-समर्थक जन उभारो को कुचलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अमेरिका के प्रसवावी और सामरिक विमानों का नुद संचालन करके उन्होंने वहाँ के वर्तमान नेता, जासेफ मोबुतु को ऊपर उठाने में सर्वाधिक सक्रिय सहयोग दिया था।

"लेकिन गॉड्ले की प्रसिद्धि लाओस मे १९६६ से १९७३ के दौरान अपने कामों को लेकर हुई। एसोसियेटेड प्रेस ने भी कहा था कि गॉड्ले वहाँ 'पैंथेट लाओ शाखाओ के विरुद्ध सी आई ए कमांडरो और एक गुप्त दक्षिणपंथी फौजी टुकड़ी की साँठ-गाँठ मे चलने वाली एक अमरीकी कार्रवाई का संचालन कर रहे थे।' "

फार ईस्टर्न इकनामिक रिव्यू के टी डी ऑलमन को उद्धृत करते हुए पत्रिका ने आगे कहा कि गॉड्ले ने ही जार्स के मैदान की बमबारी का आदेश दिया था, लाओस के विरुद्ध अमेरिका पोषित दक्षिण वीयतनामी आक्रमण के वे समर्थक थे, कम्बोडिया के विरुद्ध कार्रवाइयो के लिए लाओस के अड्डो के इस्तेमाल का अधिकार भी उन्होंने ही सी आई ए को दिया था। फतवा जारी करते हुए उन्होंने कहा था कि 'एक अच्छे साम्यवादी की जगह जमीन के ६ फीट नीचे है।' फिर भी निक्सन उन्हें चाहते थे। इतना ही नहीं, एक बार उन्होंने इच्छा जाहिर की, 'कितना अच्छा होता अगर मेरे पास गॉड्ले जैसे सौ राजदूत होते।'

निक्सन ने एक रावर्ट हिल को अर्जेन्टाइना का राजदूत बहाल किया था। गॉड्ले की तरह हिल भी ओ एस एस मे काम कर चुके थे। १९५३ में वे अमरीकी राजदूत बनकर कोस्टारिका गये, अगले साल उनका तबादला एल सालवादोर हो गया। कोस्टारिका में राजदूत की हैसियत से उन्होंने ग्वातेमाला में तख्तापलट करवाने की कोशिशो मे वहाँ के तत्कालीन अमरीकी राजदूत को महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया था। इसे रेखांकित करने की जरूरत है कि लातिन अमरीकी देशो मे चलने वाली अमरीकी फल कम्पनियो मे उनका विस्तृत आर्थिक स्वार्थ भी था। १९६४ से १९६६ तक वे सी आई ए की सीढ़ी के रूप मे काम करने वाली सस्था, स्वतन्त्र श्रम विकास का संस्थान के परामर्शदाताओं मे एक थे। अमेरिकन रिपोर्ट के

संस्थान ने 'इस अवधि में गियेना, डोमिनिकन रिपब्लिक और ब्राजिल में तख्तापलट करवाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।' जब निक्सन राष्ट्रपति बने तो उन्होंने हिल को स्पेन भेजा जहाँ, एक सूत्र के अनुसार, उनका व्यवहार कुछ वैसा ही था जैसे वे स्पेन की सरकार में एक अविभागीय मंत्री हों।

कई मेक्सिको अखबारों ने निक्सन के द्वारा मेक्सिको में बहाल किए गए अमरीकी राजदूत, जोसेफ जोव को सी आई ए का आदमी कहा था।

ज़रा अड़ोस-पड़ोस में देखिए। बंगला देश मुक्ति संघर्ष के दौरान पाकिस्तान स्थित अमरीकी राजदूत, जोसेफ फारलैंड भूतपूर्व एफ बी आई एजेन्ट थे। ऐसा लगता है कि सी आई ए ने फारलैंड की भर्ती कर राज्य विभाग में बुला लिया। सैनिक अधिनायक याह्या खाँ के साथ उनका नजदीकी रिश्ता था और जनरल की पियक्कड़ी में वे अधिकतर उनका साथ दिया करते थे। बहुचर्चित वाशिंगटन पत्रकार जैक एंडरसन ने एक रिपोर्ट में कहा था कि फारलैंड ने अमरीकी सरकार और हेनरी किसिंजर से, जो उन दिनों की ४० की समिति के अध्यक्ष थे, सिफारिश की थी कि 'पूर्वी खंड में बवाल'—यानी मुक्ति संघर्ष—को कुचलने के लिए सैनिक शासन को भरपूर मदद दी जाय।

राजदूत हो या राजनयिक, पर्यटक हो या धर्म-प्रचारक, व्यवसायी हो या और कोई, हर अमरीकी शंका का पात्र है। कौन जानता है किसकी कमर में छुरा है ? या कि कौन नकाब ओढ़े हुए है ? **वाशिंगटन स्टार न्यूज़** ने अभी हाल में एक खबर छापी है कि सी आई ए ने विदेशों में करीब तीन दर्जन पत्रकारों को अपने एजेन्ट के रूप में बहाल कर रखा है। अखबार का कहना है कि यह शंका कि कई पत्रकार भी सी आई ए की खिदमत में लगे हुए हैं, पहले साबित नहीं हो सकी लेकिन अब कोई भ्रम बचा नहीं रह गया है। खबर में यह भी कहा गया कि भंडाफोड़ के बाद भी सी आई ए उनमें से सिर्फ पाँच लोगों को वापस बुलाने की सोच रहा है और कम से कम ३० लोग अपने क्षेत्रों में बने रहेंगे। अखबार में इन बातों का भी भंडाफोड़ हुआ था : पत्रकार की आड़ में सी आई ए के ऐसे २५ लोग दुनिया भर में स्ट्रिंगर नाम से फैले हुए हैं। स्ट्रिंगर उन स्वतंत्र पत्रकारों को कहा जाता है जो ऐसी प्रेस एजेन्सियों के हाथ अपने लेख बेचते हैं जिनका उस खास क्षेत्र में अपना कोई संवाददाता नहीं होता। सी आई ए की एजेन्टी करने वाले दूसरे आठ पत्रकार व्यापार पत्रिका या ऐसे ही विभिन्न धंधों की पत्रिकाओं या पर्चों के विदेशी संवाददाता हैं। इनमें से अधिकांश गुप्तचरी का काम करते हैं, जिसका मतलब

नहीं होता है कि वे सी आई ए का काम करते हैं। अखबार के मालिकों को इसका पता रहता है। सी आई ए अमेरिका और खासकर विदेशों के बहुत सारे समाचारपत्रों और सम्पादकों के साथ भी 'खामोश और अनौपचारिक' सम्बन्ध बनाये रखेगा और उन्हें अपने कामों में इस्तेमाल करता रहेगा। इनमें से अधिकतर पत्रकार सी आई ए एजेन्टों के साथ विधिवत् सम्पर्क बनाए रखते हैं।

दो भूतपूर्व एजेन्टों के द्वारा लिखी गई एक पुस्तक प्रकाश में आने वाली सी आई ए करतूतों का अब तक का अन्तिम भण्डाफोड़ है। खुद पुस्तक के पीछे एक कहानी है। जब यह पता चला कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है तो सी आई ए ने अदालत से प्रकाशन रुकवाना चाहा, लेकिन इसमें उसे सफलता नहीं मिली। फिर इसने चाहा कि किताब में काफी काट-छांट होनी चाहिए। अदालत में मुकदमा चलता रहा और अन्त में यह आदेश दिया गया कि पुस्तक से कुछ अंश निकाल दिये जायें। ऐसे स्थलों पर किताब में खाली जगह छोड़ दी गई है। पुस्तक का नाम है 'सी आई ए ऐंड दी कल्ट ऑफ इंटेलिजेंस' (सी आई ए और हिंसा का सम्प्रदाय)। इसके लेखक हैं विक्टर मार्चेटी और जॉन डी. मार्क्स। पुस्तक के कई रहस्योद्घाटनों में एक यह है कि छठे दशक के अन्तिम और सातवें दशक के प्रारम्भिक सालों में खम्पा कबीले के कई जत्थों को तिब्बत भेजने की कार्रवाई की गई थी।

तिब्बत में खम्पाओं की घुसपैठ कराने की योजना सी आई ए के दिमाग की उपज थी और काठमाण्डू में स्थापित एक सी आई ए 'मिल्कियत' से उन्हें हवाई सहायता दी जाती थी। कुछ खम्पाओं को चोरी-छुपे अमेरिका ले जाया गया और उन्हें कोलोराडो स्थित कैम्प हेले में विशेष तालीम दी गई। जब तिब्बती कार्रवाई बुरी तरह बिखरने लगी तो कामों को समेटने का फैसला किया गया और अन्त में उसे एकदम से बन्द कर देना पड़ा। सी आई ए 'मिल्कियत' की हवाई सेवा भी घटकर कुछेक वायुयानों, हेलिकॉप्टरों और बचे-खुचे सामानों की आपूर्ति भर रह गई। लेखकों का कहना है कि 'कहने के लिए मिल्कियत का मतलब निजी संस्थान और व्यवसाय है लेकिन सचाई यह है कि इसका सम्पूर्ण संचालन सी आई ए के द्वारा होता है, वही उसका मालिक होता है, उसी का पैसा लगा होता है।' अन्ततः, यह मिल्कियत एक भूतपूर्व सी आई ए एजेन्ट के हाथ बेच दी गई जो कुछ दिनों तक मियामी में बैठे-बैठे इसका संचालन करता रहा, लेकिन बाद में उसने भी इसे बेचकर अच्छी खासी अर्जित कर ली।

और सी आई ए के ये सारे हथियार हिन्दुस्तान की ओर भी उसी तरह लगे हुए हैं। जब तक हिन्दुस्तान की सरकार और जनता अमरीकी साम्राज्यवादियों के इशारे पर नाचने से इनकार करती रहेगी, सी आई ए की तलवार सिर पर लटकती रहेगी। सच पूछा जाय तो देश सी आई ए एजेन्टों से भरा हुआ है। साम्राज्यवाद के घोषित समर्थकों और दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी ताकतों की उपस्थिति से ऐसे एजेन्टों का काम और भी सरल हो जाता है। बड़ी बात तो यह है कि ये ताकतें अपने जघन्य उद्देश्यों और स्वार्थों को छिपाने की बहुत चिन्ता भी नहीं करती हैं। ये स्वार्थ लोकतांत्रिक प्रणाली को नष्ट-भ्रष्ट करने और एक पूर्णतः प्रतिक्रियावादी, एकाधिकार संचालित, नवऔपनिवेशिक शासन की स्थापना करने में संलग्न हैं।

सी आई ए और उसकी ढाल-तलवार से लैस कार्रवाइयों का खतरा ज्यादा स्पष्ट और अनिष्टकारी इसलिए भी लगता है कि चिले में अयांदे सरकार के तख्तापलट को लेकर फोर्ड, किसिंजर और कॉलबी के मुंह से निकलने वाले जुमलों और इस देश के दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादियों और उनके शागिर्दों की जुबान में गजब की समानता है। कुछ समय पहले प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने चेतावनी देते हुए कहा था कि देश को चिले से शिक्षा लेनी चाहिए और भारत में ऐसी घटनाओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए। अब कुछ ऐसी हवा बहने लगी है कि चिले के मसले पर दिये गये तर्कों की तरह ही धुंध पैदा कर अमरीकी साम्राज्यवादी भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली को उखाड़ फेंकने की चेष्टा कर सकते हैं। और इस काम में वे, ठीक चिले की तरह, दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया को बहाने के रूप में इस्तेमाल करेंगे।

अयांदे के खिलाफ पहला आरोप यह था कि वे 'मार्क्सवादी' हैं। यहाँ दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया का आरोप यह है कि इंदिरा गांधी साम्यवादियों के हाथ की कठपुतली है। उस वक्त कहा जा रहा था कि चिले में विपक्षियों का दम घोंटा जा रहा था। यहाँ चिल्लाया जा रहा है कि देश में एक-दलीय शासन है और उसे बनाये रखने के लिए बहुतेरे साधनों का उपयोग कि[illegible] है।
वहाँ आरोप लगाया गया था [illegible] में रेडियो पर शासन क[illegible]
हो गया था। यहाँ सदा [illegible] के अधीन रहा है, प[illegible]
से इस बात को [illegible] पों मचाने लगे हैं।
शिकायत थी कि [illegible] अखबारों का
जा रहा था। ह[illegible] भंडुआई करने
पत्रकार बंधु गला [illegible] स संकटग्रस्त

में शोर मच रहा था कि लोकतंत्र का विनाश होने जा रहा है। यहां शोर है कि देश में 'अर्ध-फासीवाद' का खतरा है। यह सूची लम्बी की जा सकती है। लेकिन उसकी आवश्यकता नहीं है, मुद्दों और नारों में बेहद समानता है। एक ही फर्क है। वह यह है कि अब तक सिर्फ देश की दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया और उसकी हमजोली ताकतें ये आरोप लगाती रही हैं, बाहरी प्रतिक्रिया—साम्राज्यवाद—का मुंह खोलना बाकी है। हो सकता है कि इन आरोपों को खुलेआम बोलने के लिए वह विदेशी एकाधिकार फर्मों के राष्ट्रीयकरण जैसे किसी कदम की प्रतीक्षा में हो। और तब साँचे में ढली हुई सी आई ए की योजनाएं तड़ाक से चालू हो जायेंगी।

इंदिरा गांधी कोई सालवाडोर अयेंदे नहीं हैं, और न भारत एकदम से चिले की तरह है। फिर भी, अपने उद्दंड हस्तक्षेप और विघटनकारी कृत्यों की [illegible] के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा चिले पर लगाए गए आरोपों और इस देश में दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया के द्वारा लगाये जाने वाले आरोपों की अपूर्व समानता ध्यान में रखने की बात है। और शक करने का यथेष्ट प्रमाण है कि सी आई ए ने चिले में जिन तिकड़मों का सहारा लिया था, कुछ वैसी ही तिकड़में यहां भी चालू हैं—दक्षिणपंथी राजनीतिज्ञों को घूस देना, सशस्त्र गिरोहों को पैसे देकर उत्पात मचवाना, देश की अर्थव्यवस्था को डांवाडोल करके जनता में असंतोष फैलाना। और फिर दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया इस असंतोष से लाभ उठाने की कोशिश करेगी। इसकी भी पूरी संभावना है कि देश भर में फासीवाद की चीख लगाते फिरने वाले कुछ वामपंथी मौका-परस्त भी सी आई ए का पैसा ले रहे हों। इसका प्रमाण है कि अन्य जगहों में सी आई ए ने ऐसी हरकत की है।

हिन्दुस्तान को अत्यन्त सतर्क रहना है। हिन्दुस्तान को चिले के रास्ते पर जाने से रोकना होगा।

ग्रौर सी ग्राई ए के ये सारे हथियार हिन्दुस्तान की ग्रोर भी उसी तरह लगे हुए हैं। जब तक हिन्दुस्तान की सरकार ग्रौर जनता ग्रमरीकी साम्राज्यवादियों के इशारे पर नाचने से इन्कार करती रहेगी, सी ग्राई ए की तलवार सिर पर लटकती रहेगी। सच पूछा जाय तो देश सी ग्राई ए एजेन्टों से भरा हुग्रा है। साम्राज्यवाद के वेहिचक समर्थकों ग्रौर दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी ताकतों की उपस्थिति से ऐसे एजेन्टों का काम ग्रौर भी सरल हो जाता है। वड़ी वात तो यह है कि ये ताकतें ग्रपने जघन्य उद्देश्यों ग्रौर स्वार्थों को छिपाने की वहुत चिंता भी नहीं करती हैं। ये स्वार्थ लोकतांत्रिक प्रणाली को नष्ट-भ्रष्ट करने ग्रौर एक पूर्णतः प्रतिक्रियावादी, एकाधिकार संचालित, नवग्रौपनिवेशिक शासन की स्थापना करने में संलग्न हैं।

सी ग्राई ए ग्रौर उसकी ढाल-तलवार से लैस कार्रवाइयों का खतरा ज्यादा स्याह ग्रौर ग्रनिष्टकारी इसलिए भी लगता है कि चिले में ग्रयांदे सरकार के तख्तापलट को लेकर फोर्ड, किसिंजर ग्रौर कॉलवी के मुँह से निकलने वाले जुमलों ग्रौर इस देश के दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादियों ग्रौर उनके शागिर्दों की जुवान में गजव की समानता है। कुछ समय पहले प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने चेतावनी देते हुए कहा था कि देश को चिले से शिक्षा लेनी चाहिए ग्रौर भारत में ऐसी घटनाग्रों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। ग्रव कुछ ऐसी हवा वहने लगी है कि चिले के मसले पर दिये गये तर्कों की तरह ही धुंध पैदा कर ग्रमरीकी साम्राज्यवादी भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली को उखाड़ फेंकने की चेष्टा कर सकते हैं। ग्रौर इस काम में वे, ठीक चिले की तरह, दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया को वहाने के रूप में इस्तेमाल करेंगे।

ग्रयांदे के खिलाफ पहला ग्रारोप यह था कि वे 'मार्क्सवादी' हैं। यहाँ दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया का ग्रारोप यह है कि इंदिरा गांधी साम्यवादियों के हाथ की कठपुतली है। उस वक्त कहा जा रहा था कि चिले में विपक्षियों का दम घोंटा जा रहा था। यहाँ चिल्लाया जा रहा है कि देश में एक-दलीय शासन है ग्रौर उसे बनाये रखने के लिए वहुतेरे साधनों का उपयोग किया जाता है। वहाँ ग्रारोप लगाया गया था कि चिले में रेडियो पर शासन का एकाधिकार हो गया था। यहाँ सदा से रेडियो सरकार के ग्रधीन रहा है, पर कुछ सालों से इस वात को लेकर दक्षिणपंथी चिल्लपों मचाने लगे हैं। चिले में यह शिकायत थी कि सरकार की ग्रालोचना करने वाले ग्रखवारों का खात्मा किया जा रहा था। यहाँ के दक्षिणपंथी ग्रौर कलम की भंडुग्राई करने वाले उनके पत्रकार वंधु गला फाड़कर चीख रहे हैं कि स्वतंत्र प्रेस संकटग्रस्त है। चिले

ने शोर मचा रहा था कि लोकतंत्र का विनाश होने जा रहा है। यहाँ शोर है कि देश में 'सर्व-सत्तावाद' आ चुका है। यह खुशी मनायी भी जा सकती है। लेकिन उसकी आवश्यकता नहीं है, मुद्दों और नारों में बेहद समानता है। एक ही फर्क है। वह यह है कि अब तक सिर्फ देश की दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया और उसकी हमजोली ताकतें ये आरोप लगाती रही हैं, बाहरी प्रतिक्रिया—साम्राज्यवाद—का मुंह खोलना बाकी है। हो सकता है कि इन आरोपों को [illegible] बोलने के लिए वह किसी एकाधिकार हितों के राष्ट्रीयकरण जैसे किसी कदम की प्रतीक्षा में हो। और तब चिली में करी हुई सी आई ए की योजनाएँ तपाक से लागू हो जायेंगी।

इंदिरा गांधी कोई मार्क्सवादी अलांदे नहीं है; और न भारत एकदम से चिली की तरह है। फिर भी, अपने उद्दंड हस्तक्षेप और विघटनकारी कृत्यों की पर्दादारी के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा चिली पर लगाए गए आरोपों और इस देश में दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया के द्वारा लगाये जाने वाले आरोपों की अपूर्व समानता ध्यान में रखने की बात है। और शक करने का यथेष्ट प्रमाण है कि सी आई ए ने चिली में जिन तिकड़मों का सहारा लिया था, कुछ वैसी ही तिकड़में यहां भी चालू हैं—दक्षिणपंथी राजनीतिज्ञों को घूस देना, फासिस्ट गिरोहों को पैसे देकर उत्पात मचवाना, देश की अर्थव्यवस्था को डांवाडोल करके जनता में असंतोष फैलाना। और फिर दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया इस असंतोष से लाभ उठाने की कोशिश करेगी। इसकी भी पूरी संभावना है कि देश भर में फासीवाद की चीख लगाते फिरने वाले कुछ वामपंथी मौका-परस्त भी सी आई ए का पैसा ले रहे हों। इसका प्रमाण है कि अन्य जगहों में भी सी आई ए ने ऐसी हरकत की है।

हिन्दुस्तान को अत्यन्त सतर्क रहना है। हिन्दुस्तान को चिली के रास्ते पर जाने से रोकना होगा।

शिक्षा और संस्कृति में विकास और आत्म-निर्भरता जैसी राष्ट्रीय कोशिशों की खिल्ली उड़ाते हैं।

११. चरम कार्य-पटुता के अपने सारे दावों के बावजूद सी आई ए बदनामियों में बुरी तरह फँसता रहा है। सभी सुरक्षाओं और संरक्षणों के बावजूद इसके एजेन्ट पकड़ में आते और जेल जाते रहे हैं, कभी-कभी उन्हें फाँसी देकर या गोली से उड़ाकर मारा भी गया है। अधिकतर भंडाफोड़ खुद सदरमुकाम से ही शुरू होता है, इसकी वजह यह है कि एजेन्ट किसी निष्ठा से नहीं, बल्कि पैसे के लिए काम करते हैं।

१२. सी आई ए आदमी की जान की विशेष कद्र नहीं करता। कई तरीकों से न केवल दुश्मनों की—यानी प्रगतिशील राजनैतिक और सरकारी नेताओं की हत्याएँ करवाई जाती हैं, बल्कि उन भूतपूर्व एजेन्टों को भी, जो एजेन्सी छोड़ गए होते हैं या किसी वजह से इसके खिलाफ हो जाते हैं, मार डाला गया है। उन एजेन्टों का भी खातमा कर दिया जाता है जिनकी वजह से दूसरे देशों में सी आई ए परेशानी में पड़ सकता है।

अन्त में, ऐसा लगता है कि सी आई ए एजेन्टों के लिए एक पेशेवर खतरा है। वह है मानसिक और स्नायविक टूटन और असन्तुलन। अपनी पुस्तक 'कल्ट ऑफ व्हायलेंस' में मार्चेट्टी और मार्क्स ने इस विषय पर निम्नलिखित टिप्पणी की है :

"हालाँकि कोई आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि आम लोगों की तुलना में एजेन्सी के तनावपूर्ण वातावरण में काम करने वाले लोगों के बीच मानसिक टूटन अधिक प्रचलित है, और आम जनता की अपेक्षा सी आई ए मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं तथा मनोचिकित्सक उपायों के प्रति अधिक सहनशील रुख अपनाने की कोशिश करता है। टूटन गुप्तचरी में एक तरह से काम का सामान्य खतरा माना जाता है और पूरी चिकित्सा हो जाने के बाद कर्मचारियों को काम पर लौटने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

"आमतौर से इस तरह की बीमारियों को कोई कलंक नहीं माना जाता; सचाई तो यह है कि रिचर्ड हेल्म्स १९५०वें दशक में जब गुप्त कार्रवाइयों में बहाल थे तभी उन्हें एक सदमा लग चुका था, लेकिन जाहिर है कि इससे उनकी नौकरी पर कोई धक्का नहीं पहुँचा। गुप्त कार्रवाइयों के भूतपूर्व प्रमुख, फ्रैंक विस्नर को भी उसी तरह की बीमारी थी, लेकिन बाद में लौटकर वे लन्दन में सी आई ए स्टेशन प्रमुख बने।

"एजेन्सी के बहुत सारे अधिकारी अपनी भारी पियक्कड़ी के लिए विख्यात